मठाधीश की मौत
अपने आए घेरे में

कैप्टन हुए आउट
चन्नी नए कप्तान

शिवराज गाते
मोदी महिमा

मौताणा
वसूली की कुप्रथा

सरिता

अक्तूबर (प्रथम) 2021, ₹ 60

!TV
ब्रोकर न्यूज
तालिबानी क्रूरता की क्राइम कुंडली

हिंदी चैनलों की भक्ति गायब जन मुद्दे

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.com

Piramal

टेटमोसॉल 20:20 कप कॉन्टेस्ट

टेटमोसॉल रोज़ लगाना^ मतलब वर्ल्ड कप के दौरान इनाम जीतने का मौक़ा पाना!

Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL

सभी मैचेस के सही विजेता बताओ और ₹1 करोड़ धन राशी जीतने का मौक़ा पाओ!*

1 विजेता

कम से कम 30 मैचेस का सही अनुमान लगाएं और गाड़ी जीतने का मौक़ा पाएं

मारुति सुजुकी स्विफ्ट, ZXI मैनुअल (पेट्रोल)

2 विजेता

कम से कम 20 मैचेस का सही अनुमान लगाएं और बाइक जीतने का मौक़ा पाएं

बजाज पल्सर 150

5 विजेता

कम से कम 15 मैचेस का सही अनुमान लगाएं और AC जीतने का मौक़ा पाएं

वोल्टास 1.4 टन, 5 स्टार AC

10 विजेता

कम से कम 10 मैचेस का सही अनुमान लगाएं और फ्रिज जीतने का मौक़ा पाएं

सैमसंग 253L डबल डोर रेफ्रिजरेटर

50 विजेता

1 आसान प्रश्न का सही उत्तर दें और टेटमोसॉल के साथ सेल्फी अपलोड करें**

100% कॉटन बेडशीट, 2 पिलो कवर के साथ

प्रतियोगिता में कैसे प्रवेश करें?

पहला कदम
यहाँ दिए गए या पैक पर दिए गए QR कोड को स्कैन करें या www.tetmosolcontest.in पर लॉग-ऑन करें

दूसरा कदम
अपनी जानकारी भरें

तीसरा कदम
1 आसान प्रश्न का सही उत्तर दें और टेटमोसॉल साबुन रैपर या डस्टिंग पाउडर के साथ सेल्फी अपलोड करें**

चौथा कदम
सभी मैचेस का सही अनुमान करें

TE/20210921-38

नियम और शर्तें: यह प्रतियोगिता 22 सितंबर से 16 अक्टूबर, 2021 तक मान्य है। यह प्रतियोगिता तमिलनाडु राज्य को छोड़कर भारत के बाकी सभी निवासियों के लिए खुली है। प्रत्येक प्रतिभागी की केवल एक ही प्रविष्टि मान्य होगी। एक मोबाइल नंबर से केवल एक ही प्रविष्टि मान्य होगी। एक से अधिक प्रविष्टि होने पर केवल पहली प्रविष्टि ही मान्य होगी। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पैन कार्ड विवरण साझा करना आवश्यक होगा (बेडशीट के पुरस्कार को छोड़कर)। ₹1 करोड़ का इनाम केवल एक ही प्रतियोगि को जीतने का मौका लकी ड्रॉ के द्वारा मिलेगा। **प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोडक्ट की खरीद का सबूत अनिवार्य नहीं है। अमान्य प्रविष्टियां यानी तारीख के बाद, अस्पष्ट, एक से अधिक, भ्रामक/गलत/गलत तरीके से प्रस्तुत करने वाली या/और अधूरी प्रविष्टियां स्वीकार नहीं की जाएंगी। ^टेटमोसॉल साबुन का उपयोग खुजली (स्केबीज) कणों द्वारा हुए संक्रमण के लिए किए जाता है। टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। संक्रमण की संभावना रहने तक ही लगाए। सभी 46 मैचेस समाप्त होने के बाद 45 दिनों के भीतर विजेताओं की घोषणा हमारे सोशल मीडिया हैंडल के माध्यम से की जाएगी। अगर मान्य प्रविष्टियों की कुल संख्या कुल पुरस्कारों से कम होती है तो योग्य विजेताओं की संख्या को संशोधित या इनाम बदलने का अधिकार कंपनी के पास सुरक्षित होगा। पुरस्कारों की छवियों का उपयोग केवल प्रतिनिधि उद्देश के लिए किया गया है। किसी भी मानदंड पर कई प्रविष्टियां होने पर, विजेताओं को लकी ड्रॉ के आधार पर घोषित किए जाएंगे। आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 194बी के अनुसार टीडीएस के प्रति देयता विजेता की होगी और पुरस्कार के वितरण के बाद टीडीएस के प्रति इस तरह की देयता को विजेता से एकत्र किया जाएगा। नियम और शर्तों की जानकारी के लिए www.tetmosolcontest.in पर लॉग-ऑन करें।

सरिता

अक्तूबर (प्रथम) 2021 अंक 1595

संपादक
प्रकाशक
परेश नाथ

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

16
!TV
ब्रोकर
न्यूज
तालिबानी क्रूरता की क्राइम कुंडली
हिंदी चैनलों
की भक्ति
गायब जन मुद्दे

लेख

34 **मठाधीश की मौत**
अपने आए घेरे में

42 **शिवराज सिंह चौहान**
मोदी का भय कुरसी से प्यार

50 **कैप्टन हुए आउट**
चन्नी नए कप्तान

56 **आयकर विभाग की रेड**
सोनू सूद पर

62 **नारी**
अपने होने का अर्थ ढूंढ़ती

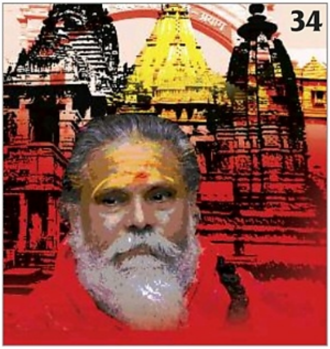

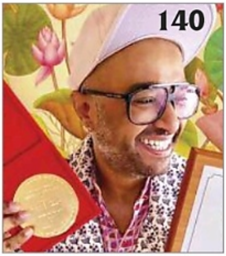

67 **मौताणा**
मौत की घिनौनी प्रथा

70 **भिक्षावृत्ति**
महानवृत्ति

बातचीत

140 **फराज अंसारी**
एलजीबीटी समुदाय हमारे जैसा ही है

कहानी

74 **नया रिश्ता**
जिंदगी का एक नया मोड़

80 **धूप का एक टुकड़ा**
क्या मनोज अपने फैसले पर अडिग रहा

90 **वो बेचारा आदत का मारा**
शंकर की भलमनसाहत का नतीजा क्या रहा

96 **खामोशी**
पतिपत्नी के बीच दूरियां

106 **तूफान की वह रात**
मौत का सबब कैसे बनी वह रात

118 **वे पिताजी ही थे**
कौन थे वे बुजुर्ग

126 **समझौता**
क्या थी रीना की हकीकत

और भी कहानियां पढ़ने के लिए
sarita.in पर login करें.

स्तंभ

8 **आप के पत्र**

12 **सरित प्रवाह**

32 **श्रीमतीजी**

60 **भारत भूमि युगे युगे**

66 **हमारी बेड़ियां**

89 **ऐसा भी होता है**

115 **इन्हें आजमाइए**

117 **जीवन की मुसकान**

124 **पाठकों की समस्याएं**

135 **बच्चों के मुख से**

136 **चंचल छाया**

145 **ननमुन**

ग्लोइंग स्किन के लिए
प्राकृतिक नुस्ख़ा

आयुर्वेदिक रूप मंत्रा फेस वॉश आपकी त्वचा से अतिरिक्त तेल, बाहरी संक्रमण, दाग-धब्बे कम करने, प्रदूषण, मुंहासे साफ कर आपकी त्वचा को स्वस्थ, कोमल बनाए, निखारने में सहायक है, जिससे आपको मिले ताजगी भरा अहसास।

New Dr. Juneja's Roop Mantra®
Ayurvedic Cream, Capsules & Face Wash

Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
ALOEVERA
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
NEEM
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
MIX FRUIT
Ayurvedic Medicinal Facewash

• 24x7 Helpline: 87259 66666 • www.roopmantra.com

शुद्ध आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से निर्मित

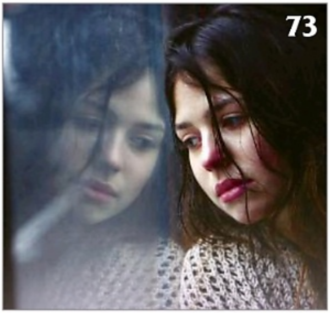

कविताएं

73 स्त्री का समर्पण
131 तेरा क्या अंदाज है

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय

दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
फोन : 011-41398888, 32468201, 32495622, 23529557, फैक्स : 011-41540714, 23625020.
अन्य कार्यालय : 31, ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845.** 11, फर्स्ट क्रास, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, **बेंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076.** गीतांजली टावर, शौप नं. 114 (व्यास अस्पताल के सामने), अजमेर रोड, **जयपुर-302006. फोन : 09529020226.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, जीडी अंबेडकर मार्ग, वडाला, **फोन : 022-24122661.** 16-ए, अमृता बनर्जी लेन, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026. फोन : 033-40675040.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लैक्स, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448, 28412161.** 122, चिनौय ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596.** बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001. फोन : 0522-2618856.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, ऐग्जिबिशन रोड, **पटना-800001. फोन : 0612-2323840.** जी-7, पायनियर टावर्स, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फिट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.**

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें : फोन : 011-41398888, फैक्स : 011-41540714. एक्सटैंशन नंबर : 119, 221, 264 (सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक) मोबाइल/एसएमएस/व्हाटसऐप नंबर : 08588843408 ईमेल : subscription@delhipress.in

© दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा **ई-8,** झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित. संपादक : परेश नाथ.

मूल्य : एक प्रति ₹ 60. वार्षिक : ₹ 1,356, दो वर्ष : ₹ 2,568 (रजिस्टर्ड डाक से)

वार्षिक मूल्य : केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से **ई-8,** झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. हमारी कोई डिपोजिट योजना नहीं है.

अंतर्राष्ट्रीय सब्सक्रिप्शन मूल्य (हवाई डाक से) : वार्षिक 100 अमेरिकी डौलर.

संपर्क करें :

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल :
article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल :
invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ईमेल :
editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ईमेल :
subscription@delhipress.in

वर्ष : 76, अंक : 19

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055. INDIA
ISSN 0971-1538
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.
THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

सुनो जी, दशहरे का पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए मनाते हैं। पर शरीर की बुराईयों का क्या करें।

अरी भाग्यवान, शरीर की बुराईयों की जड है पेट की बीमारीयाँ जैसे कब्ज, ऐसीडिटी, अपच इत्यादी, जिनका नाश करता है स्टोमाफिट। क्युंकि पेट फिट, तो आप फिट!!

New Pack

अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

रखे स्टमक फिट, पेट फिट, आप फिट!!

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

क्रोध, कपट, कटुता, कलह, चुगली या अत्याचार !
दगा, द्वेश, अन्याय या छल ये थे दशानन के हथियार !!
वर्तमान का हथियार है, शरीर में कमजोरी रहना लगातार !
आओ हेमोकॉल के साथ करें इस दशानन पर प्रहार !!

New Pack

आपको और आपके परिवार को
दशहरे
की हार्दिक शुभकामनाएं

शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वाष्टि

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्केन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com
सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपलब्ध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्केन करें

आप के पत्र

तालिबानी शासन के माने

सितंबर (प्रथम) अंक में छपे लेख 'अफगानिस्तान पर इतना रोनापीटना क्यों' के विषय पर कहना चाहता हूं कि काबुल पर तालिबान के कब्जे के बाद अब तालिबान ने अपनी सेना भी तैयार कर ली है. पूर्व की सेना ने तो हथियार डाल दिए थे. सो, एक नई सेना का गठन हो गया है. इसे बाकायदा ड्रैस भी दी गई है. आधुनिक हथियार भी दिए गए हैं.

अब यह सेना अफगानों की कितनी सुरक्षा करेगी, यह तो आने वाला समय ही बताएगा पर हां, यह बात जरूर है कि अभी तो स्वयं वहां की जनता तक तालिबान का शासन पसंद नहीं कर रही है, विशेषकर महिलाएं.

देखा जाए तो तालिबान को यह सत्ता आसानी से हाथ लगी है क्योंकि अगर अमेरिका की सेना वहां से न जाती तो तालिबान के लिए काबुल जीतना मुश्किल था. हम तो यही कहेंगे कि अगर अमेरिका या संयुक्त राष्ट्र संघ अन्य देशों की सेना के साथ अफगानिस्तान की तरफ से लड़ने के लिए आह्वान करते, तो तालिबान अफगान से अवश्य भाग खड़ा होता.

पर क्या करें, बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा और तश्तरी में रखा अफगान का शासन तालिबान के हाथ लग गया. ये तालिबानी उसी तरह से बाहर से आए थे जिस तरह से भारतवर्ष में मुगल आए थे.

कारण जो भी हो, अफगानों का अपना शासन अपना ही था, अशरफ गनी की सरकार चाहे डरपोक रही हो या उन की सेना ने अचानक हथियार डाल दिए, पर थी तो उन्हीं की सरकार.

मनमोहन राजावत 'राज'

*

लोगों को जागरूक करने की जरूरत

सितंबर (प्रथम) अंक में जनसंख्या नियंत्रण पर एक लेख पढ़ा. काफी शोध किया है उन्होंने कानून के खिलाफ अपना गुस्सा जाहिर करने में. पर लेख में काफी विरोधाभास हैं और काफी उत्तेजक भाषा का इस्तेमाल किया है. लगता है, कानून का सीधा असर उन पर हुआ हो.

आज के समय में जब संसाधन सीमित हैं तो बढ़ती जनसंख्या किसी भी देश के लिए, जहां एक बड़ी आबादी निरक्षर हो, समस्या का विषय क्यों नहीं होगी? क्या लेखक ने देश के अन्य राज्यों में कभी देखा है कि किस किस्म की जिंदगी लोग जीते हैं?

लेख में कहीं भी लोगों को जागरूक करने की बात नहीं की गई है, जो कि सब से जरूरी है. माना, कानून सभी के हित में नहीं होते पर यह नकारना कि बढ़ती आबादी कोई समस्या नहीं है, सरासर अविवेकपूर्ण विचारधारा है.

कानून आप को सैक्स करने से नहीं रोक रहा, सिर्फ समझदारी बरतने की गुहार लगा रहा है. रही बात पुरानी कहानियों की तो पुराने समय और आज की कोई तुलना नहीं है. क्या कानून आने से 133 करोड़ युवा आबादी हो जाएगी या

सच्ची सहेली®
आयुर्वैदिक औषधीय टॉनिक

Divisa
www.divisastore.com

कठिन दर्द

चिड़चिड़ापन

थकान

कमजोरी

कमर कटना

इम्यूनिटी

आदि में सहायक

अब पहले से ज्यादा फायदा

67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वैदिक टॉनिक विशेष लाभकारी है।

सच्ची सहेली
आयुर्वैदिक औषधीय टॉनिक
सच्ची सहेली

24x7 Helpline: 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli
Available at all medical & general stores

कुंठित व भटके हुए युवावर्ग को कुछ सोचने पर मजबूर करेगी? **रश्मि वर्मा**

*

एक गुजारिश

मैं सरिता का 1972 से अनियमित पाठक हूं. जब और जहां मौका मिला, सरिता को चाव से पढ़ा. 1972 के अंत में या 1973 के शुरू में किसी अंक में छपी कहानी 'देर अंधेर है' बहुत अच्छी लगी थी. 1992 व 1993 में सरिता 20 वर्ष पूर्व में उस कहानी को दोबारा पढ़ने की इच्छा थी. 'सरिता' लेख, कहानियों, व्यंग्य, कविताओं व स्तंभ का बेजोड़ मिश्रण है. हमारी बेडियां व अंधविश्वास उन्मूलन विषय में उचित वृद्धि करें. **अशोक जैन**

*

तालिबानियों पर दरियादिली क्यों

सितंबर (प्रथम) अंक के लेख 'अफगानिस्तान पर इतना रोनापीटना क्यों?' पढ़ कर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे लेखिका ने एक तालिबानी प्रवक्ता का रोल निभाया है. सरिता जैसी आधुनिक और प्रगतिशील विचारों वाली पत्रिका में यह सब पढ़ कर आश्चर्य होता है जब लेखिका 15 अगस्त के बाद काबुल एयरपोर्ट पर दहशत के कारण मची अफरातफरी का यह कह कर बचाव करती हैं कि '44 लाख की काबुल की आबादी में मात्र कुछ हजार लोगों ने ही एयरपोर्ट पर दस्तक दी है.'

हकीकत यह है कि लोग दहशतगर्दी में अपनी जान की परवा न करते हुए जहाज के पहियों पर भी लटके थे. अब इन मोहतरमा को कौन समझाए कि क्या कोई भी एयरपोर्ट किसी महानगर की संपूर्ण आबादी को ढो सकता है? यह पता नहीं कहां से यह दूर की कौड़ी निकाल कर कहती हैं कि 'वहां की महिलाएं शरिया के तहत जिंदगी गुजारने में फख्र महसूस करती हैं.' यह सफेद झूठ है. इस शरिया से मुसलिम महिलाओं को क्या फायदा हो रहा है. इन्होंने नहीं समझाया, अलबत्ता वहां के एक नेता ने यह जरूर कह दिया कि, 'महिलाओं का काम नौकरी करना नहीं, सिर्फ बच्चे पैदा करना है.'

शुरुआती दिनों में तालिबानी मेमने की खाल ओढ़े हुए भेड़िए थे (क्योंकि उन्हें किसी भी हालत में सत्ता चाहिए थी). सो, उन्होंने लोगों को देश से बाहर जाने दिया. इस रियायत को लेखिका ने तालिबानियों की दरियादिली बताया है.

पता नहीं कौन सी मीडिया की तसवीरों में इन्हें लोग तालिबानियों को माला पहनाते तथा उन के समर्थन में नारे लगाते दिख रहे हैं जबकि लेख में इसी मीडिया को ये इस बात के लिए कोस रही हैं कि वे क्यों तालिबान को मध्ययुग में ले जाने वाला और महिलाओं का उत्पीड़क बता रहा है?

सुनील कुमार चौबे

इस रिपोर्ट का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि धर्म की अफीम के कारण ही अफगानी मर्द और औरतें शरिया कानून लागू करवाने में फख्र महसूस करती हैं. आप को लेख का मर्म नहीं समझ आया.

–संपादक ●

आप भी भेजें

सरिता में प्रकाशित रचनाओं तथा अन्य सामयिक विषयों पर अपने विचार भेजिए. कृपया पत्रों पर अपना पता अवश्य लिखें. पत्र इस पते पर भेजिए : **आप के पत्र,**

सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट,

नई दिल्ली-55.

नीचे लिखे नंबर पर ***एसएमएस*** या ***व्हाट्सऐप के जरिए मैसेज/ऑडियो भी कर सकते हैं.***

08588843415

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास एवं विशेष इम्युनिटी बढ़ाने में सहयोग करता है।

नक्कालों से सावधान
ग्रोमेड
देखकर ही लें।

GROWMED®
AD VITAMIN
बेबी ऑयल

ग्रोमेड AD Vitamin Baby Oil बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों की मजबूती एवं सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए जरूरी है।

इसमें है Vitamin A 20000 I.U, Vitamin D 4000 I.U, Archis Oil, Olive Oil + Vitamin E

अब
चंदन एवं गुलाब के
खुशबू में भी
VITAMIN A, D, E
AND OLIVE OIL
GROWMED®
AD
VITAMIN
BABY OIL
FOR GROWTH AND
VIGOUR OF BABIES
GUJARAT

GROWMED®
STOMAQUAR®
अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी, मुँह में छाले, हाइपर–एसीडीटी, हिचकी आना एवं पेट के अन्य तकलीफों से। साथ ही इसका नियमित सेवन रक्तचाप को भी सही रखने में काफी लाभदायक है।

GROWMED
STOMAQUAR
ACTION
PROTECTIVE
COATING
ACTION

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment, and Injection

GUJARAT
CALL : 9431237784, 8987383154
ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

सरित प्रवाह

संपादकीय

तालिबान और भारत

अफगानिस्तान से अमेरिका को भी खदेड़ देने के बाद तालिबानी अगर विश्वभर में उत्पात मचाने लगें तो कोई बड़ी बात नहीं. यह तो पक्का है कि अगले 15-20 वर्षों तक न तो चीन, न ही कोई और काबुल पर कब्जा करने की कोशिश करेगा. काबुल की जीत का नशा तालिबानियों के सिर से 4 दिनों में उतर जाएगा और फिर उन्हें आतंकवादी डोज लेनी पड़ेगी. अफगानिस्तान अगर रूस और अमेरिका को हरा सकता है तो वह हर बंदूकधारी को भी हरा सकता है. तालिबानी कट्टर हैं और उन की आय के साधन सीमित हैं.

पहले अफगानिस्तान के विद्रोहियों को रूस से लड़ने के लिए हथियार व ट्रेनिंग अमेरिका ने दी थी लेकिन वह 2001 में अफगानिस्तान में कब्जे के बाद अफगानिस्तान में अफगानों द्वारा ही चलाई जा सकने वाली सरकार नहीं बनवा सका. यही बात तालिबानियों पर लागू होगी. पश्तून लड़ाकू मौलवी हिबतुल्लाह अखुंदजादा, अफगानिस्तान का अमीरल मोमिनीन, न तो दुआओं से एके47 बना सकता है, न जब्त किए गए अमेरिकी हथियारों को चला सकता है. अल्लाह किसी तरह से भी उस की मदद नहीं करेगा.

अफगानिस्तान में जल्दी ही भुखमरी की स्थिति भी होगी और हथियारों की कमी भी. अब तक तो अफगानिस्तानी फौज के लिए अमेरिकी हथियार आ रहे थे जिन्हें तालिबानी अपने कब्जे में कर लेते थे.

चीन, रूस, पाकिस्तान आज अमेरिका की नाक कटने की शाबाशी की शक्ल में तालिबानियों को समर्थन दे रहे हैं पर वे सब जानते हैं कि ये सिरफिरे शासक अपने आतंकवाद को उन के देशों में भी निर्यात करेंगे. रूसी प्रभाव के कितने ही देशों में कट्टर इसलामी हैं और तालिबानी उन से पैसे लेंगे और उन्हें लड़ाकू देंगे. चीन तो उइगर इलाके से वैसे ही बहुत परेशान है. उस की अफगानिस्तान में रुचि सिर्फ अरब सागर तक पहुंच के रास्ते को बनाए रखने में है.

पाकिस्तान के मंसूबे कुछ ज्यादा हैं. यही भारत के लिए बड़ा खतरा है. पाकिस्तान अफगान लड़ाकुओं का इस्तेमाल भारत के खिलाफ मोरचा खोलने में कर सकता है. पाकिस्तान के बिना अफगानिस्तान का अस्तित्व न के बराबर है. पाकिस्तान ही उसे हथियार, लड़ाकू टैंक, हवाई जहाजों व ड्रोनों के हमलों से बचाव के साधन दे सकता है.

पर पाकिस्तान की भी अपनी आर्थिक सीमाएं हैं. अफगानों की सहायता कर के वह कट्टर हिंदू होते जा रहे भारत के प्रति अपना गुस्सा निकाल सकता है लेकिन वह लगातार अफगानिस्तान की सहायता नहीं कर सकता. वह अफगानिस्तानियों को

अफीम के बदले खाना और हथियार तो दे देगा पर कितने दिन.'

पाकिस्तान पर अमेरिकी, रूसी व चीनी दबाव बना रहेगा. हां, वह भारत के खिलाफ अफगानों को इस्तेमाल करेगा क्योंकि पिछली अमेरिकी समर्थक सरकार को भारत सरकार ने जरूरत से ज्यादा समर्थन दिया था. भारत, जिस का विदेश मंत्री सिर्फ अफसरशाही की देन है, कभी भी अफगानों को राजनीतिक तौर पर मना नहीं सकेगा. नरेंद्र मोदी भी हिंदू पांडित्य के चोगे को पहन कर कट्टर शरीअत मानने वाले तालिबानियों के नेता/मौलवियों के साथ सहज नहीं हो सकेंगे.

हमारे पुराणों में बारबार वर्णन है कि हमारे ऋषिमुनि हर आफत में किसी दूसरे की शरण लेते रहे हैं. कभी विष्णु के पास जाते, कभी इंद्र के पास, कभी दशरथ के पास, कभी कृष्ण के पास. उन में अपनी शक्ति, चमत्कार सिर्फ भक्तों को बहलाने की थी. दिल्ली का विदेश मंत्रालय या प्रधानमंत्री कार्यालय भी कुछ इसी तरह का 'विशेष देवता' ढूंढ़ेगा पाकिस्तानी और अफगानी राक्षसों के हमलों से बचने के लिए.

जमीन पर कब्जा

देश की शहरी आबादी का दबाव लगभग सारे देश में एकजैसा बढ़ रहा है और शहरों के चारों ओर के खेतखलिहान, नदियों के किनारे, जंगल, पहाड़, झीलें शहरों के पास बसने की इच्छा में हड़पे जा रहे हैं. सारे देश में ऐसे माफियाई गैंग पैदा हो गए हैं जो जनता की सामूहिक जमीन पर कब्जा कर के उन पर झुग्गियों से ले कर महल तक बना कर बेच रहे हैं. कुछ मामलों में खरीदार बेवकूफ बनते हैं पर ज्यादातर मामलों में क्बजा करने वाले जो भी हों, जनता सोचती है कि कानून तोड़ कर के सामूहिक हित की जमीन हथियाने का मौका न छोड़ा जाए.

दिल्ली से सटे हरियाणा के फरीदाबाद में अरावली पर्वत पर वर्षों से यदि आक्रमण हो रहा है और जो हराभरा क्षेत्र दिल्लीवालों को सांस लेने वाली औक्सीजन देता था, अब प्रदूषण का केंद्र बनता जा रहा है. इस इलाके के खीरी गांव में सुप्रीम कोर्ट ने अद्भुत सख्ती दिखाई है. उस ने राज्य सरकार, नेताओं, पैसे वालों की बारबार गुहार के बावजूद 150 एकड़ में बने हर निर्माण को नष्ट करने का आदेश दिया है.

हजारों लोग चाहे इस से बेघर हो गए हों पर यह संदेश स्पष्ट है कि यदि सही एक्टिविस्ट अपनी जान जोखिम में डाल कर पर्यावरण को बचाना चाहे तो नेताओं के लालचीपन को हरा कर जनता की धरोहर को बचाया जा सकता है.

लगभग सारे देश में आप सड़कों, नालों, नदियों के किनारे कच्चेपक्के निर्माण देखते हैं तो इसलिए कि जनता की यह जमीन खुलेआम चोरी हुई है.

निगाहों के सामने नेता, अफसर, पुलिस मिल कर मुफ्त के पैसे के लालच में इन जमीनों, जिन पर आम जनता का सामूहिक हक है, को कुछेक को झुग्गी से ले कर होटल, महल बनाने के लिए दे देते हैं.

आमतौर पर वे बच निकलते हैं क्योंकि जो भी पोलपट्टी खोलता है उसे धमकाया जाता है. डरपोक हिंदुस्तानी वैसे ही कुछ भी नहीं करता और जहां लैंड माफिया और खाकी पुलिस व खादी के सफेदपोश एकसाथ हों, वह चुप बैठ जाता है. अदालतें तो तभी मामले को सुन सकती हैं जब कोई उन के दरवाजे खटखटाए.

खीरी गांव के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने किसी तरह का रहम न दिखा कर न्याय का उदारहण पेश किया है. हालांकि, इस से यह नहीं समझना चाहिए कि अतिक्रमण प्रवृत्ति के दूसरे लोग कोई सबक लेंगे. एक पुराना तथ्य है कि इंगलैंड में जेबकतरों को चौराहे पर सैकड़ों के सामने फांसी पर लटकाया जाता था और तब एकत्र हुई बड़ी भीड़ में बहुतों की जेब फिर भी काट ली जाती थी और उन्हें पता भी नहीं चलता था.

सुप्रीम कोर्ट के इस सख्त कदम के बावजूद शहरों के बाग, नदियों के किनारे, जंगल, झीलें सुरक्षित नहीं हैं. पुलिस कुछ करेगी नहीं और अगर खफा जनता डर कर दुबकी रहेगी तो कुछ भी संभव नहीं है. हम गंद में रहने के आदी हैं, रहते रहेंगे सूअरों और कुत्तों की तरह. हमारे यहां तो पूजनीय माता कहलाई जाने वाली गाएं कैसे सड़कों पर रहती हैं, वह भी देखने लायक है. आदमी तो उस से बदतर तरीके से रहने को अपना भाग्य समझता है.

दूरदर्शिता बनाम अदूरदर्शिता

चीन की सरकार को यों तो अपनी सफलता पर गर्व करना चाहिए पर जिस तरह से वह व्यवहार कर रही है, लगता है कि उसे भविष्य की गहरी चिंता है कि पिछले 20-25 सालों की प्रगति की दर बनी रह सकेगी या नहीं. इन 20-25 सालों में कम्यूनिस्ट आवरण ओढ़े हुए भी चीन ने बेहद कैपिटलिस्ट छूटें दी हैं और वहां न केवल कुछ द्वारा अथाह संपत्ति जमा की गई बल्कि सरकार के शिकंजों के बावजूद रिश्वतखोरी भी जम कर पनपी है. अमीर बेहद अमीर हुए हैं और उन्होंने एकछत्र राज करने वाली पार्टी की अलोकतांत्रिक सरकार की नाक के नीचे बड़ी मनमानी की है.

पिछले महीनों में चीन की बीजिंग सरकार ने अपने फौलादी हाथ बहुत सी गरदनों पर डालने शुरू किए हैं. अलीबाबा जैसी ईकामर्स कंपनियों के मुखियाओं को बंद किया गया है या उन के क्रियाकलापों की गहरी जांचपड़ताल की जा रही है. सोशल मीडिया कंपनियां, जैसे टिकटौक और वी चैट की कार्यपद्धति को जांचा जा रहा है.

टैक्नोलौजी के जरिए पैसे को इधर से उधर भेजने और निवेश करनेकरवाने वाली कंपनियां सरकार की निगाह में हैं. भारत में बनाए गए नरेंद्र मोदी क्लबों की तरह चीन में सोशल मीडिया से पैदा हुए

सैलिब्रिटियों के बनाए गए फैन क्लबों को बंद किया जा रहा है क्योंकि वे एक तरह से कम्यूनिस्ट पार्टी का पर्याय बन रहे हैं.

भारत की तरह चीन में भी ऐसे उद्योगपतियों की कमी नहीं है जो नाममात्र का टैक्स दे कर मोटा मुनाफा बना रहे हैं. यह बीमारी अमेरिका से आई है. टैक्स बचा कर विदेशों में पैसा जमा करने की हिम्मत चीनी कंपनियों में भी पनप गई है. उन पर अब वहां अंकुश लगाया गया है.

अपने बच्चों के भविष्य को तय करने के लिए चीन में भारत की तरह कोचिंग व्यवसाय खरबों डौलरों का हो गया है. बड़ीबड़ी कंपनियां बन गई हैं. इसी तरह बच्चों और युवाओं के माध्यम से पैसा निगलने वाली कंप्यूटर गेम्स बनाने वाली कंपनियां हर रोज मोटी होती जा रही हैं. उन पर भी अब रोकटोक लगाई जा रही है.

हाईटैक का इस्तेमाल कर के सोशल मीडिया पर लोगों को खास उत्पादन खरीदने के लिए उकसाने वाले कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार करने वाली कंपनियां वहां अब सरकारी शिकंजे में हैं. रीयल एस्टेट यानी भवन निर्माण के क्षेत्र में पैसा लगवा कर भाग जाने वालों की कमी चीन में भी नहीं है. आम लोगों की गाढ़ी मेहनत की कमाई की बचत को हड़प जाना या बरबाद कर देना चीन में आम बात हो गई है.

इन सब कदमों का मतलब है कि सरकार ने प्रैस पर जो प्रतिबंध लगा रखे थे उन से अंत में कोई लाभ नहीं हुआ और खुराफातियों की गिनती वैसी की वैसी ही है. चीनी कम्यूनिस्ट राज ने देश को औद्योगिक राह पर चला कर सफल तो बना दिया पर वह मूल मानवीय प्रवृत्ति को नहीं बदल पाया.

चीन अपनी विशाल जनसंख्या के बलबूते पर सफल हुआ लेकिन इसी कुशल, शिक्षित व धर्मों के जंजाल में नहीं फंसी जनता को लूटने में वहां के सरगनाओं ने कोई कसर नहीं छोड़ी है.

भारत के लिए यह सबक नहीं है क्योंकि हमारी सरकार तो दूसरे विध्वंस में लगी है. धर्म का नाम ले कर वह मंदिर निर्माण करा सकती है, लाखों को सड़कों पर ला कर पूजापाठ करा सकती है, हिंदूमुसलिम विवाद की आग भड़का सकती है लेकिन वह उत्पादन नहीं बढ़वा सकती. उस से तो सरकारी कंपनियां ही नहीं चल रही हैं. मौजूदा सरकार के धर्मकर्म में लगे लोग सरकारी कंपनियों को बेच कर मंदिरों के गुंबदों पर सोना मढ़वाने की योजनाएं बनाने में लगे हैं.

देश के लोगों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो, इस के लिए चीन की सरकार तक चिंतित है जब वह तकरीबन महाशक्ति बन चुका है. हम भूखेनंगे हैं लेकिन हमें सुधार के नाम पर पैट्रोल, गैस के दाम बढ़ाने से फुरसत नहीं है. ●

सही व सटीक विचार

सही व सटीक विचारों के लिए सरिता नियमित पढ़िए. सरिता के वार्षिक ग्राहक बनिए. रजिस्टर्ड डाक से सुरक्षित डिलीवरी. Subscription.mag@delhipress.in पर ईमेल भेजिए या 08588843408 पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर पूरी जानकारी लें.

अग्रलेख

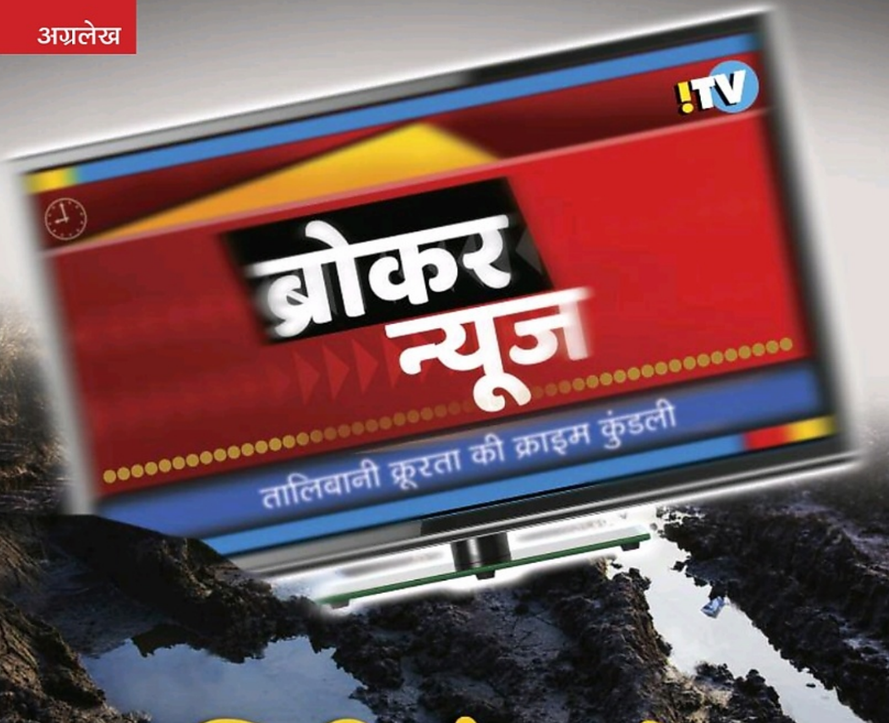
!TV
ब्रोकर न्यूज
तालिबानी क्रूरता की क्राइम कुंडली

हिंदी चैनलों की भक्ति गायब जन मुद्दे

• सरिता टीम

सरकार को चारों तरफ से घेरने की अग्र जिम्मेदारी जिन मीडिया चैनलों पर थी, वे पहरेदार बन उस का बचाव करने में जुटे हैं. टीवी न्यूज चैनलों द्वारा किसानों की समस्याएं, बेरोजगारी, महंगाई जैसी दिक्कतों को छिपाने के भरसक प्रयास और गैरजरूरी मुद्दे उठाए जाना एक सोचेसमझे षड्यंत्र का हिस्सा है. अधिकांश चैनलों द्वारा असल मुद्दों को धूल की तरह कारपेट के नीचे छिपाया जा रहा है.

आज पूरे विश्व में हिटलर और उस की दहशत के बारे में कौन नहीं जानता. ऐसा क्रूर शासक जिस के बारे में प्रचलित किस्सेकहानियां आज भी दिल दहला देती हैं, सोचने को मजबूर कर देती हैं कि क्या लोकतंत्र के दमन का ऐसा भी कोई शासन चलाया जा सकता था? इस प्रश्न का जवाब यदि हिटलर युग में ढूंढ़ा जाता तो शायद न मिलता लेकिन आज इस का जवाब जोसेफ गोएबल्स के रूप में मिलता है.

जोसेफ गोएबल्स नाजी जरमनी का मिनिस्टर औफ प्रोपगंडा था. गोएबल्स का कहना था, 'एक झूठ को अगर बारबार दोहराया जाए तो वह सच बन जाता है और लोग उसी पर यकीन करने लगते हैं.'

बात बिलकुल सही थी, इसलिए पूरे विश्व में हिटलर के राज और गोएबल्स के काज को मानने वाले संकीर्ण लोगों ने इसे तहेदिल से स्वीकार किया. अब गोएबल्स तो नहीं रहा लेकिन उस की कही बातें कइयों के मनमस्तिष्क में घर कर गई हैं और आधुनिक तकनीकी युग में हमारे देश भारत में हर शाख पर गोएबल्स सरीखे खड़े कर दिए गए हैं जिन का काम सिर्फ सरकार या कहें मोदी की चाटुकारिता करना व देशवासियों को गुमराह करना है.

भारत में यह जिम्मा सीधेतौर पर न्यूज चैनलों को भी दे दिया गया है. कहने को चैनल्स जन की आवाज हैं पर उन के असल रिंग मास्टर नरेंद्र मोदी हैं. यही कारण है कि उन के प्रधानमंत्रित्व वाली सरकार के कार्यकाल के दौरान चैनलों के लिए 'गोदी मीडिया' शब्द ईजाद हुआ. इस की कई वजहें हैं.

पिछले साल की बात है, देशवासियों पर कोरोना के बढ़ते कहर का जितना असर पड़ा, उस से कहीं अधिक असर सरकार की बदइंतजामी का पड़ा. अच्छेखासे चलते व्यापार ठप पड़ गए, करोड़ों ने अपनी नौकरियां गंवाईं और शहरों में रहने वाले प्रवासी मजदूर सैकड़ों मील पैदल अपने गांव जाने को मजबूर हुए. किंतु न्यूज चैनलों ने इन समस्याओं पर सरकार से सवाल करने की जगह

जनता से दीया, टौर्च जलाने और तालीथाली पीटने के बेवकूफीभरे कृत्य करने पर जोर दिया.

यही नहीं, भाजपाई सरकार के शासन के बीते सालों में नोटबंदी, जीएसटी जैसी आर्थिक (कु)नीतियां थोपी गईं, जिन्होंने देश की अर्थव्यवस्था को चौपट कर डाला. हैरानी यह है कि तब भी टीवी चैनल सरकार का बचाव करते दिखे. और अब, जब कृषि कानून जैसी सुसाइडल नीतियां देश पर थोपी जा रही हैं तब भी चैनलों का एक बड़ा धड़ा सरकार की ही गोद में बैठा हुआ है.

इस का हालिया उदाहरण हरियाणा के करनाल में किसानों पर 28 अगस्त को की गई बर्बर लाठीचार्ज की घटना है जिस में एक किसान की मौत और कई किसान बुरी तरह घायल हुए. प्रशासनिक पद पर बैठे अधिकारी किसानों का 'सिर फोड़ने' का सीधा आदेश देते पाए गए. ऐसे आदेश के बाद कई किसानों के सिर फूटे भी, लेकिन मेनस्ट्रीम चैनलों से यह घटना गायब रही.

इस घटना के बाद जब लाखों किसान राजधानी दिल्ली से मात्र 100 किलोमीटर की दूरी पर करनाल सचिवालय में न्याय की गुहार लगाने पहुंचे, तब भी चैनलों के कानों में जूं न रेंगी. चैनलों पर पूरे समय तालिबान-पाकिस्तान ही छाया रहा. यह भारतीय न्यूज चैनलों का षड्यंत्र ही था कि न तो उन्होंने किसानों पर हुए लाठीचार्ज को कवर किया, न ही किसानों की उस दौरान ऐतिहासिक जीत या कहें कि 7 सालों में जनता की तरफ से भाजपा सरकार की पहली हार को जगह दी.

टीवी चैनलों का इसी तरह का फर्जीवाड़ा 20 सितंबर को अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष और निरंजनी अखाड़ा के सचिव महंत नरेंद्र गिरि की आत्महत्या मामले को ले कर दिखा. एक मामूली सी आत्महत्या की घटना को पूरे देश में जानबूझ कर नैशनल मुद्दा बना कर तिल का ताड़ बनाया गया. इस मुद्दे का ताल्लुक न तो भुखमरी से मर रहे मजदूरों से था, न किसानों की हर वर्ष होने वाली आत्महत्या से था और न ही बेरोजगारों की फटेहाल जिंदगी से, लेकिन चूंकि लोगों को षड्यंत्र के तहत फालतू मुद्दों से भटकाना था तो यही चलाया गया.

हाल की इन दोनों घटनाओं के विश्लेषण से आसानी से समझा जा सकता है कि आज टीवी चैनल सूचनाओं के मामले में किस गिरावट से गुजर रहे हैं. इस से यह साफ हो जाता है कि ज्यादातर न्यूज चैनल सरकारी चाटुकारिता में लगे हैं. हालांकि, इन के द्वारा किया जा रहा यह कृत्य लोकतंत्र की कब्र खोद रहा है. सरिता टीम ने इन दोनों इवेंट्स पर टीवी न्यूज चैनलों की प्राइम टाइम कवरेज का विश्लेषण किया, जो इस तरह है-

● इंडिया टीवी

➢ **9 सितंबर :** रात 8 बजे 'हकीकत क्या है' के तहत सब से पहले 13वीं ब्रिक्स समिट की बात की गई. फिर बाराबंकी यूपी में असदुद्दीन ओवैसी की रैली, ओवैसी का मुख्य एजेंडा, 'यूपी में मुसलमानों का नेता क्यों नहीं है,' सीएम की दावेदारी, गणेश चतुर्थी के नाम पर लोगों के धार्मिक उन्माद इत्यादि दिखाया गया.

रात 9 बजे 'आज की बात रजत शर्मा के साथ' के प्राइम टाइम में पाकिस्तान से 40 किलोमीटर दूर कैसे जैगुआर और हरक्यूलिस विमान उतारे गए, नितिन गडकरी का एक्सक्लूसिव इंटरव्यू,

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's

डा.ऑर्थो®

Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

Helpful
in Painful
Conditions
Dr. Ortho
Oil
An Ayurvedic Proprietary Medicine
20% EXTRA
100ml+20ml Extra

ज्योतिष्मती तेल

जोड़ों में सूजन की समस्या को कम करने में मदद करता है।

1

2

गन्धपुरा तेल

जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और गठिया में सहायक।

निर्गुण्डी तेल

नसों के दर्द और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद है।

3

4

तारपीन तेल

जोड़ों में सूजन और दर्द के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

पुदीना तेल

पुराने जोड़ों के दर्द की स्थिति में अत्यधिक फायदेमंद है।

5

6

कपूर तेल

विभिन्न जोड़ों के दर्द में बहुत उपयोगी है।

अलसी तेल

जोड़ों और मांसपेशियों में सूजन को कम करता है।

7

8

तिल तेल

मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करता है।

24x7 Helpline: 7876977777
www.drorthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

पाकिस्तान के बाजार में अमेरिकी हथियार की खुलेआम बिक्री, प्रियंका गांधी के यूपी और राहुल गांधी का वैष्णो देवी के दरबार में जाने के समाचार को बताया गया.

➢ **21 सितंबर :** प्राइम टाइम में रात 8 से 10 बजे के बीच एक घंटे से भी ज्यादा समय की कवरेज दी गई वह था महंत महेंद्र गिरि की मौत. रात 8 से 8:30 बजे तक महंत की आत्महत्या और सुसाइड नोट पर जम कर जांचपड़ताल हुई. फिर करीब 20 मिनट का समय मोदी के अमेरिका भ्रमण पर केंद्रित रखा गया.

रात 9 बजे "आज की बात रजत शर्मा के साथ" की शुरुआत हुई. इस में भी कैमरों का फोकस महंत महेंद्र गिरि के मठ के आसपास, उस के चेलों और सहयोगियों के चेहरों पर और सुसाइड नोट के पन्नों पर घूमने लगा. रजत शर्मा के इस एक घंटे के प्रोग्राम में करीब 45 मिनट का समय महंत की आत्महत्या को दिया गया.

● आजतक

➢ **9 सितंबर :** रात 8-10 बजे के बीच दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों में फोकस भाजपा सरकार का इंटरनैशनल प्रोपगंडा, गणपति के नाम पर धर्म का वही पुराना तमाशा, आतंकवाद और तालिबान के नाम पर मिसलीडिंग रिपोर्ट, फिल्मी नौटंकी, क्रिकेट का फर्जी गुणगान, गैरजरूरी पब्लिसिटी इत्यादि पर ही केंद्रित था.

➢ **21 सितंबर :** रात 8-10 बजे का पूरा प्राइम टाइम बाबा की मर्डर मिस्ट्री को समर्पित कर दिया, वहीं देश की जरूरी खबरों को सिर्फ 5-7 मिनट की हैडलाइन तक ही सीमित रखा.

टीवी न्यूज चैनल्स किसानों की समस्याओं को उठाने की जगह छिपाने का काम कर रहे हैं.

● टीवी 9 भारतवर्ष

➢ **9 सितंबर :** रात के 8 बजे पड़ोसी देश अफगानिस्तान में तालिबान के मुद्दे पर खास कार्यक्रम दिखाया गया. यह आधा घंटे का प्रोग्राम था. रात के 8.30 बजे सुपर प्राइम टाइम कार्यक्रम था, जिस में आधे घंटे में 'कैसे फरार हुए 6 फिलिस्तीनी कैदी' पर फोकस था. तालिबान पर 100 फटाफट खबरें दिखाई गईं, जिन का देश की समस्याओं से कोई लेनादेना न था.

रात के 9 बजे 'फिक्र आप की' कार्यक्रम में 'पाकिस्तान की शामत आई,' भारत की सामरिक ताकत में इजाफा, सड़क पर फाइटर जहाज की लैंडिंग, जिस में हाईवे पर फाइटर जहाज की लैंडिंग को दिखाया गया.

➢ **21 सितंबर :** रात 8-10 बजे के बीच चैनल में महंत नरेंद्र गिरि की मौत पर फोकस, 13 पन्नों के सुसाइड नोट को बारीकी से पढ़ा गया, महंत आनंद गिरि के बारे में उन की 'कर्मकुंडली,' जमीन विवाद को नया रंग दिया गया, पूरी संपत्ति का ब्योरा दिया गया, महंत

नरेंद्र गिरि की अरबों की संपत्ति की जानकारी भी दी गई.

● न्यूज नैशन

➢ **9 सितंबर :** रात के 8 बजे पड़ोसी देश अफगानिस्तान में तालिबान के मुद्दे पर खास कार्यक्रम दिखाया गया. टैलीविजन कलाकार सिद्धार्थ शुक्ला की मौत पर सवाल उठाए गए. 8.30 बजे 'देश की बहस' कार्यक्रम में कुछ लोगों के पैनल में बहस दिखाई गई. बहस में भारतपाकिस्तान के कुछ बुद्धिजीवियों की आपसी तूतूमैंमैं ही थी. यह कुल एक घंटे की बहस थी, जो समय की बरबादी से ज्यादा कुछ नहीं थी.

➢ **21 सितंबर :** रात 8 बजे खबर 'कट टू कट' में महंत नरेंद्र गिरि की मौत पर 'गुरु चेला और ब्लैकमेल' के नाम से प्रोग्राम चलाया गया. उन के लिखे गए सुसाइड नोट की पड़ताल की गई, आनंद गिरि पर निशाना साधा गया, आनंद गिरि की विलासिता से भरी जिंदगी पर रोशनी डाली गई.

रात 8.30 बजे पत्रकार दीपक चौरसिया ने 'देश की बहस' नामक अपने कार्यक्रम में महंत नरेंद्र गिरि पर ही फोकस रखा. जिस में कुछ भी नया नहीं था. इस में भी उसी खबर को आगे बढ़ाया गया जो पिछले आधे घंटे से चल रही थी.

● जी हिंदुस्तान

➢ **9 सितंबर :** रात 8 बजे 'वंदे मातरम' शो चीन, तालिबान और पाकिस्तान के संबंध पर केंद्रित था. रात 8.40 पर दूसरा शो 'मेरा राज्य मेरा देश' में चीन, तालिबान और पाकिस्तान को ले कर ही खबरें थीं.

9 बजे 'राष्ट्रवाद' के प्राइम टाइम में चर्चा मोदी के मास्टरस्ट्रोक को ले कर थी. रूस, अमेरिका और भारत की एनएसए लैवल मीटिंग और बाड़मेर में रनवे को ले कर बात, पाकिस्तान में इमरान के महिलाओं पर कमैंट और ओवैसी की रैली की खबरें ही दिखाई गईं.

➢ **21 सितंबर :** जी हिंदुस्तान पर रोजाना दो शो, शाम 8 से 10 बजे के बीच में मुख्य रहते हैं, एक 'वंदे मातरम' और दूसरा 'राष्ट्रवाद'. 7.55 पर 'वंदे मातरम' शो शुरू हुआ. इस के एंकर थे मकसूद खान. शो के प्राइम खबर में महंत नरेंद्र गिरि की मौत को जगह दी गई. तकरीबन एक घंटे के स्लौट में खबर रत्तीभर नहीं, पर धायंधूं बैकग्राउंड म्यूजिक, साउंड और चिल्लपों खूब चलता रहा. पिछले साल की सुशांत की मौत की झलकी याद आने लगी.

अब न्यूज चैनलों का काम या तो झूठ परोसना या आधा सच दिखा कर लोगों को गुमराह करना भर रह गया है.

इस के बाद 9 बजे 'राष्ट्रवाद' नाम का शो आया. एंकर थीं 'भारत की बेटी' शालिनी कपूर तिवारी. इस शो में भी खबर वही, इंटरव्यू वही, म्यूजिक वही,

चीखमचिल्ली वही, जो पीछे मकसूद भाई साहब बोल कर गए, वही शालिनी मैडम बोलती रहीं.

● एनडीटीवी

➢ **9 सितंबर :** रात 8 बजे इस चैनल ने ब्रिक्स पर बहस दिखाना शुरू किया, जिस में मोदी की तारीफ नहीं, बल्कि 5 देशों की अलगअलग भूमिकाओं पर फोकस किया जा रहा था.

रात 9 बजे एंकर रवीश कुमार के प्राइम टाइम में टैक्सटाइल इंडस्ट्री की बदहाली और इस सैक्टर में बढ़ती बेरोजगारी के कारण, करनाल में किसान कैसे क्या कर रहे हैं यह विस्तार से दिखाया गया, हरियाणा सरकार द्वारा गन्ने के समर्थन मूल्य बढ़ाए जाने पर किसानों की राय, घायल किसान महेंद्र पुनिया को किसान चंदा कर मदद करना इत्यादि दिखाया गया.

➢ **21 सितंबर :** एनडीटीवी पर रात 8 बजे कार्यक्रम 'खबरों की खबर' में एंकर संकेत उपाध्याय हाल ही में भाजपा छोड़ टीएमसी में शामिल हुए गायक और सांसद बाबुल सुप्रियो से रूबरू थे. यह हर किसी को समझ आ गया था कि इस डैकोरेटिव इंटरव्यू की मंशा बाबुल सुप्रियो को दिखाने की ज्यादा है.

इस के बाद 'बड़ी खबर' कार्यक्रम में एक और एंकर नगमा ने इस दिन की सब से बड़ी खबर महंत नरेंद्र गिरि की कथित आत्महत्या और उन की लिखी चिट्ठी यानी सुसाइड नोट को दिखाया. उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री सहित उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या और सपा प्रमुख अखिलेश यादव की बाइट्स भी प्रमुखता से दिखाई गईं, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया को एक गार्ड द्वारा डंडा मारे जाने की खबर को दिलचस्प अंदाज में पेश किया गया.

9 बजे प्राइम टाइम में रवीश कुमार जरूर उन मुद्दों को ले कर प्रस्तुत हुए जिन के लिए उन का शो जाना जाता है. वे अपने शो में 'अच्छी सैलरी और अच्छी नौकरी के दिन चले गए' शीर्षक से कार्यक्रम लाए, जिस के शुरू में पहले तो आदतन उन्होंने गोदी मीडिया को कोसा और फिर उत्तराखंड के मैडिकल छात्रों की बात की.

मैडिकल कालेजों की लगातार बढ़ती फीस को मुद्दा बनाते रवीश ने आंकड़ों के जरिए बताया. कुछ देर बाद ही सीएमआईई के मैनेजिंग डायरैक्टर महेश व्यास का इंटरव्यू दिखाया गया जो लाख उकसाने के बाद भी सीधेसीधे मोदी सरकार की नीतियों के विरोध में कुछ नहीं बोले, बल्कि सुझाव दे कर कमियों को उजागर किया.

शो का अगला और धमाकेदार आइटम मध्य प्रदेश के कृषि कल्याण विभाग में खाली पड़े पदों को ले कर सवाल करता हुआ था कि इस विभाग में साल 1990 से नई नियुक्तियां ही नहीं हुई हैं. कितने पद किस श्रेणी के खाली पड़े हैं और क्यों पड़े हैं, यह सवाल जोर दे कर पूछा गया.

● रिपब्लिक भारत

➢ **9 सितंबर :** रात 8 बजे की सुपरफास्ट 200 खबरों से, जिस में शुरुआती 1 से ले कर 40 खबरें सिर्फ तालिबान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान से ही जुड़ी हुई थीं. उस के बाद बंगाल में होने वाली राजनीतिक उथलपुथल, उत्तर प्रदेश में चुनाव को ले कर भाजपा की तैयारियां वगैरहवगैरह.

Divisa

SELECTED NO.1 BRAND INDIA 2016

No More CONSTIPATION!

If you are suffering from ***Constipation, Gas or Acidity,*** *then use* ***'Pet Saffa' Ayurvedic Granules/Tablets*** *today only. Pet Saffa tastes good and doesn't stick in the mouth. It is non-habit forming and shows results from the first day.*

Raju Srivastav

20% EXTRA
Divisa
Dr. Juneja's
पेट सफा
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION
Ayurvedic Proprietary Medicine
Safe for daily use

- CONSTIPATION
- ACIDITY
- GAS

Dr. Juneja's ®

पेट सफा

Natural Laxative Granules & Tablets

24x7 Helpline: 91197 88888 • www.petsaffa.com
Available at all medical & general stores

टीवी चैनल जानबूझ कर ऐसे मुद्दों को स्पेस देते हैं जिन से जनता का सरोकार नहीं, हां, इन से जनता का ध्यान जरूर भटकता है.

बीच में कहीं किसानों की खबरों को स्पेस मिला. वह भी मात्र 5 बुलेट्स में जिसे पढ़ने में दोनों महिला एंकरों ने मुश्किल से 35 सैकंड्स का समय लगाया. अंत में कुछ अन्य सुर्खियों, जिन में कुछ पौजिटिव खबरें थीं तो कुछ कुत्ते, बिल्ली, शेर, गीदड़ इत्यादि से जुड़ी खबरों के साथ प्रोग्राम का अंत हुआ.

रात 9 बजे ऐश्वर्य कपूर के साथ 'पूछता है भारत' प्राइम टाइम. टौपिक था तालिबानी क्रूरता की 'क्राइम कुंडली.' 20 सालों पहले हुए अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सैंटर पर हुए हमले को याद किया गया. उस के बाद डिबेट शुरू हुई.

● भारत समाचार

➢ **21 सितंबर :** शाम 7 बजे से 9 बजे के प्राइम टाइम में जनता के मुद्दों के बजाय केवल यह दिखाया जाता रहा कि प्रयागराज के महंत नरेंद्र गिरि की मौत हो गई. पूरे एक घंटे तक इस घटना को ले कर अलगअलग तरह की घटनाओं के समाचार दिखाए गए.

शाम 7:45 से 8 बजे के बीच अडानी ग्रुप के गौतम अडानी की खबर के साथसाथ फिरोजाबाद की कुछ खबरों के बाद शिवपाल यादव और ओवैसी की मुलाकात की खबर दिखाई गई. शाम 7:55 से ले कर 8 बजे के बीच 5 मिनट में 'तेज रफ्तार समाचार' में तमाम खबरें ऐसे निबटा दी गईं कि वे किसी को सुनाई ही नहीं दी होंगी.

रात 8 बजे से 'द डिबेट' नामक शो शुरू होता है. जिस के एंकर 'भारत समाचार' के प्रमुख ब्रजेश मिश्रा होस्ट करते है. इस में कई दिलचस्प हैडिंग के सहारे 'मठ-महंत और मौत की मिस्ट्री' नाम से शो को प्रसारित किया गया. ब्रजेश मिश्र बारबार पुलिस की कार्यशैली, शव का पोस्टमार्टम न कराए जाने को मुद्दा बनाते रहे. वे बारबार यह बात भी दोहरा रहे थे कि महंत की मौत की जांच सीबीआई से क्यों न कराई जाए?

चैनलों का खेल

टीवी न्यूज चैनलों के इन विश्लेषणों से यह बात साफतौर पर जाहिर होती है कि चैनलों में दिखाई जाने वाली खबरें जनता से कोई सरोकार नहीं रखती हैं. आजकल न्यूज चैनल सरकार की भक्ति और षड्यंत्र फैलाने में उलझ कर रह गए हैं. इस के लिए वे असल खबरों को एक तरफ दबाते चलते हैं तो दूसरी तरफ उन खबरों की जानबूझ कर कवरेज करते हैं जो जनता को भ्रमित करती हैं.

दोनों विश्लेषणों में साफ दिखता है कि चैनल उन मुद्दों को दबाते हैं जो जनता से जुड़े हैं और उन्हें जानबूझ कर

उठाते हैं जो फुजूल के हैं. 9 सितंबर के दिन टीवी चैनलों में जानबूझ कर पूरे दिन अफगानिस्तान से संबंधित खबरों को दिखाया जा रहा था ताकि किसान संबंधित खबरों को इस बहाने छिपाया जा सके. यह सिर्फ इस बार की बात नहीं, जब से किसान दिल्ली के बौर्डरों पर अपनी मांग को ले कर प्रदर्शन कर रहे हैं, लगभग तभी से ही एक खास षड्यंत्र के तहत उन के सवालों को या तो छिपाया जा रहा है या गलत तरीके से जनता के सामने परोसा जा रहा है. हम ने पिछले 9 महीनों में चैनलों के माध्यम से किसानों पर कभी खालिस्तानी, माओवादी, आतंकवादी का आरोप लगते सुना तो कभी देशद्रोही होने का.

वहीं, महंत की आत्महत्या मामले को चैनलों में भरपूर जगह देना सीधा दिखाता है कि चैनल के पास आमजन की खबरें दिखाने की हिम्मत नहीं बची है. जहां देश की अर्थव्यवस्था पटरी से उतर चुकी हो, महंगाई और बेरोजगारी चरम हो, असमानता दिनोंदिन बढ़ रही हो, शिक्षा और स्वास्थ्य डांवांडोल हो, वहां पूरेपूरे दिन इस खबर पर सिर गड़ाए रखना उस शुतुरमुर्ग सरीखा लगता है जो मोदी बचाव में ही अपने सिर को जमीन से बाहर निकालता है.

मीडिया के दोगलेपन का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि गुजरात के मुद्रा पोर्ट पर 15 सितंबर को 2,988 किलो, जिस की कीमत 21 हजार करोड़ रुपए आंकी गई, अफगान हेरोइन सीज की गई. बता दें यह वही पोर्ट है जो इस समय अडानी के कंट्रोल में है. किंतु इस मामले में मजाल कि किसी गोदी चैनल की चूं बोल जाए, पर एक बार पिछले साल के टीवी चैनलों के नजारों पर गौर करें तो रिया चक्रवर्ती जिस के पास कथित 59 ग्राम की हशीश होने के आरोप लगे थे को भयानक मीडिया ट्रायल से गुजरना पड़ा.

चाटुकारिता सिर्फ प्राइवेट न्यूज चैनलों में ही नहीं, बल्कि लोकसभा व राज्यसभा चैनलों में भी देखी गई है, जिस के ऊपर विपक्ष ने अपनी कवरेज न दिखा, पक्षपाती होने के गंभीर आरोप हाल ही में लगाए हैं. यही कारण भी था कि मोदी सरकार ने हाल ही में इन दोनों सरकारी चैनलों को आपस में मर्ज कर 'संसद' चैनल लौंच किया ताकि राज्यसभा, जहां विपक्ष थोड़ीबहुत मजबूत स्थिति में है, उस की कम से कम कवरेज की जा सके.

ध्यान देने वाली बात यह है कि इस वर्ष अप्रैल में वर्ल्ड फ्रीडम इंडैक्स की रिपोर्ट पब्लिश हुई थी. उस के अनुसार, 180 देशों की लिस्ट में भारत शर्मनाक 142वें स्थान पर था, जिसे आजाद

हम किसान हैं
आतंकवादी नहीं
We are FARMERS
Not TERRORISTS
I ❤ खेती

यह चैनलों की ही मेहरबानी है कि भाजपा या सरकार विरोधी व्यक्ति को देशविरोधी आरोपित कर दिया जाता है.

पत्रकारिता के लिहाज से खराब माना गया है. टीवी न्यूज चैनल का असली काम सरकार और सत्ता से सवाल करना है, लेकिन अपना काम न कर वे सरकार की चाटुकारिता कर रहे हैं. यही वजह भी है कि भारत का स्थान दुनिया में 142वें स्थान पर आता है. लेकिन इस की क्या वजह है कि न्यूज चैनल सरकार से सवाल पूछने में घबराते हैं.

प्रैस की स्वतंत्रता और पत्रकारों के अधिकारों के लिए काम करने वाली संस्था 'रिपोर्ट्स विदाउट बौडर्स' ने 37 ऐसे राष्ट्राध्यक्षों यानी सुप्रीम नेताओं के नाम प्रकाशित किए जो उस के मुताबिक, प्रैस को प्रभावित कर रहे हैं, जिन में नरेंद्र मोदी का भी नाम शामिल था.

मीडिया से असल मुद्दे नदारद

देश में मजदूर, किसान की हालत नहीं सुधरी, बेरोजगारी कम नहीं हुई. दुकानदार या मझले उद्योगपति अपने कारोबार बैठ जाने से त्रस्त हैं. इन सब को लगता है कि 7 सालों की भगवा सरकार में उन्हें कुछ मिला नहीं, बल्कि जो उन के पास था, वह भी उन से छिन गया. किसान खेतों से निकल कर शहर की सड़कों पर बैठे हैं. एमएसएमई सैक्टर पर पड़े बुरे प्रभाव से मजदूरों का काम छिन गया है.

इस वर्ष के मनरेगा के आंकड़े बताते हैं कि जुलाई में करीब 3.19 करोड़ परिवारों ने इस योजना के तहत काम की मांग की, जो पिछले साल की तुलना में 0.25 प्रतिशत कम है. लेकिन 2019 के समान महीने की तुलना में करीब 74 प्रतिशत ज्यादा है. यह दिखाता है कि शहरों से गए मजदूरों का बड़ा हिस्सा अपने गांव में ही बसा रह गया.

भाजपा सरकार ने 2014 में सत्ता में आने से पहले युवाओं को अच्छे दिनों के सपने दिखाए थे. युवा बेहतर रोजगार और विकास के सपने संजोने लगे थे, पर युवाओं की उम्मीद वहीं टूट गई जब मोदी ने पकोड़े तलने को ही युवाओं के लिए रोजगार की श्रेणी में डाल दिया.

आईएलओ के आंकड़ों के अनुसार, विश्व में औसत रोजगार दर 57 फीसदी है. जबकि भारत की औसत रोजगार दर 47 फीसदी है. यहां तक कि हम से नीचे माने जाने वाले पड़ोसी देश पाकिस्तान, श्रीलंका और बंगलादेश भी भारत से इस मामले में आगे हैं. पाकिस्तान और श्रीलंका की रोजगार दर क्रमशः 50 और 51 फीसदी है, जबकि बंगलादेश में रोजगार दर 57 फीसदी है. आज देश अभूतपूर्व बेरोजगारी देख रहा है.

खुद सरकार की एनएसएसओ की लीक्ड रिपोर्ट के अनुसार, भारत की बेरोजगारी दर 2017-18 में 45 वर्ष के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई थी. इस शर्म के बाद सरकार ने बेरोजगारी का सरकारी डेटा निकालना ही छोड़ दिया. उधर, सीएमआईई की रिपोर्ट के अनुसार, 2020-21 में नौकरीपेशा जौब में 98 लाख की गिरावट हुई है. इसी रिपोर्ट के अनुसार कोरोना की दूसरी लहर में अप्रैलमई के महीने में 2.27 करोड़ लोग बेरोजगार हो गए, तब बेरोजगारी दर 12 प्रतिशत तक पहुंच गई. यही कारण भी है कि पिछले और इस साल 17 सितंबर को युवाओं ने प्रधानमंत्री के जन्मदिन को 'बेरोजगार दिवस' और 'जुमला दिवस' घोषित कर दिया.

पर इस की उम्मीद चैनलों से लगाना कि वे बेरोजगारी को ले कर चर्चा करेंगे और सरकार से सवाल पूछेंगे, खुद को धोखे में रखने जैसा है. सीएमआईई के

14:55

गृहशोभा सरिता मुक्ता

सरस सलिल सत्यकथा मनोहर कहानियां

पत्रिकाओं की सैकड़ों रोचक कहानियां
पढ़ने के लिए आज ही डाउनलोड करें

Kahani
सरिता
ऐप

रोमांस, क्राइम, फैमिली, रिलेशनशिप व हास्य में से अपनी पसंदीदा विधा चुनने का विकल्प

पसंदीदा कहानियों को औफलाइन सेव करने की सुविधा

प्रतिदिन नई कहानियां व व्यंग्य

सुविधानुसार फौंट साइज कमज्यादा करने की सुविधा

गूगल प्लेस्टोर पर उपलब्ध

DELHI PRESS
MAGAZINES

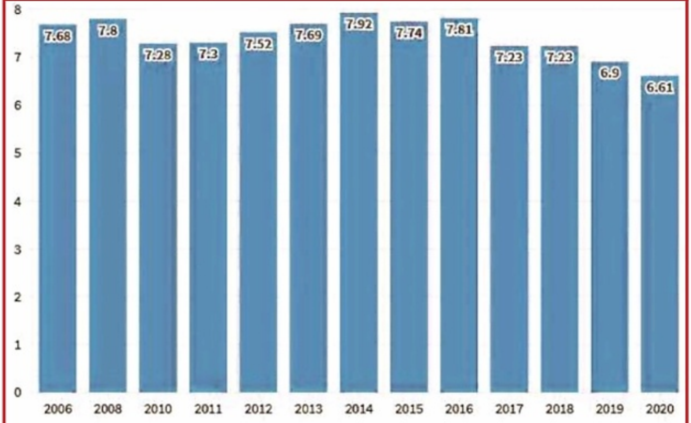

गिरता हुआ भारत का लोकतांत्रिक स्कोर

स्रोत : पब्लिक हैल्थ फाउंडेशन इंडिया (पीएचएफआई)

आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सितंबर 2016 तक भारतीय मीडिया और प्रकाशन उद्योग में 10 लाख से अधिक कर्मचारी काम कर रहे थे. अगस्त 2021 में इन की संख्या घट कर मात्र 2 लाख 30 हजार ही रह गई है. इस सैक्टर से 78 प्रतिशत नौकरियां खत्म हो गई हैं. यानी 5 में से 4 मीडिया कर्मियों की नौकरियां समाप्त हो गई हैं.

सिर्फ इसी साल मीडिया और प्रकाशन में काम करने वाले 56 प्रतिशत कर्मचारियों ने या तो काम छोड़ दिया या उन की नौकरियां चली गई हैं. अब सोचिए कि यह जब अपने क्षेत्र में पनपे बेरोजगारी पर कुछ बोल नहीं रहे तो खाक दूसरे क्षेत्र की बेरोजगारी पर कहेंगे. जबकि ये अच्छे से जान भी रहे हैं कि इस बेरोजगारी के पीछे का कारण पिछले सालों में लागू की गई खराब मोदी नीतियां हैं. इस के बावजूद ये इस पर नहीं कहेंगे क्योंकि इन बड़ेबड़े टीवी चैनलों का संचालन करने वाले कहीं न कहीं मोदीमयी हैं, उन की मनुवादी मानसिकता का समर्थन करते हैं.

लंदन स्थित ग्रुप 'द इकोनौमिस्ट' की सहयोगी संस्था 'द इकोनौमिस्ट इंटैलिजैंस यूनिट' (ईआईयू) के अनुसार, 167 देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थितियों को परखने के बाद भारत को 6.61 अंक मिले हैं. जबकि वर्ष 2019 में उस का स्कोर 6.9 और रैंकिंग 51 रही. भारत का सब से बेहतर स्कोर 2014 में 7.92 रहा है, तब उस की रैंकिंग 27 थी.

यह सरिता के विश्लेषण से भी समझ आ रहा है कि देशवासियों के बुनियादी सवालों पर न टीवी चैनलों में कोई खास बात हो रही है और न राजनीति में. दोनों ने पूरे देश को धर्म और पाखंड की जंजीरों में बांध रखा है. वर्तमान हालात को गहराई से समझाने वाली खबरें, बातें

और किताबें अब पत्रकारिता से गायब हो चुकी हैं. गोदी पत्रकारिता का बोलबाला है, जहां खूब सारे पैसे और अवार्ड्स हैं.

मीडिया में थ्योरी है 'कल्टीवेशन थ्योरी' या इसे 'गोएबल्स थ्योरी' भी कह सकते हैं, जिस के अनुसार, 'लोगों को जो दिखाया जाता है, वे उसे ही सच मानने लगते हैं,' जोकि हो भी यही रहा है. युवा पीढ़ी पर अज्ञानता का बोझ लादा जा रहा है, उसे सांप्रदायिकता का चश्मा पहनाया जा रहा है, महिलाओं को धर्म की बेड़ियों में जकड़ा जा रहा है और ये सब लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के माध्यम से हो रहा है. इस से चिंतनीय बात इस देश के लिए और कुछ नहीं हो सकती.

आज जनता को सत्तापक्ष के लिए गुमराह करना इन चैनलों का मूल काम बन गया है, पर इस का खमियाजा भी इन्हें भुगतना पड़ रहा है. हाल ही में मुज्जफरनगर रैली में किसान महापंचायत को कवर करने के दौरान आजतक चैनल की मुख्य एंकर चित्रा त्रिपाठी को किसानों के गुस्से का सामना करना पड़ा. किसानों ने 'गोदी मीडिया गो बैक' के नारे के साथ चित्रा को प्रदर्शनस्थल में घुसने ही नहीं दिया.

यह कितनी शर्म की बात है कि एक समय जिन चैनलों को माध्यम बना कर आंदोलनकारी अपनी बातें जनता के सामने रखते थे, आज वे अपने आंदोलनों में उन्हें घुसने तक नहीं देते हैं. फिर चाहे वह किसान आंदोलन हो, सीएए-एनआरसी विरोधी आंदोलन हो या बेरोजगारों-दलितों का आंदोलन हो. आज इन चैनलों की हालत यह है कि इन के डिबेट शो पर गए पैनलिस्ट भी इन्हें भाजपा का प्रवक्ता, दलाल, भगवा इत्यादि नामों से संबोधित कर रहे हैं.

चैनलों को एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि हिटलर, मुसोलिनी जैसे तानाशाह इन का प्रयोग कर खुद की कल्टपर्सनैलिटी तो बनवा लेते हैं पर इस का भारी नुकसान समाज को होता है. ऐसे लोग सत्ता में आ कर सब को तबाह ही करते हैं. यही कारण है कि आज के टीवी चैनल प्रभावी माध्यम होने के कारण सत्ता के साथ इस गुनाह में बराबर के दोषी हैं.

ZEENEWS
REPUBLIC भारत
आज तक
Don't Cover us
You Are Fake Media
# GODI MEDIA
# GODI MEDIA

एक समय था जब टीवी चैनलों को प्रदर्शन कवर करने का न्योता मिलता था, अब हाल यह है कि इन्हें धरनास्थलों में घुसने तक नहीं दिया जाता.

यदि यही मीडिया आमजन की आवाज बन जाता तो लोकतंत्र के लोकसेवक अपने कर्तव्यों को समझते, उन्हें पूरा करते. मगर जब मीडिया ही अपनी आंखें मूंद कर राजनीति की गोद में जा बैठा है तो इन जनसेवकों को कौन

सुने और उन्हें कौन चेताए? मीडिया के चाटुकार होने की वजह से भारत में लोकतंत्र का ग्राफ विश्व में गिरा ही है.

सरकारें तो आतीजाती हैं पर चिंता की बात यह है कि देश के असली मुद्दे पत्रकारिता की दुनिया से गायब हो चुके हैं. क्या मीडिया की जिम्मेदारी नहीं है कि वह ऐसी नकारा सरकार को आड़े हाथों ले? मगर नहीं, मीडिया तो धर्म और सरकार के स्तुतिगान में मगन है. इन मुद्दों से उस का कोई वास्ता नहीं है.

पत्रपत्रिकाएं जरूरी

सरिता टीम ने 9 और 21 सितंबर के रैंडम विश्लेषण में पाया कि टीवी चैनल मोदी भक्ति में लीन हैं. 9 सितंबर को ज्वलंत किसानों के मुद्दे को छोड़ तालिबान छाया रहा और 21 सितंबर को महंत की आत्महत्या छाई रही. टीवी न्यूज चैनलों ने 9 और 21 सितंबर को 50 से 60 फीसदी हिस्सा फुजूल मुद्दों को दिखाने में खर्च कर दिया, जो दर्शकों और चैनलों की मानसिकता ही दर्शाता है.

आज के समय में यह जरूरी है कि टीवी चैनलों में परोसे जा रहे आधेअधूरे तथ्यों वाली खबरों से दिखाए जाने वाले फेक न्यूज से, मसालेदार खबरों से खुद को बचाया जाए. ये टीवी चैनल समाज को और अधिक खोखला करने का काम कर रहे हैं. टीवी न्यूज चैनलों में आननफानन और आपसी आपाधापी के चलते किसी खबर को दिखाने से पहले उस की ठीक से जांच नहीं की जाती है. लेकिन पत्रपत्रिकाओं में छपी खबरों की अपनी जिम्मेदारी होती है. ये सिर्फ बोली गई बातें नहीं होतीं कि मुंह से निकल जाएं. यह लिखी सूचना होती है, जिस की साख होती है और इस काम में कई अच्छी पत्रपत्रिकाएं आम लोगों की आवाज बनती आ रही है.

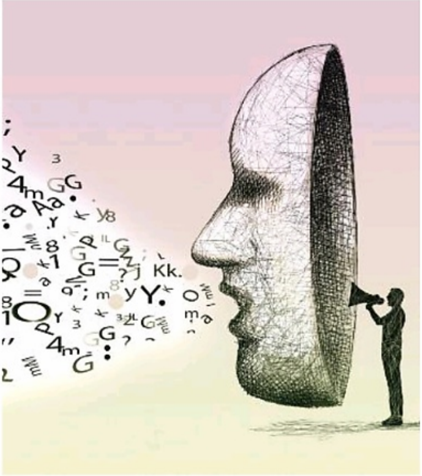

पत्रपत्रिकाओं में छपी खबर की अपनी विश्वसनीयता होती है. यह बोली गई बात नहीं जो मुंह से यों ही निकल जाए, यह लिखी सूचना होती है जिस की साख होती है.

भोपाल के एक युवा व्यवसायी निरंजन सिंह कहते हैं, "प्रिंट मीडिया में सरिता मैगजीन अभी भी अग्रणी है और मेरे पापा और दादा के जमाने से अग्रणी है जिस ने सब से पहले पंडापुरोहितवाद की पोल खोलनी शुरू की, सामाजिक कुरीतियों पर तार्किक, करारे प्रहार किए व सरकार, चाहे किसी भी पार्टी की रही हो, की जनविरोधी नीतियों को सरिता ने कभी बख्शा नहीं और न ही कोई समझौता किया."

अपना रिश्ता पत्रपत्रिकाओं से जोड़ें, जो खबर के हर पहलू का सही नजरिया पेश करती हैं. ●

"India's best
English-language magazine"
—*The Guardian, UK*

“For those with an interest in India, it
has become an absolute must-read”
—*The New Republic, USA*

As India’s only magazine devoted to long-form narrative journalism, *The Caravan* has quickly become renowned for its high standard of detailed reporting, elegant writing, and incisive commentary. As a literary and political journal, it has gained global recognition beyond its growing readership and is now at the forefront of Indian political debates. *The Caravan* is now considered the most respected and intellectually agile magazine in the country.

INDIA’S ONLY NARRATIVE JOURNALISM MAGAZINE

SEPTEMBER 2021
A JOURNAL OF POLITICS AND CULTURE
Why PM CARES must be investigated
THE CARAVAN
Substance and Shadows
The Punjab government's sham war on drugs

The Caravan now available for only Rs 1125 (12 issues)

Assured Delivery by Registered Post.

THE CARAVAN
Journal of politics, culture & business.
www.caravanmagazine.in

To subscribe call toll free at: 1 800 103 8880, Landline 011-41398888, Ext. 119/221/264 (Monday to Saturday 10.00 am to 6.00 pm)
For subscribing online, kindly visit www.delhipress.in/subscribe or e-mail at subscription@delhipress.in
For advertising kindly call Mr. Shantanu Choudhury at +919810604922 or mail shantanu.choudhury@delhipress.in

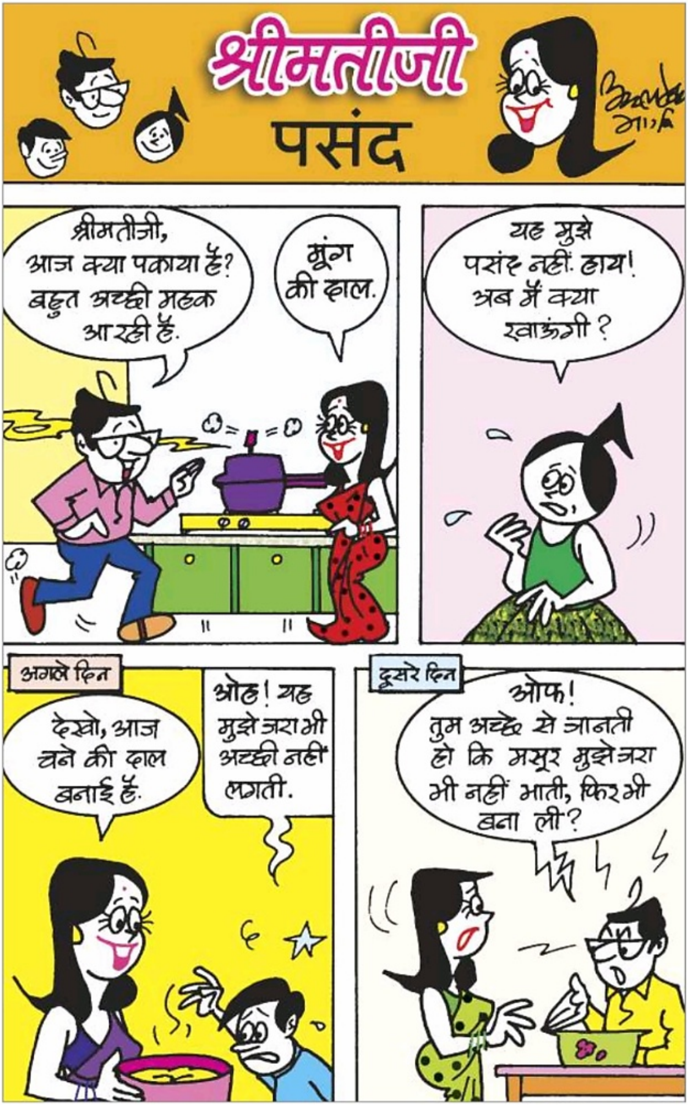
श्रीमतीजी
पसंद
श्रीमतीजी, आज क्या पकाया है? बहुत अच्छी महक आ रही है.
मूंग की दाल.
यह मुझे पसंद नहीं. हाय! अब मैं क्या खाऊंगी?
अगले दिन
देखो, आज चने की दाल बनाई है.
ओह! यह मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगती.
दूसरे दिन
ओफ! तुम अच्छे से जानती हो कि मसूर मुझे जरा भी नहीं भाती, फिर भी बना ली?

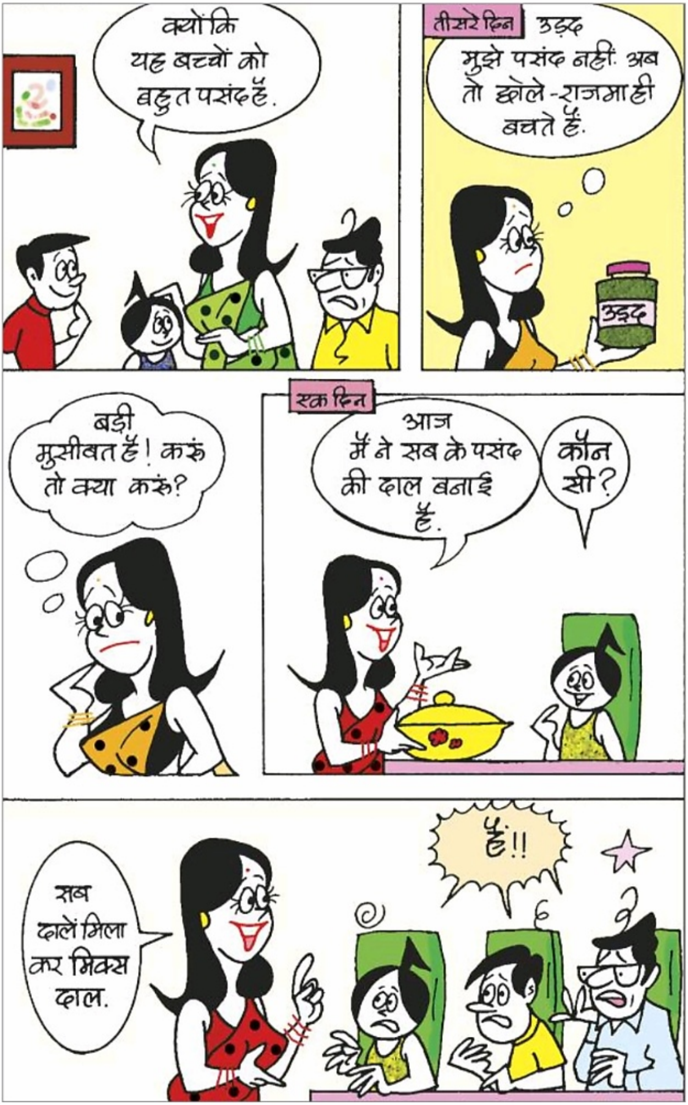
क्योंकि यह बच्चों को बहुत पसंद है.
तीसरे दिन
उड़द
मुझे पसंद नहीं. अब तो छोले-राजमा ही बचते हैं.
उड़द
बड़ी मुसीबत है! करूं तो क्या करूं?
एक दिन
आज मैं ने सब के पसंद की दाल बनाई है.
कौन सी?
सब दालें मिला कर मिक्स दाल.
हैं!!

धार्मिक
मुद्दा

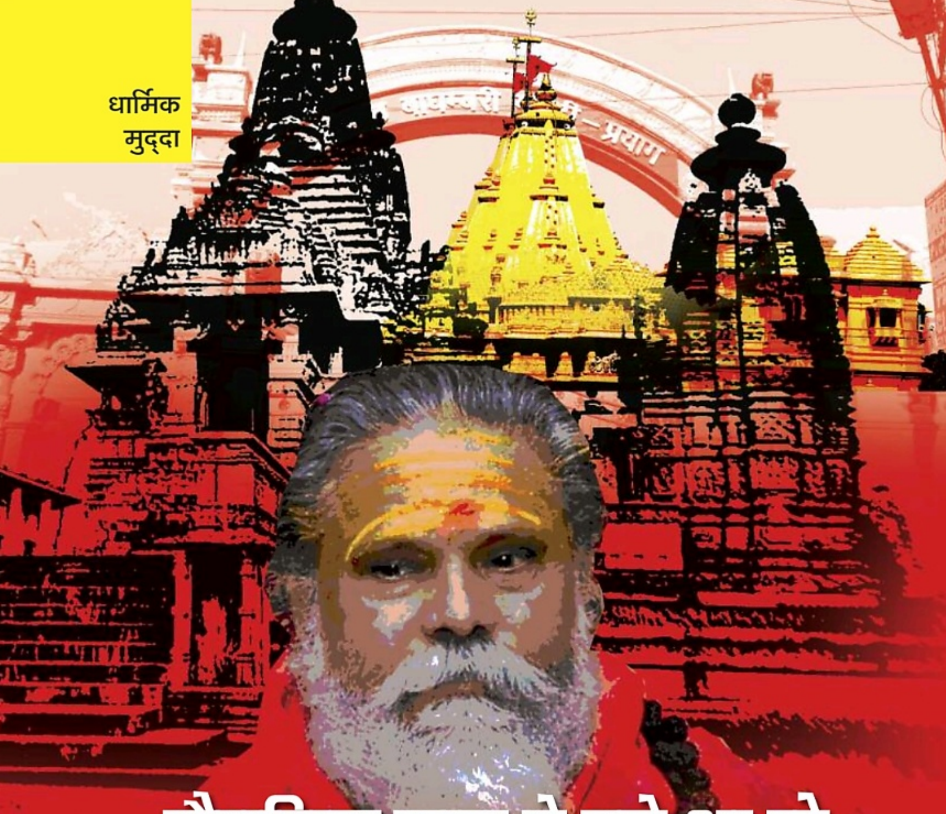

पौराणिक काल से चले आ रहे मंदिर, मठ और आश्रम में झगड़े

• शैलेंद्र सिंह

नरेंद्र गिरि आत्महत्या मामला कोई नया मामला नहीं है. मंदिर, मठ और आश्रम के झगड़े काफी पहले से चलते आ रहे हैं. बदलाव यह आया है कि पहले ये झगड़े पद श्रेष्ठता के चलते होते थे, अब इन मठों में दानस्वरूप अथाह संपत्ति और धनवर्षा होने से इन का रूप दानपात्र पर नियंत्रण पाने का हो गया है.

पौराणिक काल से ही मठ, मंदिरों और आश्रमों में झगड़े होते रहे हैं. पहले जमीनजायदाद बहुत मूल्यवान नहीं होती थी तो ये झगड़े प्रतिष्ठा, सम्मान और श्रेष्ठता के लिए होते थे. प्रतिष्ठा, सम्मान और श्रेष्ठता के टकराव में अलगअलग धर्म और संप्रदाय बनते गए. इन के अलगअलग देवता और मंदिर, आश्रम बनते गए.

रामायाण काल की बात करें तो विश्वामित्र और वशिष्ठ के बीच टकराव श्रेष्ठता को ले कर ही था. विश्वामित्र ने ऋषि, महर्षि और राजर्षि तक की उपाधि पा ली थी लेकिन कोई उन को ब्रह्मर्षि मानने को तैयार नहीं था. ब्रह्मर्षि की उपाधि वशिष्ठ को मिली थी. विश्वामित्र ने वशिष्ठ से वैमनस्य रखना शुरू कर दिया. ऐसे संतों की संख्या कम नहीं है. अपनी श्रेष्ठता को बनाए रखने के कारण ही 33 करोड़ देवता और तमाम धर्मसंप्रदाय बनते गए.

जैसेजैसे मठ, आश्रमों और मंदिरों में धन संपदा बढ़ने लगी, इन के रूप बदलने लगे. मंदिरों में कब्जे और दानपात्र पर नियंत्रण किया जाने लगा. मंदिरों की कमेटियों में झगड़े शुरू हो गए. मंदिर में ही रखे दानपात्र में एक से अधिक ताले लगने लगे. जिस की वजह यह थी कि जब दानपात्र खुले तो हर वह आदमी वहां मौजूद रहे जिस के पास उस की चाबी होती है. ज्यादातर मठ, मंदिर और आश्रम गुरु–शिष्य परंपरा के होते हैं जहां गुरु ही अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करता है. मठ, मंदिर और आश्रमों पर कब्जा करने के लिए गुरु यानी मंदिर के महंत को अपने पक्ष में करने के लिए शिष्य साम, दाम, दंड, भेद का प्रयोग करने लगे. अगर इस से बात न बने तो बात महंत यानी गुरु की हत्या तक पहुंच जाती है.

प्रयागराज में अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष और बाघंबरी मठ के महंत नरेंद्र गिरि की मौत के बाद यह बात एक बार फिर से चर्चा में जरूर आ गई है, पर मठ, आश्रम और मंदिरों में जमीनजायदाद और प्रभाव को ले कर झगड़े 90 फीसदी मंदिरों में चल रहे हैं. जिन लोगों ने छोटे महंत कहे जाने वाले

आनंद गिरि की लाइफस्टाइल को देखा, वे समझ रहे थे कि छोटे महंत आनंद गिरि और बड़े महंत नरेंद्र गिरि के बीच प्रभाव और श्रेष्ठता को ले कर जो झगड़ा चल रहा है वह कुछ कर गुजरेगा. यह जंग पैसों को ले कर शुरू हुई. इस के बीच की बड़ी वजह आनंद गिरि की बढ़ती महत्त्वाकांक्षा भी थी.

विवाद की वजह दान के पैसे

2019 के कुंभ का आयोजन जब प्रयागराज में हुआ और भाजपा के बड़े नेताओं और मंत्रियों का वहां आनाजाना हुआ तो अपना रसूख बढ़ाने के लिए आनंद गिरि इन सब से मिलने लगा. यह बात नरेंद्र गिरी के खेमे को पसंद नहीं आ रही थी. आंनद गिरि कई कामों की जानकारी अपने महंत नरेंद्र गिरि को भी नहीं देता था. आपसी खींचतान के बाद यह मामला एकदूसरे को मंदिर से बेदखल करने तक पहुंच गया. मंदिर की जमीन पर पैट्रोल पंप खोलने को ले कर हुए विवाद के बाद नरेंद्र गिरि ने अपने शिष्य आनंद गिरि को मठ और मंदिर से बेदखल कर दिया.

इस के बाद आनंद गिरि अपने ही गुरु पर जायदाद के हेरफेर, परिवार और करीबी लोगों को मंदिर की संपत्ति को देने के साथ ही साथ उन के चरित्रहनन का काम करने वाली बातें कहने लगा. यही वह सब से बड़ा पेंच था जिस के डर से महंत नरेंद्र गिरि ने आत्महत्या कर ली.

मंदिरों में जिस पैसे और जायदाद को ले कर विवाद हो रहा है वह जनता द्वारा दिया गया दान होता है. जनता को यह देखना चाहिए कि वह जो पैसा भगवान के नाम पर मंदिरों में दान देती है उस का असल उपभोग कौन कर रहा है? इस के कारण कितने झगड़े बढ़ रहे हैं? संत और महात्मा भगवान के नाम पर डरा कर जनता से पैसे वसूलते हैं. दान के इन्हीं पैसों पर संतमहात्मा ऐश करते हैं. इस के लिए ही तमाम झगड़े होते हैं. बाघंबरी मठ और निरंजनी अखाड़ा करीब 9 सौ साल पुराने मठ हैं. इन के पास 3 हजार करोड़ रुपए से अधिक की संपत्ति है. यह कई राज्यों में फैली है.

मठों का काम शिक्षा देने का होता था. मठ को राजा या सरकार जमीन और पैसा इसलिए देती थी कि वह शिक्षा के क्षेत्र में इस का प्रयोग कर सके. महंत केवल केयरटेकर की तरह होता है. वह मठ की संपत्ति का मालिक नहीं होता. लेकिन होता इस के ठीक उलटा है. महंत मालिक की तरह से काम करता है. अपने लोगों, नातेरिश्तेदारों को इस का लाभ देता है. मठों में यह नियम होता है कि दीक्षा लेने के बाद अपने परिवार से संबंध त्यागने पड़ते हैं.

आज 90 फीसदी मठ के महंत अपने परिवार के लोगों के साथ संबंध रखते हैं. नरेंद्र गिरि ने जब अपने शिष्य आनंद गिरि को मठ से निकाला तो आरोप यही था कि वह अपने परिवारजनों को इस का लाभ देता है. यही आरोप बाद में आनंद गिरि ने अपने महंत नरेंद्र गिरि पर भी लगाया था. लोक कल्याण के नाम पर बनने वाले मठ संतों के लिए पैसे पैदा करने वाली मशीनें बन गए हैं.

नरेंद्र गिरि के प्रभाव में रही सत्ता और सरकार

साल 1984 नरेंद्र सिंह की मुलाकात संगम किनारे बने निरंजनी अखाड़े के संत कोठारी दिव्यानंद गिरि से होती है. नरेंद्र सिंह उन की सेवा करने लगते हैं. वे अपने

घर वापस जाने को राजी नहीं हुए तो तब दिव्यानंद नरेंद्र को ले कर हरिद्वार चले गए. वहां उन का समर्पण भाव देख कर दिव्यानंद ने 1985 में उसे संन्यास की दीक्षा दी और उस का नामकरण नरेंद्र गिरि के रूप में कर दिया.

इस के बाद श्रीनिरंजनी अखाड़े के महात्मा व श्रीमठ बाघंबरी गद्दी के महंत बलवंत गिरि ने गुरु दीक्षा दी. बलवंत गिरि के न रहने के बाद नरेंद्र गिरि 2004 में मठ श्रीबाछंबरी गद्दी के पीठाधीश्वर तथा बड़े हनुमान मंदिर के महंत का पद संभाला. इस के बाद वे मठ और मंदिर को भव्य स्वरूप दिलाने के लिए काम करने लगे. 2014 में उन को संतों की सब से बड़ी संस्था अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद का अध्यक्ष चुन लिया गया.

महंत नरेंद्र गिरि का योगी आदित्यनाथ के साथ निजी संबंध रहा है. योगी सरकार ने इस हत्याकांड की सीबीआई जांच की घोषणा कर दी.

नरेंद्र गिरि मूलरूप से प्रयागराज के सराय ममरेज के करीब छतौना गांव के रहने वाले थे. उन के पिता का नाम भानुप्रताप सिंह था. वे आरएसएस में थे. पिता का प्रभाव नरेंद्र गिरि पर था. नरेंद्र सिंह 4 भाई थे. उन के भाइयों के नाम अशोक कुमार सिंह, अरविंद कुमार सिंह और आंनद सिंह थे. नरेंद्र गिरि यानी नरेंद्र सिंह ने बाबू सरजू प्रसाद इंटर कालेज से हाईस्कूल की परीक्षा पास की थी. अपने मधुर स्वभाव और मेहनती होने के कारण जल्दी ही उन का नाम अखाड़े के प्रमुख लोगों में शामिल हो गया. अखाड़े में शामिल होने के 6 साल के अंदर ही नरेंद्र गिरि पदाधिकारी बन गए. बाद में नरेंद्र गिरि ने अखाड़े के विस्तार पर काम करना शुरू किया.

1998 में नरेंद्र गिरि का नाम संतों के सब से बड़े अखाड़ा परिषद के पदाधिकारी के रूप में लिया जाने लगा. अखाड़ा परिषद का पदाधिकारी बनने के बाद नरेंद्र गिरि की अलग पहचान बनने लगी. नरेंद्र गिरि को सब से बड़ी सफलता तब मिली जब 2014 में अयोध्या निवासी संत ज्ञानदास की जगह पर उन को संतों की सब से बड़ी संस्था अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद का अध्यक्ष चुन लिया गया.

उस समय उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार थी और नरेंद्र गिरि मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के करीबी हो गए. 2019 कुंभ के समय नरेंद्र गिरि का भाजपा के बड़े नेताओं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य से करीबी नाता हो गया.

खतरा बन गया आनंद गिरि

आनंद गिरि मूलरूप से उत्तराखंड के रहने वाले हैं. किशोरावस्था में ही वे हरिद्वार के आश्रम में नरेंद्र गिरि से मिले थे. इस के बाद नरेंद्र गिरि उन को प्रयागराज ले आए थे. 2007 में आनंद

गिरि निरजंनी अखाड़े से जुड़े और महंत भी बने. गुरु के करीबी होने के कारण लेटे हनुमान मंदिर के छोटे महंत के नाम से भी उन को जाना जाता था.

यह मंदिर भी बाघंबरी ट्रस्ट द्वारा ही संचालित होता है. आनंद गिरि को योगगुरु के नाम से भी जाना जाता है. वे देशविदेश में योग सिखाने के लिए भी जाते रहे हैं. महत्त्वाकांक्षी आनंद गिरि ने खुद को खुद से ही नरेंद्र गिरि का उत्तराधिकारी भी घोषित कर लिया था. बाद में विवाद होने के बाद नरेंद्र गिरि ने इस का खंडन किया था. आनंद गिरि ने गंगा सफाई के लिए गंगा सेना भी बनाई थी. वे हरिद्वार में एक आश्रम भी बना रहे थे. इस के बाद नरेंद्र गिरि के साथ उन का विवाद बढ़ गया था.

महत्त्वाकांक्षी आनंद गिरि दूसरे शिष्यों की आंखों में खटकता था. ऐसे में उस को ले कर सभी इस कोशिश में रहते थे कि वह नरेंद्र गिरि से दूर हो जाए. आंनद गिरि के विरोधियों को तब मौका मिल गया जब आनंद गिरि 2016 और 2018 के पुराने मामलों में अपनी ही 2 शिष्याओं के साथ मारपीट और अभद्रता को ले कर 2019 में सुर्खियों में आए थे.

मई 2019 में उन को जेल भी जाना पड़ा था. इस के बाद सितंबर माह में सिडनी कोर्ट ने उन को बाइज्जत बरी कर दिया था. इस के बाद उन का पासपोर्ट भी रिलीज कर दिया गया था. इस के बाद आनंद गिरि भारत आए थे. आनंद गिरि का हवाई जहाज में शराब पीते हुए एक फोटो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था. आंनद गिरि ने इस को शराब नहीं, जूस बताया था. आनंद गिरि शौकीन किस्म का था. महंगी कार, बाइक और ऐशोआराम का उस को शौक था.

जमीन के टुकड़े को ले कर आमनेसामने आ गए गुरु और चेला

नरेंद्र गिरि से पहले भी ऐसे ही विवादों के बीच ही मठ के 2 महंतों की संदिग्ध हालत में मौत हो चुकी है. नरेंद्र गिरि का अपने ही शिष्य आंनद गिरि के साथ विवाद की वजह 80 फुट चौड़ी और 120 फुट लंबी गौशाला की जमीन का टुकड़ा बना. आनंद गिरि के नाम यह जमीन लीज पर थी. यहां पर पैट्रोल पंप बनना था. कुछ दिनों बाद महंत नरेंद्र गिरि ने इस प्रस्ताव को खारिज कर दिया कि यहां पर पैट्रोल पंप नहीं चल सकता है. उन का कहना था कि यहां पर मार्केट बना दिया जाएगा, जिस से मठ की आमदनी बढ़ेगी. आनंद गिरि का कहना था कि नरेंद्र गिरि उस जमीन को बेचना चाहते हैं. इस कारण लीज कैंसिल कराई गई थी.

महंत नरेंद्र गिरि को आनंद गिरि पर बहुत भरोसा था, जिस की वजह से तमाम निजी बातें आनंद गिरि की जानकारी में रहती थीं.

मठ की इस करोड़ों की जमीन को ले कर नरेंद्र गिरि और उन के शिष्य आनंद गिरि के बीच घमासान इस कदर बढ़ गया

कि नरेंद्र गिरि ने आनंद गिरि को निरंजनी अखाड़े और मठ से निकाल दिया था. इस के बाद आनंद गिरि भाग कर हरिद्वार पहुंच गया था. आनंद गिरि ने इस के बाद सोशल मीडिया पर कई तरह के ऐसे वीडियो वायरल किए जिन में नरेंद्र गिरि के शिष्यों के पास करोड़ों की संपत्ति होने का दावा किया गया था. नरेंद्र गिरि ने इन मुद्दों पर सफाई देते कहा था कि ये आरोप बेबुनियाद हैं. उन की छवि को धूमिल करने के लिए यह काम किया गया है. कुछ समय के बाद आनंद गिरि ने अपने गुरु नरेंद्र गिरि से माफी मांग ली थी. माफी मांगने के वीडियो भी वायरल हुए थे.

नरेंद्र गिरि का एक और विवाद लेटे हनुमान मंदिर के मुख्य पुजारी आद्या तिवारी और उन के बेटे संदीप तिवारी के साथ भी बताया जाता है. लेनेदेन के इस विवाद की वजह से दोनों के बीच बातचीत बंद थी. जायदाद के ऐसे विवादों के अलावा भी नरेंद्र गिरि कई तरह के दूसरे विवादों में भी घिरे थे.

नरेंद्र गिरि के करीबी रहे शिष्य और निरंजनी अखाड़े के सचिव महंत आशीष गिरि ने 17 नवंबर, 2019 को गोली मार कर आत्महत्या कर ली थी. आशीष गिरि ने जमीन बेचने का विरोध किया था. दारागंज स्थित अखाड़े के आश्रम में आशीष गिरि ने गोली मार कर आत्महत्या की थी. इस की वजह यह बताई जा रही थी कि 2011 और 2012 में बाघंबरी गद्दी की जमीन समाजवादी पार्टी के नेता को बेची जा रही थी. पुलिस ने आशीष गिरि की आत्महत्या का कारण डिप्रैशन बताया था.

तमाम मठ और मंदिरों में हैं झगड़े

नरेंद्र गिरि और आनंद गिरि कोई नए नाम नहीं है. संतमहंत, गुरुचेलों के ऐसे तमाम नाम हैं, जिन के बीच जायदाद को ले कर झगड़े होते रहे हैं. कुछ वर्षों पहले सुल्तानपुर जिले में धनपतगंज के मझवारा स्थित संत ज्ञानेश्वर के परमभाव धाम में विवाद होता रहा है. 23 वर्षों से चल रहे विवाद में दर्जनों हत्याएं हो चुकी हैं. 2006 में हंडिया में संत ज्ञानेश्वर समेत 8 लोगों की हत्या की गई थी.

तमाम शहरों में मठ, मंदिर और आश्रमों में जमीनजायदाद के झगड़े चल रहे हैं, जिन की वजह से तमाम हत्याएं हो रही हैं.

पिछले कुछ सालों के आंकड़े देखें तो अयोध्या में ऐसे तमाम अपराध हो चुके हैं जो अब केवल पुलिस के दस्तावेजों तक ही सिमट कर रह गए हैं. अयोध्या में राममंदिर विवाद के बारे में सभी जानते थे. बहुत कम लोगों को पता है कि अयोध्या के तमाम मंदिरों में आपसी झगड़े चल रहे थे, जिस की वजह से हत्या और कई गंभीर अपराध होते रहे हैं. राम की नगरी 'अयोध्या' में कई संतोंमहंतों की हत्या हो चुकी है. हत्याओं की वजह अथाह संपत्तियों पर कब्जे की होड़ रही है. संतों की हत्या करने वाला कोई बाहरी नहीं, बल्कि उन के अपने ही होते हैं.

मठों व मंदिरों की संपत्तियों पर कब्जे

वसीयतनुमा सुसाइड नोट

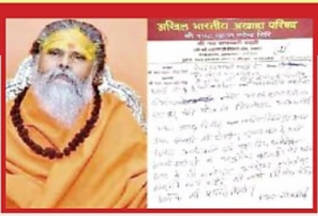
अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

महंत नरेंद्र गिरि का यह सुसाइड नोट अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के लैटरहैड पर लिखा गया है. पहले 13 सितंबर, 2021 की तारीख लैटरहैड पर पड़ी थी. बाद में इस को काट कर नीचे 20 सितंबर किया गया. टूटीफटी हिंदी में यह लिखा गया है. इस में कई जगहों पर कटिंग भी हुई है. अपने सुसाइड नोट में महंत नरेंद्र गिरि ने लिखा है-

- ''मैं, महंत नरेंद्र गिरि, मठ बाघंबरी गद्दी बड़े हनुमान मंदिर (लेटे हनुमानजी) वर्तमान में अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद, अपने होशोहवास में बगैर किसी दबाव के यह पत्र लिख रहा हूं. जब से आंनद गिरि ने मेरे ऊपर असत्य, मिथ्या और मनगढ़ंत आरोप लगाए हैं, तब से मैं मानसिक दबाव में जी रहा हूं. जब भी मैं एकांत में रहता हूं, मर जाने की इच्छा होती है. आंनद गिरि, आद्या तिवारी और उन के लड़के संदीप तिवारी ने मिल कर मेरे साथ विश्वासघात किया है.
- ''सोशल मीडिया, फेसबुक और समाचारपत्रों में आनंद गिरि ने मेरे चरित्र पर मनगढ़ंत आरोप लगाए हैं. मैं मरने जा रहा हूं. सत्य बोलूंगा. मेरा घर से कोई संबंध नहीं है. मैं ने एक भी पैसा घर पर नहीं दिया है. मैं ने एकएक पैसा मंदिर और मठ में लगाया है. 2004 में मैं महंत बना. 2004 से अब तक मंदिर मठ का जो विकास किया, सभी भक्त जानते हैं. आनंद गिरि द्वारा मेरे ऊपर जो आरोप लगाए गए उन से मेरी और मठमंदिर की बदनामी हुई है. मेरे मरने की संपूर्ण जिम्मेदारी आनंद गिरि, आद्या प्रसाद तिवारी जो मंदिर के पुजारी हैं और आद्या प्रसाद तिवारी के पुत्र संदीप तिवारी की होगी. मैं समाज में हमेशा शान से जिया. आनंद गिरि ने मुझे गलत तरह से बदनाम किया.
- ''मुझे जान से मारने का प्रयास किया गया. इस से मैं बहुत दुखी हूं. प्रयागराज के सभी पुलिस अधिकारियों और प्रशासनिक अधिकारियों से अनुरोध करता हूं, मेरी आत्महत्या के जिम्मेदार उपरोक्त लोगों पर कानूनी कार्रवाई की जाए, जिस से मेरी आत्मा को शांति मिले.
- ''प्रिय बलवीर गिरि मठमंदिर की व्यवस्था का प्रयास करना, जिस तरह से मैं ने

को ले कर पिछले कुछ वर्षों में कई घटनाएं सामने आई हैं. जिन की जांच के दौरान ज्यादातर मामलों में संपत्ति का विवाद ही सामने आया है. ठाकुरजी के नाम पर मंदिरों की एक नहीं, कई स्थानों पर जमीन होती है. इसी को ले कर विवाद होता है. अधिकांश विवाद जमीन को ले कर हुए हैं और यह बात सामने आई है कि संतों की हत्या में उन के शिष्यों का हाथ होता है.

अयोध्या के वासुदेवघाट स्थित बैकुंठ भवन के महंत अयोध्या दास के अचानक लापता होने के बाद उन की हत्या की खबर आई. बात सामने आई कि महंत की हत्या किसी और ने नहीं, बल्कि मठ में रहने वाले उन के ही चेले रामकुबेर दास ने सुपारी दे कर करवाई थी. अयोध्या के ही मुमुक्ष भवन में स्वामी सुदर्शनाचार्य की हत्या उन के ही

किया इसी तरह से करना. नितीश गिरि और मणि सभी महात्मा बलवीर गिरि का सहयोग करना. परमपूज्य महंत हरिगोबिंदजी एवं सभी से निवेदन है कि मठ का महंत बलवीर गिरि को बनाना. महंत रवींद्र गिरिजी (सजावटी मठी) आप ने हमेशा साथ दिया. मेरे मरने के बाद बलवीर गिरि का साथ दीजिएगा. सभी को ओम नमो नारायण.

● ''मै, महंत नरेंद्र गिरि, 13 सितंबर को ही आत्महत्या करने जा रहा था लेकिन हिम्मत नहीं कर पाया. आज हरिद्वार से सूचना मिली कि एकदो दिनों में आनंद गिरि कंप्यूटर द्वारा मोबाइल से किसी लड़की या महिला के साथ मेरी फोटो लगा कर गलत काम करते हुए फोटो वायरल कर देगा. मैं ने सोचा कहांकहां सफाई दूंगा. एक बार तो बदनाम हो जाऊंगा. मैं जिस पद पर हूं, वह गरिमामयी पद है. सचाई तो लोगों को बाद में पता चल जाएगी लेकिन मैं तो बदनाम हो जाऊंगा. इसलिए, मैं आत्महत्या करने जा रहा हूं.

● ''बलवीर गिरि मेरी समाधि पार्क में नीम के पेड़ के पास दी जाए. यह मेरी अंतिम इच्छा है. धनजंय विद्यार्थी मेरे कमरे की चाबी बलवीर महाराज को दे देना. बलवीर गिरि एंव पंचपरमेश्वर से निवेदन कर रहा हूं कि मेरी समाधि पार्क में नीम के पेड़ के नीचे बना देना. प्रिय बलवीर गिरि ओम नमो नारायण. मैं ने तुम्हारे नाम एक रजिस्टर्ड वसीयत की है जिस में मेरे ब्रहमलीन हो जाने के बाद तुम बड़े हनुमान मंदिर एवं मठ बाघंबरी गद्दी के महंत बनोगे. तुम से मेरा अनुरोध है कि मेरी सेवा में लगे विद्यार्थी, जैसे मिथलेश पांडेय, रामकृष्ण पांडेय, मनीष शुक्ला, शिवेष कुमार मिश्रा, अभिषेक कुमार मिश्रा, उज्ज्वल द्विवेदी, प्रज्ज्वल द्विवेदी, अभय द्विवेदी, निर्भय द्विवेदी, सुमित तिवारी का ध्यान देना. जिस तरह से हमेशा मेरी सेवा और मठ की सेवा की है उसी तरह से बलवीर गिरि महराज और मठ मंदिर की सेवा करना. वैसे, हमें सभी विद्यार्थी प्रिय हैं लेकिन मनीष शुक्ला, शिवम मिश्रा और अभिषेक मिश्रा मेरे अति प्रिय हैं.

● ''कोरोनाकाल में जब मुझे कोरोना हुआ, मेरी सेवा सुमित तिवारी ने की. मंदिर में मालाफूल की दुकान को मैं ने सुमित तिवारी के नाम किरायानामा में रजिस्टर किया है. मिथलेश पांडेय को बड़े हनुमान रुद्राक्ष इंपोरियम की दुकान किराए पर दी है. मनीष शुक्ला, शिवम मिश्रा और अभिषेक मिश्रा को लड्डू की दुकान किराए पर दी है.''

शिष्य जितेंद्र पांडेय ने की. यह हत्या इतनी दिल दहलाने वाली थी कि अपने गुनाह को छिपाने के लिए हत्यारे शिष्य ने स्वामी सुदर्शनाचार्य के शव को भवन में ही गाड़ दिया था.

अयोध्या में ही हनुमंत भवन में रामशरण भी अपनों के ही षड्यंत्र का शिकार हुए. विद्याकुंड मंदिर में महंत स्वामी रामपाल दास को भी विवाद के कारण मौत के घाट उतार दिया गया. महंत रामाज्ञा दास, पहलवान रामपाल दास, महंत प्रह्लाद दास और हरिभजन दास की हत्या की गई. हत्या की मूल वजह महंत अपने संबंधियों को लाभ पहुंचाने के चक्कर में रहते हैं और उन का असली उत्तराधिकारी गद्दी पाने से वंचित रह जाता है. इस से आपसी द्वेष और असंतोष बढ़ता है और अपराध हो जाता है. ●

शिवराज सिंह चौहान मोदी का भय कुरसी से प्यार

• भारत भूषण श्रीवास्तव

सत्ता पाने के बाद उसे जनताजनार्दन का आशीर्वाद बताने वाले शिवराज सिंह चौहान अचानक मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री पद को नरेंद्र मोदी की कृपा समझने लगे हैं. वे इतने डरे हुए हैं कि जनता की छोड़ अपनी फिक्र करने लगे हैं. उन का अधिकांश वक्त मोदी की तारीफ में जाया हो रहा है.

बीती 17 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 71वें जन्मदिन पर देशभर के और मध्य प्रदेश के सभी प्रमुख अखबारों में साढ़े 3 पृष्ठों के विज्ञापन छपे थे, उन में से 2 राज्य सरकार के थे.

पहले विज्ञापन में नरेंद्र मोदी के रोबदार फोटो के ऊपर बड़ेबड़े लाल अक्षरों में लिखा था, 'आप के सपने को संकल्प बना कर आत्मनिर्भरता के पथ पर अग्रसर.' फिर संक्षिप्त 2 पैराग्राफ की गद्यरामायण मोदीजी का गुणगान करती हुई थी कि माननीय श्री नरेंद्र मोदीजी का गुजरात के मुख्यमंत्री से ले कर भारत के प्रधानमंत्री तक का 20 वर्षों का कार्यकाल जनकल्याण व सुराज की दृष्टि से मील का पत्थर साबित हुआ है. इन अखबारों ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह सहित दूसरे दिग्गज भाजपाइयों के लेख भी छापे, जिन में नरेंद्र मोदी की तारीफों में कसीदे गढ़े गए थे.

दूसरे पृष्ठ के विज्ञापन में शिवराज सिंह फोटो में जबरन मुसकराने की कोशिश करते ऐलान कर रहे थे कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस पर उन्हीं की प्रेरणा से मध्य प्रदेश में 17 सितंबर से 7 अक्तूबर तक जनकल्याण और सुराज अभियान मनाया जाएगा, जिस में यहयह और वहवह कार्य अमुकअमुक तारीखों में किए जाएंगे.

अभियानों की इस तारीखवार लिस्ट को देख कर इस पर सियासी और

गैरसियासी हलकों में हंसीमजाक में कहा यह गया कि चलो शिवराज सिंहजी 7 अक्तूबर तक तो सेफ हैं, इस के बाद जो होगा, देखा जाएगा.

ठीक इसी दिन एक प्रमुख दैनिक अखबार में मुखपृष्ठ पर एक खबर प्रकाशित हुई थी कि विजय रूपाणी के सारे मंत्री बाहर, अन्य राज्यों में भी यह संभव.

इस समाचार में केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव के हवाले से इशारा किया गया था कि भाजपा गुजरात के अभिनव 'प्रयोग' को अन्य राज्यों में भी आजमा सकती है. गुजरात प्रयोगशाला नहीं, बल्कि 'प्रेरणा' है (यानी प्रयोग को दोहराना ही प्रेरणा होता है).

देश के इस नंबर वन अखबार के दफ्तरों पर पिछले दिनों ताबड़तोड़ छापे सनसनीखेज ढंग से पड़े थे मानो वाकई में अरबोंखरबों रुपयों का घोटाला हुआ हो, लेकिन एकदिवसीय हल्ले के बाद बात 'खोदा पहाड़ और निकला चूहा' जैसे आईगई हो गई.

कुछ लोगों ने समझ लिया कि ऐसे छापे एक खास मकसद से डाले जाते हैं, जो मीडिया संस्थान सरकार का विरोध करता है उसे यों ही तंग किया जाता है, जबकि कुछ का खयाल था कि इस मामले में भी 'डील' हो गई.

गौरतलब बात यह कि इस अखबार का सरकारी विज्ञापनों ने बहिष्कार सा किया हुआ है, इसलिए 17 सितंबर को आम राय यह बनी कि चूंकि उस को ये 3 पेज के विज्ञापन नहीं मिले या उस ने नहीं लिए, इसलिए उस ने भूपेंद्र यादव का बयान छाप कर अपनी भड़ास निकाल ली.

यह खबर उक्त अखबार में न भी

छपती तो भी आजकल सभी शिवराज सिंह को इतनी सहानुभूति से देखते हैं कि वे बेचारे असहज हो उठते हैं.

प्रदेशों के पंचक

भाजपा आलाकमान ने एक हैरतअंगेज फैसला लेते हुए पहले तो गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी को उन्हीं की मरजी से चलता किया, फिर पूरे घर के बल्ब बदल डालूंगा की तर्ज पर पूरा मंत्रिमंडल ही बदल डाला. नया मुख्यमंत्री भी बनाया तो एक नएनवेले से चेहरे को जो पहली दफा विधायक बना था. नए तमाम मंत्री भी पहली बार के विधायक हैं. इस प्रयोग से अब बचेखुचे भाजपाई मुख्यमंत्री सकते में हैं कि 3 राज्यों के तो मुख्यमंत्री बदल दिए गए, अब कहीं हमारा नंबर तो नहीं.

यह शुरुआत, कर्नाटक से हुई थी जब 26 जुलाई को अपनी सरकार के 2 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में मुख्यमंत्री बी एस येदियुरप्पा ने राज्यपाल थावरचंद गहलोत को धन्यवाद नहीं बल्कि अपना इस्तीफा दिया था.

इस मौके पर अपनी पीड़ा और व्यथा को उन्होंने भक्ति की चादर से ढकते हुए कहा था, **''मैं दुखी हो कर इस्तीफा नहीं दे रहा हूं. मैं खुशीखुशी ऐसा कर रहा हूं. मैं नरेंद्र मोदी और अमित शाह का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे जनता की सेवा करने का मौका दिया.''**

इस भावुक वक्तव्य से बरबस ही त्रेता युग के वानर राजा बालि की याद हो आती है, जिसे राम ने छल से मारा था. वाल्मीकि ने अपनी रामायण में मरते हुए बालि के मुंह से राम से ये सवाल करवाए हैं–

- मैं तो सुग्रीव से युद्ध में तल्लीन था और आप की तरफ पीठ कर के लड़ रहा था तो मुझे मार कर आप को क्या मिला?
- आप तो मर्यादा पुरषोत्तम कहलाते हैं. मैं अधर्मी नहीं हूं, फिर आप ने मेरा वध क्यों किया?
- आप के इस कृत्य ने एक निर्दोष को सजा दी है, आप का लक्ष्य है वध करना, फिर वह चाहे न्यायसंगत हो या न हो और.
- आप ने उस पर बाण चलाया जो आप से युद्ध ही नहीं कर रहा था. यह कहां तक न्यायसंगत है?

बालि के इन और ऐसे कुछ और सवालों का कोई तार्किक जवाब या पाठकों की जिज्ञासा दूर करने में वाल्मीकि ने तो कोई खास कोशिश नहीं की, लेकिन तुलसीदास ने रामचरित मानस में राम के मुंह से कहलवाया–

''अनुज वधु भगिनी सुत नारी.
सुनु सठ कन्या सम ए चारी,
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकई जोई,
ताहि बधें कछु पाप न होई.''

अर्थात – हे मूर्ख सुन, छोटे भाई की स्त्री, बहिन, पुत्र की स्त्री और कन्या – ये चारों समान हैं. इन्हें जो कोई बुरी दृष्टि से देखता है उसे मारने में कुछ भी पाप नहीं लगता है. **(किष्किन्धा कांड)**

साफ दिख रहा है कि राम को महिमामंडित करने की गरज से तुलसीदास ने रिश्तों, न्याय और नैतिकता की नई परिभाषा गढ़ दी, जिस से राम जो भी कहें और करें, वह एक आदर्श के रूप में स्थापित हो जाए, वरना हर कोई जानता है कि बालि की बुरी नजर सुग्रीव की पत्नी थी. दोनों में दुश्मनी की वजह उस को ही माना गया है.

बालि की पत्नी अप्सराओं जैसी सुंदर और विदुषी भी थी, जिस ने राम की

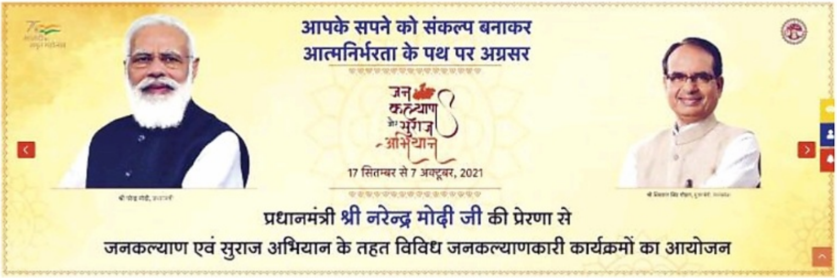
आपके सपने को संकल्प बनाकर
आत्मनिर्भरता के पथ पर अग्रसर
जन कल्याण से सुराज अभियान
17 सितम्बर से 7 अक्टूबर, 2021
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की प्रेरणा से
जनकल्याण एवं सुराज अभियान के तहत विविध जनकल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन

17 सितंबर, 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर देश और मध्य प्रदेश के अखबारों में विज्ञापन छपवा कर शिवराज सिंह ने उन्हें महिमामंडित कर अपनी कुरसी बचाने की जुगत लगाई है.

बाबत उसे आगाह भी किया था. मरने के बाद उस ने सुग्रीव से शादी कर ली थी या वैराग्य धारण कर लिया था, इसे ले कर कई विरोधाभास हैं, लेकिन इस प्रसंग से और मंदोदरी विभीषण की शादी से यह तो स्पष्ट हुआ था कि बड़े भाई की पत्नी तो भोग्या हो सकती है, लेकिन छोटे भाई की पत्नी पूज्या है.

यह अति तुलसीदास और अब आज के भाजपा कथावाचक ही कर सकते हैं. दोनों का मकसद राम को सही साबित करना है. यही थ्योरी मुख्यमंत्रियों को बदले जाने के मामले में लागू हो रही है कि गलत वे ही हैं.

भाजपा का तो एजेंडा ही नरेंद्र मोदी को इतना महिमामंडित कर देना है कि कोई उन के सहीगलत फैसलों पर न तो उंगली उठाए और न ही कोई तर्क करे. जैसे बालि ने राम के हाथों मरने पर उस को तरना बताया था, ठीक वैसे ही आज के येदियुरप्पा सरीखे बालि कर रहे हैं. वे तुलसी के राम से कोई सवाल नहीं करते कि हे नाथ, मुझे क्यों हटाया और वसवराज बोम्मई को क्यों सीएम की कुरसी पर बैठाया उलटे वे, सियासी तौर पर इसे मोक्ष मानते हैं.

अब यह और बात है कि येदियुरप्पा अपनी नई कर्नाटक यात्रा को ले कर मोदीशाह का सिरदर्द बन रहे हैं. अभी तक बोम्मई और उन में कोई बैर नहीं था, लेकिन अब होने लगा है.

कर्नाटक का मामला शांति से यानी बिना टूटफूट के सुलझ गया तो आलाकमान ने नजरें दूसरे राज्यों पर गड़ा दीं, जिस का नतीजा था बीती 14 सितंबर को मोदीशाह द्वारा हिमाचल प्रदेश के भाजपा मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर का अचानक दिल्ली तलब किया जाना जिस से लोग और चौंके थे कि अभी तो गुजरात का मामला भी पूरी तरह नहीं सुलटा है और एक और मुख्यमंत्री को बुला लिया गया.

सियासी हलकों में हैरानी इस बात को ले कर थी कि वे 2 दिनों पहले ही दिल्ली से लौटे थे. दोनों में क्या बात हुई यह तो वे दोनों ही जानें, लेकिन शिवराज सिंह की घबराहट बेवजह नहीं है, जिस पर भूपेंद्र सिंह के इशारे ने तो उन की नींद उड़ा दी है.

17 सितंबर को उन के बोले हर दूसरे वाक्य में नरेंद्र मोदी का नाम और काम वैसे ही आ रहा था जैसे अंधभक्तों के मुंह से रामराम निकलता रहता था. इस दिन उन्होंने नरेंद्र मोदी की तारीफ इतनी मात्रा

कर्नाटक और गुजरात का मसला निबटा नहीं था कि हिमाचल के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर को दिल्ली बुला कर डर का माहौल पैदा कर दिया गया.

में कर डाली जितनी कि रामचरित मानस में तुलसीदास ने भी राम की नहीं की होगी. मसलन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नए भारत का निर्माण हो रहा है, उन के नेतृत्व में मुझे कई आयामों को नजदीक से अनुभव करने का मौका मिला. आज मोदीजी के प्रधानमंत्री रहते हुए भारत पुनः समृद्धशाली, शक्तिशाली, वैभवशाली, संपन्न और सशक्त होने का गौरव प्राप्त कर रहा है और विकास के प्रकाश को संपूर्ण भारत में पहुंचाने के यज्ञ में मध्य प्रदेश भी कदम से कदम मिला कर चल रहा है वगैरह...

इस बाद उन्होंने भाजपा कार्यालय में मोदी की चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कहा कि सरकार चलाने वालो, सावधान हो जाओ. मैं न खाऊंगा, न खाने दूंगा. मोदीजी मैन औफ आइडियाज और विजिनरी लीडर हैं.

यों तो हर किसी ने नरेंद्र मोदी को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं, जिन में से अधिकांश ने राजनीतिक शिष्टाचार निभाया, लेकिन जिन मुख्यमंत्रियों पर कभी भी हटाए जाने की तलवार लटक रही है, वे कुछ ज्यादा ही भयभीत नजर आए.

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर ने कहा कि जिन मुद्दों पर पहले हम दूसरे देशों की तरफ देखते थे, आज आप ने उन कमियों को दूर कर देश को नई पहचान दी है. पूरी दुनिया ने तकनीक, चिकित्सा, शिक्षा और रक्षा के क्षेत्र में देश की प्रगति देखी है. मध्य प्रदेश की तर्ज पर हरियाणा में भी 20 दिवसीय जनसंपर्क अभियान सेवा और समर्पण के नाम से शुरू हो गया.

हिमाचल के जयराम ठाकुर ने इन दोनों से दौड़ में बराबरी की कोशिश में देवीदेवताओं से कामनाएं करते हुए नरेंद्र मोदी की तारीफ में लगभग वही शब्द कहे जो हर किसी ने घुमाफिरा कर कहे थे. मसलन, उन का गौरवशाली नेतृत्व... आत्मनिर्भर भारत की नींव रखने वाले... परिश्रमी, ईमानदार और दृढ़ संकल्प वाले...

मोदी... मोदी के माने

बात अकेले जन्मदिन की और सिर्फ मुख्यमंत्रियों की नहीं है, चापलूसी का न तो कोई मौका होता है और न ही मौसम, लेकिन एक दस्तूर जरूर है, जिसे फेरबदल में हटाए गए दिग्गज केंद्रीय मंत्रियों रविशंकर प्रसाद, डा. हर्षवर्धन, रमेश पोखरियाल निशंक', संतोष गंगवार और प्रकाश जावडेकर के चलता कर देने के बाद भी निभाते रहते हैं. प्रकाश जावडेकर ने तो मोदी के जन्मदिन पर इंग्लिश भाषा के अखबारों में उन को महिमामंडित करते एक लेख भी छपवा दिया. यह क्या है आस्था या डर, इस सवाल का जवाब बेहद साफ है कि यह सिर्फ और सिर्फ डर है, जिस की अपनी वजहें भी हैं.

गुजरात में विजय रूपाणी को हटा कर भूपेंद्र पटेल को लाने का मतलब क्या है? असल में न तो यह कर्नाटक की तरह जातिगत समीकरण साधने की कोशिश है और न ही इस के पीछे दूसरे कोई कारण हैं, जो राजनीतिक पंडित तरहतरह से गिना रहे हैं. यह दिखाने की असफल कोशिश की जा रही है कि जो कुछ उन के जन्मदिन पर उन की उपलब्धियों के बारे में कहा गया और वह गलत नहीं है और इस के लिए वे कुछ भी कल्पनीयअकल्पनीय करने और हर योग्यअयोग्य को हटाने का जोखिम उठा सकते हैं.

गुजरात में सत्ता विरोधी लहर के डर से मुख्यमंत्री विजय रूपाणी समेत उन के मंत्रिमंडल को हटा कर नए मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और उन के साथ 24 विधायकों को मंत्रीपद की शपथ दिला कर मोदीशाह की जोड़ी ने अन्य भाजपा मुख्यमंत्रियों की तरफ इशारा कर उन में भय पैदा कर दिया है.

जब उन्हें यह समझ आया कि जनता केंद्रीय मंत्रियों को हटाए जाने से खुश नहीं हुई तो उन्होंने उत्तराखंड के बाद गुजरात से मुख्यमंत्रियों की छंटाईसफाई शुरू कर दी, क्योंकि वे केंद्रीय मंत्रियों के मुकाबले सीधे जवाबदेह होते हैं. आसानी से मान लिया गया कि विजय रूपाणी कोरोना सहित दूसरे कई मसलों पर नाकाम रहे थे, इसलिए उन्हें हटा दिया गया.

यह मूल्यांकन अकेले नरेंद्र मोदी करते हैं और करते रहेंगे, जो लाख जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी को कोसते रहें, लेकिन राजनीतिक 'प्रेरणा' उन्हीं से ले रहे हैं, जिन की तूती कांग्रेस में आजादी के बाद से आज भी सोनिया और राहुल गांधी जैसे वारिसों की शक्ल में बोल रही है. ये सभी सिरे से असुरक्षित रहे हैं.

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा रबर स्टांप बन कर रह गए हैं, जिन का काम डेढ़ इंची मुसकान के साथ यह बताना भर रह गया है कि आज पार्टी में इसे शामिल किया गया और उसे हटाया गया.

इंदिरा गांधी को जबजब भी लगा कि जनता नाराज और नाखुश हो रही है तो उन्होंने कोई नया शिगूफा छेड़ दिया या किसी बड़े कांग्रेसी नेता को बाहर जाने को मजबूर कर दिया, जिस से फौरीतौर पर चर्चा हुई और हल्ला भी मचा कि कुछ हो रहा है. इस चालाकी में तब मीडिया उसी तरह उन के साथ होता था, जैसे आज नरेंद्र मोदी के साथ है.

जैसे उस से पहले जवाहरलाल नेहरू के कामराज प्लान से बहुतों को बाहर निकाल फेंक दिा था जिन में बाद में प्रधानमंत्री बने. लाल बहादुर शास्त्री भी शामिल थे. इंदिरा गांधी के इस मूड से कांग्रेसी डरे रहते थे तो आज भाजपाई नरेंद्र

मोदी से डरे हुए हैं. अगर वे न डरे होते तो इतनी प्रीति वे भी न दिखाते. इस डर की व्याख्या दिग्गज और नरेंद्र मोदी से अपेक्षाकृत कम डरने और कम लिहाज करने वाले केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने गुजरात के फेरबदल के तुरंत बाद राजस्थान सरकार के एक वैबिनार में बड़े सटीक और बिंदास तरीके से की थी, 'नानक दुखिया सब संसार...' नेता दुखी रहते हैं. विधायक इसलिए दुखी हैं कि वे मंत्री नहीं बन पा रहे हैं, मंत्री इसलिए दुखी हैं कि उन्हें अच्छा विभाग नहीं मिल पा रहा है. जिन मंत्रियों को अच्छा विभाग मिला, वे इसलिए दुखी हैं कि मुख्यमंत्री नहीं बन पाए और मुख्यमंत्री इसलिए दुखी रहते हैं कि उन्हें पता नहीं रहता कि वे कब तक पद पर रहेंगे. इस तरह के दुखों पर बुद्ध के बाद गुरुनानक ने बहुत सोचसमझ कर कहा था कि नानक दुखिया सब संसार...

अपने दौर के मशहूर व्यंग्यकार शरद जोशी के एक व्यंग का हवाला देते हुए नितिन गडकरी ने यह भी जोड़ा था कि जो राज्यों में काम के नहीं थे उन्हें दिल्ली भेज दिया, जो दिल्ली में काम के नहीं थे उन्हें राज्यपाल बना दिया और जो वहां भी काम के न थे उन्हें राजदूत बना दिया.

ये बातें तब कही गई थीं जब गुजरात यानी भूपेंद्र पटेल मंत्रिमंडल बना नहीं था. अगर उस के बाद कही जातीं तो तय है गडकरी कहते, जो किसी काम के नहीं थे उन्हें मंत्री और मुख्यमंत्री तक बना दिया गया. गौरतलब है कि गुजरात के 24 मंत्रियों में से 12 मंत्रियों ने कालेज का मुंह भी नहीं देखा. इन में से भी तीन 12वीं, पांच 10वीं, तीन 8वीं पास हैं. एक मंत्रीजी तो सिर्फ चौथी क्लास तक ही पढ़े हैं. 2 मंत्री अंडरग्रेजुएट हैं. केवल 9 ही ग्रेजुएट हैं.

गुजरात नरेंद्र मोदी का गृहप्रदेश है. लिहाजा, पूरे मंत्री बदले जाने के इस अनूठे 'प्रयोग' पर कोई चूं भी नहीं कर पा रहा. शिवराज सिंह जैसे भाजपाई मुख्यमंत्रियों का डर इसी बात को ले कर है कि अगर कल को वे भी चलता कर दिए गए तो पत्ता भी नहीं हिलने वाला. उलटे, प्रचार यह होगा कि वे कोरोना पर असफल थे, राज्य में भ्रष्टाचार बढ़ रहा था, खुद पार्टी के कुछ बड़े नेता उन से असंतुष्ट थे आदि. यह सब कहा नहीं जाएगा, बल्कि कहा जाने लगा है, इसलिए वे दुखी हैं और डरे हुए भी हैं.

भाजपा के अध्यक्ष जेपी नड्डा नेताओं को इधरउधर करने में लगे रहते हैं, वे मात्र रबड़ स्टांप बन कर रह गए हैं.

लेकिन उस से भी बड़ा दुख यह कि अब जाएं तो जाएं कहां? भाजपा में चारों तरफ मोदी ही मोदी हैं, इसलिए उन्हें मोदी भजन में ही सुरक्षा दिख रही है, ठीक वैसे ही जैसे आम भक्तों को भगवान में दिखती है. जिन्हें रटा दिया गया है कि वह ही दुख देता है और पूजाअर्चना करने पर उन्हें दूर भी कर देता है, इसलिए यह मत पूछो कि हे प्रभु, मुझे कष्ट क्यों दिए, बल्कि यह प्रार्थना करो कि दे दिए तो दे दिए, अब मैं पापी तुम्हारी शरण में हूं,

गुनाह इन का, सजा उन को

पश्चिम बंगाल का नजारा देख नरेंद्र मोदी और उन के लक्ष्मण अमित शाह भी इंदिरा गांधी की तरह घबराए हुए हैं, क्योंकि कांग्रेस भी कभी इसी तरह टूटना शुरू हुई थी. दूसरे, कोरोना कहर के बाद देशभर के लोग सरकार से नाखुश हैं. पिछले एक सवा साल से कुछ भक्तों को छोड़ रोजगार, महंगाई और स्वास्थ्य सहित शिक्षा सेवाओं और नीतियों को ले कर लोग सोचने और सवाल पूछने भी लगे हैं. उत्तर प्रदेश के चुनावी माहौल में इन सवालों के कोई संतोषजनक जवाब सरकार के पास नहीं. लिहाजा, भाजपा की हालत खस्ता है, जिस की हर मुमकिन कोशिश कराहती व निरीह जनता को राम, धर्म और जातियों में उलझाए रखने की है, लेकिन इस में भी पश्चिम बंगाल का नतीजा और बाद के हालात आड़े आ रहे हैं.

इसलिए अब मुख्यमंत्रियों को बदलने से यह जताने की कोशिश की जा रही है कि नाकाम केंद्र सरकार नहीं, बल्कि राज्य सरकारें हैं. इस में भी एक बड़ी दिक्कत उत्तर प्रदेश में अंदरूनी तौर पर उठता यह सवाल है कि फिर योगी आदित्यनाथ को क्यों नहीं बदला गया. क्या गंगा में बहती लाशें कामयाबी का प्रतीक थीं या वहां बेरोजगारी कम या खत्म हो गई है या फिर महंगाई की मार नहीं पड़ रही है. इन और ऐसे दर्जनों सवालों का जवाब राम, अयोध्या या मथुराकाशी तो कतई सभी के लिए नहीं हैं. 10 फीसदी सवर्णों को छोड़ कोई इस से संतुष्ट नहीं.

इस से भी अहम दूसरी बात यह है कि वर्ष 2024 के मद्देनजर मोदीशाह अपने वर्चस्व के लिए कोई जोखिम और चुनौती नहीं चाहते हैं, इसलिए नए और नातजरबेकार मुख्यमंत्रियों को मौका दे कर एक तीर से दो शिकार कर रहे हैं. पहला यह कि भाजपा की दूसरी पंक्ति को इतना डरा दो कि कोई सिर ही न उठाए और दूसरा यह कि हम ने तो बदलाव जनता के भले के लिए किए थे, इसलिए इन नयों को एक मौका और राज्य चुनावों में दिया जाए, जिस से ये खुद को साबित कर सकें. यह तो इन का ट्रेनिंग पीरियड था.

इन्हें दूर करो. यही शिवराज सिंह और उन जैसे मुख्यमंत्री कर रहे हैं कि भक्ति इतनी करो कि ठुकराए जाने के बाद भी मन में कोई गिल्ट न रहे और भक्ति कहीं अभक्ति में न बदल जाए.

प्रसंगवश एक दिलचस्प बात यह जान लेना भी जरूरी है कि मोदी को प्रधानमंत्री बनाया भी इन्हीं मुख्यमंत्रियों और नेताओं ने है. साल 2013 और 14 की शुरुआत में शिवराज सिंह प्रधानमंत्री पद की दौड़ में मोदी की बराबरी से थे, लेकिन अब वे भी उन्हें अवतार कहने लगे हैं तो उन पर और उन जैसों की हीनता पर तरस आना स्वाभाविक बात है.

नितिन गडकरी ने एक और ज्ञान की बात यह कही थी कि वे चूंकि भविष्य की चिंता नहीं करते, इसलिए खुश रहते हैं. अब शिवराज सिंह जैसों को भविष्य की चिंता खाए जा रही है तो वे दुखी हो रहे हैं और इस दुख को दूर करने के लिए भी भक्ति से मोदी को खुश करने की कोशिश कर रहे हैं. मोदी किस से खुश हुए और किस से नहीं, यह भी जल्द ही साफ हो जाना है. ●

कैप्टन हुए आउट चन्नी नए कप्तान

• नसीम अंसारी कोचर

पटियाला राजघराने से ताल्लुक रखने वाले कैप्टन अमरिंदर सिंह ने जब दूसरी बार 2017 में पंजाब की कमान संभाली थी तो चंडीगढ़ के मुख्यमंत्री आवास से ले कर पटियाला के महल तक रंगगुलाल उड़ा था कि जैसे फागुन झूम उठा हो. ढोलनगाड़ों की आवाजें और झूमतीनाचती पगड़ियों के साथ पंजाब की जनता ने अपने नए सरदार का इस्तकबाल किया था. 'चाउंदा है पंजाब, कैप्टन दी सरकार' नारे ने 'हरहर मोदी, घरघर मोदी' के नारे को ध्वस्त किया और तत्कालीन सत्ताधारी शिअद-भाजपा को घुटने टेकने पर मजूबर कर दिया.

पंजाब में सब ठीक चल रहा था जब तक नवजोत सिंह सिद्धू ने कांग्रेस जौइन नहीं की थी. सिद्धू ने पार्टी में आते ही कप्तान की कुरसी हिलानी शुरू कर दी. बेबाक अंदाज वाले सिद्धू राहुल और प्रियंका वाड्रा की पसंद थे. पार्टी जीती तो सिद्धू को डिप्टी सीएम बनाने की चर्चाएं तेज हो गईं. लेकिन कैप्टन ने साफ कह दिया कि पंजाब को डिप्टी सीएम की जरूरत नहीं है.

> अपमान का बोझ लिए पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह जब इस्तीफा देने गवर्नर हाउस पहुंचे तो उस वक्त उन के साथ पत्नी परनीत कौर भी मौजूद थीं. राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित को इस्तीफा सौंपने के बाद कैप्टन अमरिंदर सिंह ने खुल कर कांग्रेस आलाकमान से अपनी नाराजगी जाहिर की.

अतिमहत्त्वाकांक्षी सिद्धू के लिए यह नाक का सवाल बन गया. फिर उन की पत्नी को चुनाव में टिकट न मिलने से वे और नाराज हो गए. बीते 6 महीने में दिल्ली आ कर उन्होंने राहुलप्रियंका के साथ कई मीटिंगें कीं, दबाव बनाया. उन के इस तांडव ने अमरिंदर सिंह के प्रति आलाकमान के रवैए में भी तल्खी ला दी और शक, सवाल व अपमान से परेशान आखिरकार अमरिंदर को इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा.

अपमान का बोझ लिए अमरिंदर सिंह जब इस्तीफा देने गवर्नर हाउस पहुंचे तो उस वक्त उन के साथ पत्नी परनीत कौर भी मौजूद थीं. कैप्टन अमरिंदर सिंह की पत्नी परनीत कौर भी राजनेता हैं और मनमोहन सिंह सरकार में भारत की विदेश राज्यमंत्री रह चुकी हैं. राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित को इस्तीफा सौंपने के बाद कैप्टन अमरिंदर सिंह ने खुल कर कांग्रेस आलाकमान से अपनी नाराजगी जाहिर की.

उन्होंने कहा, **'मैं ने आज सुबह ही इस्तीफा देने का फैसला कर लिया था. बीते एक महीने में जिस तरह से 3 बार विधायकों की मीटिंग दिल्ली और पंजाब में बुलाई गई थी, उस से साफ था कि आलाकमान को मुझ पर संदेह है. ऐसे में मैं ने पद से इस्तीफा दे दिया है और पार्टी अब जिसे चाहे सीएम बना सकती है. मेरे लिए भविष्य की राजनीति के विकल्प खुले हैं.**

सोनिया गांधी की पसंद थे अमरिंदर

2017 में कैप्टन अमरिंदर सिंह का मुख्यमंत्री बनना, हालांकि कांग्रेस के कुछ आला नेताओं को नापसंद गुजरा था, मगर उन की नाराजगी को नजरअंदाज कर के कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी की सहमति उन के ही पक्ष में बनी थी. आखिर बनती भी क्यों न, कैप्टन अमरिंदर सिंह को राजनीति में लाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी से अमरिंदर सिंह की दोस्ती स्कूल के जमाने की थी और कैप्टन गांधीनेहरू परिवार के खासे करीबी माने जाते हैं.

सियासत उन के खून में थी तो जनता का दिल जीतने की कला भी उन्हें आती थी. यही वजह रही कि पंजाब की जनता ने उन्हें सिरआंखों पर बिठाया.

अरुण जेटली को दी थी जबरदस्त पटखनी

अमरिंदर सिंह पहली बार 1980 में कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव जीते थे. भाजपा के दिग्गज नेता अरुण जेटली को कैप्टन ने कड़ी शिकस्त दी और सूबे की सियासत में कांग्रेस का मजबूत चेहरा बन कर उभरे थे. यही वजह रही कि राहुल गांधी के नेतृत्व पर उंगली उठाने के बावजूद कांग्रेस

पंजाब में दलित मुख्यमंत्री

कांग्रेस ने पंजाब में मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर से इस्तीफा ले कर चरणजीत सिंह चन्नी को मुख्यमंत्री बना दिया है. चरणजीत सिंह चन्नी पंजाब के पहले दलित मुख्यमंत्री बने हैं. वे अमरिंदर सरकार में तकनीकी शिक्षा और औद्योगिक प्रशिक्षण मंत्री थे. 58 साल के चन्नी अमरिंदर सिंह के प्रबल विरोधी रहे हैं. चन्नी 3 बार विधायक बन चुके हैं. 2007 में वे निर्दलीय विधायक बने थे. इस के बाद 2012 और 2017 में वे कांग्रेस के टिकट पर चुनाव जीते थे.

चन्नी ने अपने कैरियर की शुरुआत पिता के टैंट कारोबार से की थी. इस के बाद वे पार्षद का चुनाव लड़े. फिर विधायक बने. 2015-16 में वे विधानसभा में विपक्ष के नेता बने. पंजाब की राजनीति में चन्नी ने अपनी जगह बनाई. अपनी मेहनत से वे पंजाब के मुख्यमंत्री की कुरसी पर बैठने में सफल हुए. आज वे पंजाब में कांग्रेस का चेहरा बन गए हैं.

पंजाब में करीब 32 फीसदी दलित वोटर हैं. देश में सब से अधिक दलित आबादी अनुपात के हिसाब से पंजाब में है. बाबा साहब अंबेडकर के बाद सब से प्रमुख दलित चिंतक और नेता कांशीराम पंजाब के ही रहने वाले थे. पंजाब के विधानसभा चुनाव में दलित सब से प्रमुख फैक्टर हैं.

गौरतलब है कि पंजाब और उत्तर प्रदेश दोनों ही प्रदेशों के विधानसभा चुनाव 2022 में हैं. पंजाब में 79 साल के कैप्टन अमरिंदर सिंह के खिलाफ कांग्रेस में बगावत चल रही थी. ऐसे में कांग्रेस अगर उन की अगुआई में चुनाव लड़ती तो हार जाती. साथ ही, कैप्टन अमरिंदर उम्र के जिस मोड़ पर हैं वहां अब आगे उन को ले जाना संभव नहीं था.

RAJ VEHICLES (P) LTD.
PATIALA - SANGRUR - BARNALA : PH. 9878866006, 92165090..

फौज की नौकरी छोड़ पंजाब की राजनीति में आए कैप्टन अमरिंदर सिंह ने कांग्रेस में रहते हुए चुनाव में अरुण जेटली जैसे दिग्गज नेता को हरा कर पार्टी में अपनी पहचान बनाई.

आलाकमान ने उन्हें पंजाब में कांग्रेस का फिर से कैप्टन बना दिया. खास बात यह रही कि इस के लिए उस शख्स को हटाया गया जो राहुल गांधी की खास पसंद थे - प्रताप सिंह बाजवा.

कांग्रेस के साथ कभी हां कभी न

कैप्टन और राजीव गांधी की दोस्ती स्कूल के जमाने से थी. वे गांधी परिवार के खासमखास थे. मगर वर्ष 1984 में जब पंजाब में आतंकियों के खात्मे के लिए पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने औपरेशन ब्लूस्टार को हरी झंडी दी और स्वर्णमंदिर में पुलिस घुसी तो अमरिंदर सिंह ने इस का तीखा विरोध करते हुए लोकसभा और कांग्रेस दोनों की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया.

इस के बाद उन्होंने शिरोमणि अकाली दल की सदस्यता ले ली. पंजाब विधानसभा चुनाव लड़ा और राज्य सरकार में मंत्री बन गए. मगर 1992 में उन का अकाली दल से भी मोहभंग हो गया और उन्होंने शिरोमणि अकाली दल (पी) के नाम से अपनी नई पार्टी बना ली. लेकिन अगले विधानसभा चुनाव में उन की पार्टी की करारी हार हुई और कैप्टन अमरिंदर सिंह को मात्र 856 वोट ही हासिल हुए.

इस शिकस्त ने कैप्टन को बड़ा निराश किया, जिस के चलते वर्ष 1998 में अमरिंदर ने घर वापसी की और पार्टी सहित कांगेस में शामिल हो गए. इस के बाद अमरिंदर सिंह 1999 से 2002 और 2010 से 2013 तक पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे और इसी बीच वर्ष 2002 से 2007 तक प्रदेश के मुख्यमंत्री बने.

कैप्टन की जबरदस्त रैलियों ने 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को पंजाब में स्पष्ट बहुमत दिलाया. पंजाब में 10 वर्षों बाद कांग्रेस को अपने नेतृत्व में जीत दिलाने वाले कैप्टन अमरिंदर सिंह ने राज्य के 26वें मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली थी.

सेना से रहा जुड़ाव

अमरिंदर सिंह ने नैशनल डिफैंस एकेडमी और इंडियन मिलिट्री एकेडमी में पढ़ाई करने के बाद वर्ष 1963 में भारतीय सेना जौइन की थी. उन्हें दूसरी बटालियन सिख रेजीमैंट में तैनात किया गया था. इसी रेजीमैंट में उन के पिता एवं दादा ने भी सेवाएं दी थीं. सेना में उन का कैरियर छोटा रहा. जब अमरिंदर के पिता राजा यादविंदर

सिंह को इटली का राजदूत नियुक्त किया गया था, उस वक्त अमरिंदर फौज में थे, मगर 1965 के शुरुआती दिनों में उन्हें इस्तीफा देना पड़ा क्योंकि घर पर उन की आवश्यकता थी.

हालांकि, पाकिस्तान के साथ युद्ध छिड़ने के तत्काल बाद वे फिर सेना में शामिल हो गए और युद्ध अभियानों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया. वर्ष 1965 में अमरिंदर भारतपाकिस्तान युद्ध में बतौर कैप्टन लड़े. युद्ध समाप्त होने के बाद 1966 की शुरुआत में उन्होंने फौज से फिर इस्तीफा दे दिया.

नवजोत सिंह सिद्धू का पाकिस्तान जा कर इमरान खान से मिलना और बाजवा के साथ गले लगना कप्तान ने देश के लिए खतरा बताया.

सिद्धू के पाकिस्तान प्रेम से नाराज कप्तान

पाकिस्तान और वहां के प्रधानमंत्री इमरान खान के प्रति नवजोत सिंह सिद्धू का प्यार अमरिंदर की आंख की किरकिरी बना हुआ है. पंजाब का बड़ा हिस्सा पाकिस्तान से लगा हुआ है. ड्रग्स और हथियार की सप्लाई वहां से होती है. अमरिंदर का कहना है अगर सिद्धू मुख्यमंत्री बनते हैं तो देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी. बिना लागलपेट, ठीक भाजपा की तरह, कैप्टन अमरिंदर ने सिद्धू के पाकिस्तानी कनैक्शन की बात कह डाली है.

उन्होंने साफ कहा है कि अगले विधानसभा चुनाव में अगर सिद्धू को कांग्रेस सीएम का चेहरा बनाती है तो वे खुल कर विरोध करेंगे. उन्होंने इसे राष्ट्रीय सुरक्षा का मसला बताया है. कैप्टन अमरिंदर ने दावा किया है कि सिद्धू की न केवल पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान से अच्छी दोस्ती है, बल्कि पाक सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा से उन के संबंध हैं.

सोनिया गांधी ने क्यों फेरी नजर

कैप्टन अमरिंदर सिंह के नेतृत्व में दोढाई साल तो पंजाब का शासन बढ़िया चला मगर बीते डेढ़ साल का समय अमरिंदर के लिए अच्छा नहीं रहा. नवजोत सिंह सिद्धू के आने के बाद तो पंजाब की समस्याएं दिल्ली के कानों तक गूंजने लगीं. कोविड महामारी और उस के बाद लौकडाउन की वजहों से जनता को काफी परेशानी हुई. सरकार ने कुछ साहसिक कदम तो उठाए मगर उन में भी कुछ की अन्य राजनीतिक दलों द्वारा काफी आलोचना हुई.

पंजाब में विभिन्न स्तरों पर भ्रष्टाचार और भाईभतीजावाद भी हाल के दिनों में बढ़ा है. पिछले कुछ वर्षों में विपक्ष ने राज्य के शीर्ष मंत्रियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के खूब आरोप लगाए हैं जिन को कैप्टन हैंडल नहीं कर पाए. हाल ही में अमृतसर में हथियारों और विस्फोटकों की

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने पार्टी में हो रही गुटबाजी और पार्टी टूटने के डर से कैप्टन अमरिंदर सिंह को इस्तीफा देने पर मजबूर किया.

आवाजाही भी सामने आई और विपक्ष ने पंजाब में बिगड़ती कानून व्यवस्था को ले कर कैप्टन को घेरा.

पंजाब में बेअदबी की घटनाएं न तो बादल सरकार में बंद हुईं और न ही अमरिंदर सरकार में. अमरिंदर द्वारा बरगाड़ी कांड के आरोपियों पर कार्रवाई नहीं करने और बारबार जांच समितियों का गठन करने को ले कर कांग्रेस के कई विधायक व मंत्री लंबे समय से उन्हें घेर रहे थे. पंजाब में पिछले चुनाव के दौरान खनन का मुद्दा भी अहम रहा है. अकालियों को इस मुद्दे पर घेरने वाले अमरिंदर भी प्रदेश को खनन से मुक्ति नहीं दिला सके. अलबत्ता पिछले साढ़े 4 साल के दौरान अमरिंदर गुट के कई विधायकों पर भी अवैध खनन के आरोप लगे.

अमरिंदर कई मौकों पर पुलिस महानिदेशक, मुख्य सचिव जैसे पदों पर नियुक्तियां कर के विवादों में घिरे रहे. अमरिंदर सिंह ने सेवानिवृत्त आईएएस को अपना मुख्य प्रधान सचिव नियुक्त किया. विवाद होने पर उन्होंने 2 बार इस्तीफा भी दिया, लेकिन अमरिंदर उन्हें फिर से अपने साथ ले आए. अमरिंदर ने सरकारी आवास से भी दूरी बना कर रखी. आम जनता से मुलाकात तो बहुत दूर की बात है. सिसवां फार्म हाउस में मुलाकात के लिए जाने वाले विधायक और मंत्री भी कई बार मायूस हो कर लौटे हैं.

ये सारी बातें सोनिया गांधी के कानों तक पहुंचाई गईं जिस के चलते उन्होंने कैप्टन अमरिंदर सिंह को दिल्ली भी तलब किया था. पंजाब में विधानसभा चुनाव में सिर्फ 5 महीने बचे हैं, ऐसे में अपने ही विधायकों की नाराजगी और विपक्षी आरोपों से बुरी तरह घिरे कैप्टन को गद्दी से उतरने का इशारा हो गया.

एक लाइन पर अमरिंदर और भाजपा

पाकिस्तान के प्रति कांग्रेस सहित उस के कई नेताओं का रुख भाजपा जितना आक्रामक नहीं है. अगर अमरिंदर कांग्रेस का विरोध नहीं करते थे तो यह भी सच है कि उन के विचार पार्टी के साथ मेल भी नहीं खाते थे. कैप्टन अमरिंदर सिंह पाकिस्तान के साथ 1965 की जंग में खुद शामिल थे. सेना के मसलों में उन की संवेदनशीलता साफ छलक आती है. यही वजह है कि नवजोत सिंह सिद्धू के पाकिस्तान प्रेम पर वे भड़क उठते हैं.

पाकिस्तान को ले कर भाजपा का स्टैंड भी बिलकुल क्लीयर रहा है. वह पाकिस्तान को आतंक फैलाने की फैक्ट्री की तरह देखता है. इस मामले में अमरिंदर का रुख भी आक्रामक रहा है. वे राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े किसी भी मसले पर सौफ्ट स्टैंड लेते नहीं दिखे हैं. यही बात उन्हें भाजपा के करीब ला देती है. ●

उत्पीड़न

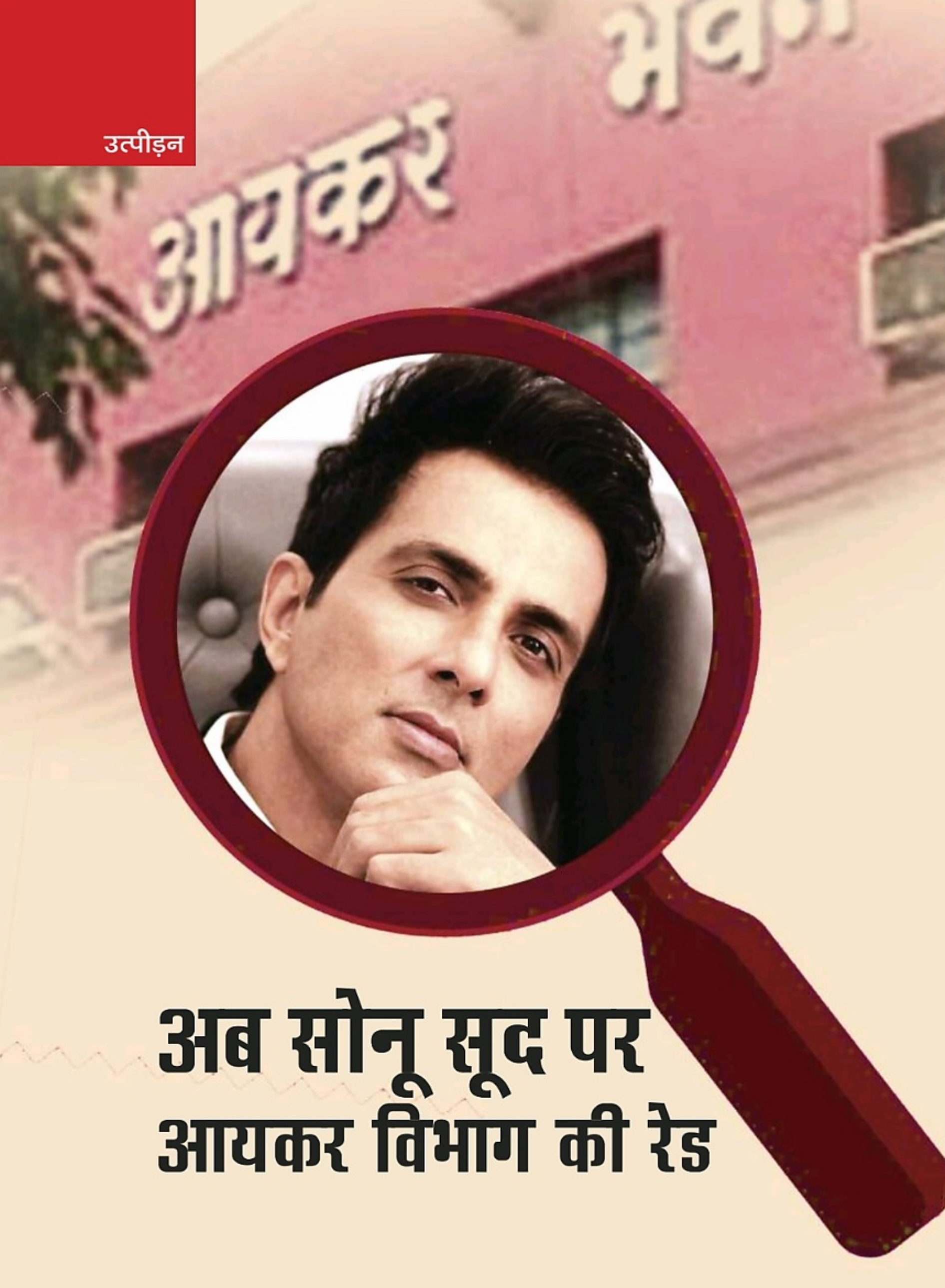

अब सोनू सूद पर आयकर विभाग की रेड

ऐसा पहली बार नहीं है कि सत्ता को उस की खामियों का एहसास कराने वाले किसी व्यक्ति को जांच एजेंसियों के उत्पीड़न से गुजरना पड़ा हो. हर्ष मंदर, यूथ कांग्रेस के श्रीनिवास बीवी, सिद्दीक कप्पन जैसे बहुतेरे नाम हैं.

हर्ष मंदर

श्रीनिवास बीवी

सिद्दीक कप्पन

कोरोनाकाल में लौकडाउन लगने पर महानगरों और अन्य शहरों से पैदल ही अपने गांवकसबों की तरफ पलायन करने के लिए मजबूर लाखों प्रवासी मजदूरों के लिए अभिनेता सोनू सूद मदद के लिए सड़कों पर उतरे थे और उन्हें उन के गंतव्य तक पहुंचाने में मदद की थी.

उन्होंने कई लोगों के रहने और खाने के साथ काम का भी इंतजाम किया था. प्रवासी मजदूरों को घरवापसी कराने के अभियान के तहत उन्होंने नीति गोयल के साथ मिल कर 75 हजार प्रवासी मजदूरों को अपने घर भिजवाया, लौटवाया. इन में ओडिशा, असम, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और उत्तराखंड के प्रवासी मजदूर थे. इस के अलावा बड़ी संख्या में दक्षिण भारत के प्रवासी मजदूरों को भी भेजा गया. इतना ही नहीं, प्रवासी मजदूरों के सामने रोजगार की समस्या खड़ी हुई तो उन्हें रोजगार दिलाने के लिए प्रवासी रोजगार ऐप भी शुरू किया था.

उन दिनों अखबारों के पन्ने, टीवी चैनलों के स्क्रीन सोनू सूद की तारीफों से पट गए थे. कौन ऐसा होगा जिस ने सोनू सूद की तारीफ न की होगी, चाहे वह पक्ष हो या विपक्ष.

सोनू सूद की दरियादिली और गरीबों के प्रति उन की भावनाओं के चर्चे इस कदर हुए कि कुछ राजनीतिक पार्टियों ने, जिन में भाजपा भी शामिल थी, उन को राजनीति में आने का औफर दिया. उन्हें राज्यसभा सीट पर भेजने की बातें हुईं, मगर सोनू सूद ने मना कर दिया और अपनी समाजसेवी संस्था के माध्यम से जनता की सेवा में लगे रहे.

पिछले दिनों वे दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के साथ एक मंच पर नजर आए. सूद को अरविंद केजरीवाल की अगुआई वाली दिल्ली सरकार ने 'देश के मेंटोर' कार्यक्रम का ब्रैंड एंबेसडर बनाया है. इस कार्यक्रम के जरिए स्कूली बच्चों को भविष्य के बारे में मार्गदर्शन दिया जाएगा. इसी की घोषणा के समय वे

अरविंद केजरीवाल के साथ बैठे मीडिया के कैमरों में कैद हुए. फिर क्या था, सोनू सूद को केजरीवाल के साथ देख कर राजनीतिक पार्टियों में हलचल मच गई.

सोनू सूद की पैदाइश पंजाब के मोगा जिले की है. 5 महीने बाद पंजाब में विधानसभा चुनाव होने हैं. ऐसे में केजरीवाल के साथ सोनू सूद की मुलाकात भाजपा के लिए बड़े खतरे की घंटी बन गई क्योंकि अगर केजरीवाल को सोनू सूद का साथ मिल गया तो पंजाब में उन की पार्टी की हालत सुधर सकती है. सो, जैसे ही सोनू सत्ता के लिए खतरा बनते दिखे, सत्ता ने अपने खतरे को निबटाना शुरू कर दिया और सोनू सूद के घर, दफ्तर, एनजीओ सब जगह आयकर विभाग के छापे पड़ने लगे.

आयकर विभाग ने उन के मुंबई, लखनऊ, कानपुर, जयपुर, दिल्ली और गुरुग्राम सहित 28 ठिकानों पर 3 दिनों की रेड के बाद 20 करोड़ की टैक्स चोरी का आरोप लगाया. अधिकरियों ने कहा, **''जांच में सामने आया है कि सोनू सूद ने विदेशी डोनर्स से 2.1 करोड़ की नौन-प्रौफिट फंडिंग जुटाई, जो इस तरह के लेनदेन को नियंत्रित करने वाले कानून का उल्लंघन है. तलाशी के दौरान 1.8 करोड़ रुपए की नकदी जब्त की गई है और 11 लौकरों पर प्रतिबंध लगाए गए हैं.''**

सोनू सूद पर इस रेड के बाद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट किया-

'सचाई के रास्ते पर लाखों मुश्किलें आती हैं, लेकिन जीत हमेशा सचाई की ही होती है.

@SonuSood जी के साथ भारत के उन लाखों परिवारों की दुआएं हैं जिन्हें मुश्किल घड़ी में सोनूजी का साथ मिला था.'

केआरके यानी कमाल राशिद खान, जो अदाकारी से ज्यादा अपनी चुटीली टिप्पणियों के लिए मशहूर हैं- ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल से किए गए ट्वीट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चहेते कलाकार अक्षय कुमार पर अप्रत्यक्ष निशाना साधते हुए लिखा, **'भाई, सोनू सूद की गलती यह है कि उन्होंने मोदीजी का इंटरव्यू नहीं किया. मोदीजी से यह नहीं पूछा कि वे आम कैसे खाते हैं. काट कर या चूस कर. अगर यह पूछ लिया होता तो फिर लंदन, कनाडा में कितना भी माल पार कर देते, कोई दिक्कत ही नहीं थी.'**

कमाल खान

सोशल मीडिया पर विजय कुमार नाम के एक यूजर ने लिखा, **'सरकार को इस बात का गुस्सा भी है कि जब सोनू सूद लोगों की मदद कर रहे थे तब सरकार मदद करने के बजाय अपना झोला भरने के लिए दान मांग रही थी. जब सरकार ने कोई मदद नहीं की, तो सोनू सूद ने मदद क्यों की?'**

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के साथ सोनू सूद को देख भाजपा अपने लिए खतरा महसूस करने लगी.

कुल जमा यह कि इधर सोनू सूद पर आयकर विभाग की कार्रवाई शुरू हुई और उधर जनता ने सरकार को ट्रोल करना शुरू कर दिया. ऐसा इस देश में पहली बार देखने को मिला.

इंतेखाब नाम के यूजर लिखते हैं, **'सभी को पता है कि जो काम सरकार को करना था वह सोनू सूद ने किया. बस, उसी का बदला लिया जा रहा है.'**

जानेमाने पत्रकार और ब्लौगर यूसुफ किरमानी अपनी बात बड़ी तफ्सील से रखते हैं. वे लिखते हैं- **'विदेशी फंड पर दोहरा मापदंड क्यों? सीबीडीटी (सैंट्रल बोर्ड औफ डायरैक्ट टैक्सेज) यानी इनकम टैक्स विभाग ने कहा है कि सोनू सूद ने 20 करोड़ रुपए की टैक्स चोरी की है. इस में विदेश से सोनू सूद को प्रवासी मजदूरों और गरीबों के लिए भेजे गए 2.1 करोड़ रुपए का फंड भी शामिल है.**

सवाल है कि भाजपा, आरएसएस, वीएचपी, विवेकानंद फाउंडेशन को विदेश से जो फंड आता है, उस की जांच कौन करेगा? कब होगी यह जांच? सरकार चलाने वाली पार्टी और उस के संगठन पहले अपने गिरेबान में तो झांकें.

इस छापामारी पर सोनू सूद ने बड़ी शालीनता से अपना पक्ष रखते हुए कहा है- **'जब आईटी औफिसर आए थे तो मैं ने उन से कहा कि आप जब भी जाएंगे, एक अलग अनुभव ले कर जाएंगे. सभी औफिसर ने देखा है, घर के नीचे मदद मांगने वाले लोग खड़े रहते हैं. उन को छापे की कार्रवाई में जो डौक्युमैंट्स मिले हैं वे किडनी, लिवर ट्रांसप्लांट के ही मिले हैं.'**

सोनू सूद कहते हैं, **''जिन लोगों ने मुझे पैसा दिया, मेरी सब से बड़ी जिम्मेदारी थी कि उस पैसे को सही जगह पर खर्च करना है. मैं जितने ब्रैंड के ऐड करता हूं उन से कहता हूं कि कोशिश करें कि आप उस का मेजर अमाउंट फाउंडेशन में दें ताकि हम लोगों की मदद कर सकें. कई हौस्पिटलों में मेरे पैसे पड़े हुए थे, जिन से मैं कह देता था कि मैं मरीज भेजूंगा, आप एडमिट कर लेना और हम ने बहुत मरीजों को उन अस्पतालों में भेजा है.''**

सोनू सूद ने विजयवाड़ा के बच्चों के दिए हुए पिगी बैंक भी मीडिया को दिखाए. जिन से अभी एक रुपया भी खर्च नहीं हुआ है. सूद का कहना है कि ये सालों से पड़ा हुआ पैसा नहीं है, बल्कि यह वह पैसा है जो पिछले 3 या 4 महीनों में आया है. हम ने 2 करोड़ रुपया खर्च किया है, यह आयकर विभाग ने मीडिया को सही बताया. लेकिन अगर किसी के पास पैसा आता है तो उसे सही काम में खर्चने में टाइम लगता है. मेरे साथ देश के वे लोग जुड़े हैं जिन्हें यह विश्वास है कि वे ऐसे आदमी हैं जो उन की सोच को सही लोगों की मदद तक पहुंचाएगा.

ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि सत्ता को उस की खामियों का एहसास कराने वाले किसी व्यक्ति को जांच एजेंसियों के जरिए उत्पीड़ित किया गया. इस से पहले हर्ष मंदर, यूथ कांग्रेस के श्रीनिवास बीवी, सिद्दीक कप्पन जैसे न जाने कितने नाम हैं, जिन्होंने जबजब सरकार को चेताने की कोशिश की, उन पर पुलिस और जांच एजेंसियों की गाज गिरी. विरोधी विचार रखने वाले लोगों को डराने और अगर मुमकिन हो तो उन का मुंह बंद कराने के लिए उन के पीछे सरकारी एजेंसियों को छोड़ देने जैसा दमनकारी कदम उठाने का चलन भाजपा सरकार में खूब है.

-नसीम ●

भारत भूमि युगे युगे

महानता और नग्नता

75 वर्षीय ह्रदयनारायण दीक्षित अपने दौर के औसत पत्रकार और साहित्यकार रहे हैं. राजनीति में आ कर अधिकतम उपलब्धि की शक्ल में उत्तर प्रदेश विधानसभा का पद उन्हें मिल चुका है. उन्नाव जिले के बांगरमऊ कसबे में वे जरूरत से ज्यादा बहक कर बोल गए कि अगर कम कपड़े पहनने से कोई महान बनता होता तो राखी सावंत गांधीजी से ज्यादा महान होतीं. गांधी किस तरह भगवा खेमे के मैंबर्स के दिलोदिमाग में कुंठा और गठान बन कर विराजे हैं, यह इस मांसाहारी वक्तव्य से समझा जा सकता है.

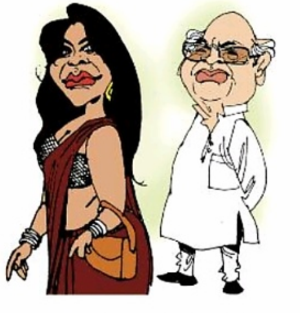

इस बयान या बकवास, कुछ भी कह लें, पर उन की हैसियत और उम्मीद के मुताबिक बवाल मचा क्योंकि महानता और नग्नता में इतना अंतरंग और नजदीकी संबंध अभी तक कोई प्रबुद्ध जन स्थापित नहीं कर पाया था. कुछ लोग तो भड़के ही, लेकिन राखी सावंत ने अपने मिजाज के मुताबिक ह्रदयनारायण को बख्शा नहीं, जिस के कहे का सार यह था कि 'ग्रैंड पा कुछ तो शर्म करो.'

वादा तेरा वादा

अरविंद केजरीवाल और दूसरे नेताओं में बड़ा फर्क यह है कि उन्होंने जो कहा वह दिल्ली में कर के दिखाया भी. अब वे चुनावी राज्यों में भी कुछ कर दिखाना चाहते हैं. पंजाब के बदलते घटनाक्रम के बाद वादों की बौछार उन्होंने उत्तराखंड और गोवा में की, मसलन इतने यूनिट बिजली फ्री दूंगा और इतने लाख लोगों को रोजगार दूंगा.

चाइनीज आइटमों की तरह ऐसे वादों की कोई गारंटीवारंटी नहीं होती लेकिन जाने क्यों लोग उन की बातों को पूरी तरह खारिज नहीं कर पाते. खासतौर से युवा जो उन की कार्यशैली और दिल्ली सरकार के रियलिटी वाले विज्ञापनों को देख कर सोचता है कि 'कसमेंवादे प्यारवफा...' वाले गाने की तरह वोट भी तो मिथ्या ही है, इसलिए क्यों न एक बार आम आदमी पार्टी यानी आप को भी आजमा लिया

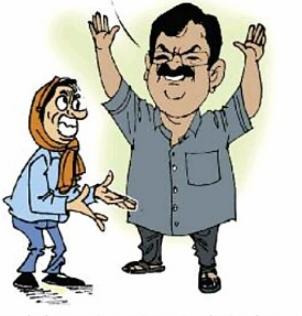

जाए, शायद नौकरी मिल जाए. अरविंद के थोकबंद वादों से परेशान भाजपा और कांग्रेस को नए वादों का आविष्कार करना पड़ेगा.

हंगामा है क्यों बरपा

तकरीबन एक हजार दिन सुस्ताने के बाद फायर ब्रैंड नेत्री उमा भारती एकाएक ही इतनी सक्रिय हो उठी हैं कि लोग उन्हें ले कर फिर गफलत से घिरने लगे हैं. साध्वी ने भोपाल में बड़े तल्ख लहजे में कहा कि अगर मध्य प्रदेश में शराबबंदी नहीं हुई तो वे 15 जनवरी से प्रदेशव्यापी आंदोलन करेंगी.

इस बयान से समझने वाले खासतौर से बेवड़े यही समझे कि जब से गुजरात में भूपेंद्र पटेल को सीएम बनाया गया है तब से भाजपा के पार्षद और सरपंच भी बिना पिए ही यह सोचते बहकने लगे हैं कि मुमकिन है ब्रह्मा ने उन की कुंडली में भी लार्ज साइज का राजयोग लिख छोड़ा हो, जो कभी भी फलीभूत हो सकता है, फिर उमा तो इस पद के लिए डिजर्व करती हैं. पर न जाने क्यों मय की तरफ उन का ध्यान अपने मुख्यमंत्री रहते नहीं गया था. इस धौंस पर असद मुल्तानी का एक शेर मौजूं है–

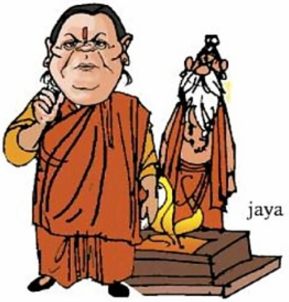

'शराब बंद हो, साकी के बस की बात नहीं,
तमाम शहर हैं, दोचार दस की बात नहीं.'

यूट्यूबर गडकरी

नागपुर की सड़कों पर कहीं भी चले जाएं, 60 पार का रिकशेवाला भी आधे फख्र और आधी ईर्ष्या से यह कहते मिल जाएगा कि 'हम ने देखा है नितिन गडकरी को, वे खटारा वैस्पा स्कूटर पर घूमते फिरते थे पर अब उन के ठाट निराले हैं. उन के पास 6 कारें हैं और 6 तरह के ही उन के कारोबार हैं.' कभी मामूली खातेपीते मराठी ब्राह्मण परिवार के नितिन अब कम से कम 50 करोड़ रुपए की जायदाद के मालिक हैं. उन के पास 29 एकड़ बेशकीमती जमीन भी है.

इतना सबकुछ होने के बाद भी बकौल गडकरी उन्हें 4 लाख रुपए महीने यूट्यूब से भी मिलते हैं क्योंकि उन के अपलोड किए गए वीडियो लाखों लोग देखते हैं. यह सुन कर तरस उन लोगों पर आता है जो यूट्यूब से कमाई के चक्कर में रोज तरहतरह के वीडियो बना बना कर लोड किया करते हैं लेकिन अधिकांश को देखने वालों की तादाद 100 पार भी नहीं जाती.

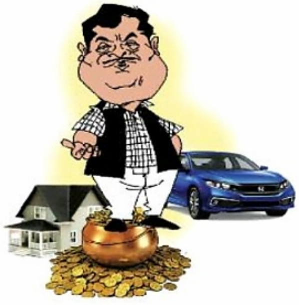

–भारत भूषण श्रीवास्तव ●

भारत की नारियों ने हमेशा अपने होने का अर्थ ढूंढ़ना चाहा है, पर इस पुरुष समाज ने उसे अपनी इच्छाओं के नीचे दबा कर रखा. आखिर एक नारी भी अपने मन में सपने संजोती है, उन्हें पूरा करना चाहती है, किसी का हक नहीं बनता कि उस के सपनों को दबाए.

हमेशा से अपने होने का अर्थ ढूंढ़ती रही नारी

• डा. अनीता सहगल वसुंधरा

किस रूप में साधना करूं तुम्हारी,
हर रूप में श्रद्धेय लगती हो,
नींव बन कर सहती हो सबकुछ,
पर आधार पुरुष को दे जाती हो,
हर पल बन कर परछाई नर की,
तुम अस्तित्व अपना खो देती हो,
हर मन में, हर पल में, खुद को त्याग कर,
तुम खुद को जला जाती हो.

'भारत की नारी' नाम सुनते ही हमारे सामने प्रेम, करुणा, दया, त्याग और सेवासमर्पण की मूर्ति अंकित हो जाती है. हम समझते हैं कि नारी के व्यक्तित्व में कोमलता और सुंदरता का संगम होता है, वह तर्क नहीं भावना से जीती है, इसलिए उस में प्रेम, करुणा, त्याग आदि के गुण अधिक होते हैं और इन सब की सहायता से वह अपना तथा अपने परिवार का जीवन सुखमय बनाती है.

किंतु महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों की घटनाएं स्त्री जीवन के उस मरूस्थल को प्रतिबिंबित करती हैं जो सदियों से घटती रही हैं और हमारा यह सोचना कि नारी न तो परेशान होती है और न ही हार मानती है, उसे कचोटता रहता है जो एक प्रतिकार के रूप में उस के मन से बाहर नहीं आ पाता, क्योंकि यह कहीं न कहीं नारी के उस रूप, जिसे हम ममता, प्यार, वात्सल्य से परिपूर्ण पाते हैं, के रास्ते की रुकावट बन जाता है.

महिला अपनी आंखों में ढेर सारे सपने बुनती है, जो पूरी तरह मृगमरीचिका की तरह होते हैं. वहां पहुंचने की उस की मेहनत उसे अंत में भी प्यासे रह जाने की तड़प दे जाती है और भविष्य से जुड़े उस के तमाम सपने उस की योग्यता की अनदेखी कर उसे एक नारी होने का एहसास दिलाते हैं.

उस की आत्मनिर्भरता तो छोड़िए, वह अपने होने का ही अर्थ आज तक नहीं ढूंढ़

पाई है. इस तलाश में वह पूरी जिंदगी भागती रहती है कभी किसी के लिए, कभी किसी के लिए, क्योंकि लगता है कि नारी का जन्म ही खुद के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए होता है.

भारतीय नारी का चरित्र त्यागमयी अधिक हो गया है, जो कभी भी किसी बात के लिए शिकायत नहीं करती है. इस के विपरीत, उन्नत देशों की नारियां प्रगति की दौड़ में पुरुषों से मुकाबला करने लगी हैं. वे पुरुषों के समान व्यवसाय और धनप्राप्ति में शामिल हैं. अनेक नारियां माता बनने का विचार ही मन में नहीं लातीं, क्योंकि वे खुद के लिए जीना चाह रही हैं. विदेशी नारियां शराब, जुआ, सिगरेट पीना भी बुरा नहीं मानती हैं.

आज आधुनिक समय में भारतीय नारियों में बदलाव आया है. सैकड़ों वर्षों तक घरगृहस्थी रचातेरचाते उसे अनुभव होने लगा है कि उस का काम बरतनचौके तक ही नहीं है. बदलते वातावरण में भारतीय नारी को समाज में खुलने का अवसर मिला है तो वे खुद के लिए जीना चाहती हैं.

स्वतंत्रता आंदोलन में सरोजिनी नायडू, सत्यवती, कमला नेहरू जैसी महिलाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं. परिणामस्वरूप स्त्रियों में पढ़नेलिखने और कुछ कर गुजरने की आकांक्षा जागृत हुई.

लेकिन पुरुषों के ताकतवर समाज में महिलाओं की ये कोमल भावनाएं दबा दी जाती हैं. एक महिला अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहती है, संपूर्ण और स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है. इस के लिए वर्तमान समाजव्यवस्था में अनेक समझौते उसे करने पड़ते हैं.

पुरुषों के समाज में आज भी महिलाएं अकेली ही हैं. समानता

और सम्मान की तमाम राजनीतिक घोषणाओं के बावजूद वे समाज के दूसरे दर्जे की नागरिक हैं.

भारत में नारियों को प्रेम, बलिदान तथा विनम्रता के प्रतीक के रूप में सराहा तो गया है पर अफसोस यह है कि महिलाओं, जिन्होंने अपने परिवार तथा समाज के विकास के लिए स्वयं को मिटा दिया, को इतने वर्षों बाद भी सामाजिक व्यवस्था में उचित स्थान नहीं मिल पाया है.

पुरुष के तथाकथित पौरुषत्व एवं उद्धत अहंकार ने नारी का शोषण किया है. नारी के संबंध में आज बहुत ऊंची तथा बढ़बढ़ कर बातें की जाती हैं. उन्हें जननी, बहन का दर्जा दे कर आदर्श नारी कहा जाता है. उन के उन्नयन हेतु अनेक संस्थाएं कार्यरत हैं पर समाज में उन का स्थान आज भी असमान है.

आज जबकि 21वीं सदी का पदार्पण हो चुका है, वर्तमान कुछ नारियां विकास के ऊंचे शिखर को छू रही हैं. शिक्षा, कंप्यूटर, नारी सुलभ क्षेत्र- चिकित्सा, सेवा के क्षेत्र, इंजीनियरिंग, वाणिज्य, तकनीकी, पुलिस, विमान चालन जैसे क्षेत्र भी अब उस से अछूते नहीं रहे, फिर भी उसे पुरुषों के मुकाबले उतना योग्य व बुद्धिमान नहीं समझा जाता है.

जो स्वतंत्रता जिंदगी के हर क्षेत्र में, हर काम में, हर निर्णय आदि में पुरुषों को है, वह स्त्रियों को नहीं है. उन्हें आज भी इस स्वतंत्र भारत व अन्य विकासशील देशों में शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक अत्याचार, अनाचार व अन्य प्रकार की यातनाओं का शिकार होना पड़ता है.

घरेलू झगड़ों से इतर नारी आज गांवदेहात में भी चूल्हाचौके के साथसाथ तकनीकी ज्ञान ले कर खुद को मजबूत बना रही है.

आज भी परिवार में कन्या को अपने भाई के मुकाबले अधिक गृहकार्य, जैसे पानी लाना, चौकाबरतन, झाड़ूपोंछा आदि करना पड़ता है. आज भी लाखों की संख्या में बालिकाएं नौकरानी के रूप में घरेलू कार्यों को संपन्न करती हैं जबकि उन की आयु पढ़ने व विद्यालय जाने की होती है.

कहा जाता है कि नारी जन्म से ही सम्मान एवं अधिकारों की दृष्टि से स्वतंत्र है. लेकिन, इस बात में कितना खोखलापन

नारी शिक्षित हो कर हर क्षेत्र में शीर्ष पदों पर पहुंच रही है. सुरक्षा के मामले में नारी आज की परिस्थितियों में खुद को असुरक्षित महसूस करती है. अपने त्याग से परिवार को सुखमय बनाती है.

नजर आता है कि जीवन के हर मोड़ पर कन्या, जो आगे चल कर महिला का रूप धारण करती है, को घोर उल्लंघनीय बाधाओं का सामना करना पड़ता है.

इतना सबकुछ होते हुए भी अगर उन की जिम्मेदारियों की तरफ नजर घुमाएं तो हम देखते हैं कि गांव से ले कर शहर तक, गरीब से ले कर अमीर तक, हर वर्ग में वास्तव में आज नारी की भूमिका दोहरी हो गई है. उसे घर और बाहर दोदो मोरचों पर अपने परिवार की जीविका के लिए काम करना पड़ रहा है.

घर की सारी जिम्मेदारियों और बाहर के कार्य इन दोनों में वह जबरदस्त संतुलन बनाए हुए है. इतनी मेहनत करने के बाद भी उसे पगपग पर पुरुष समाज की ईर्ष्या, घृणा, हिंसा और वासना से भी लड़ना पड़ता है.

यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि यह पुरुषों की दुनिया है. हमारी संसद तथा विधानसभाओं में, समाचार जगत तथा सार्वजनिक मंचों पर मात्र पुरुषों के दृष्टिकोण को स्थान मिलता है. विशेषरूप से शहरी शिक्षित पुरुषों को बालिकाओं व महिलाओं की समस्याओं के बारे में कभीकभार ही गंभीर चिंतन हुआ होगा.

नारी की आज की यह हालत गांवों के साथसाथ शहरों की नारी के लिए एक अति गंभीर समस्या के रूप में सामने आ चुकी है. उस के इस हालत का जिम्मेदार कौन है, किस का नाम लिया जाए? ●

दिल्ली प्रैस
मुक्ता
युवाओं की सजग पत्रिका
Jo badle, Wohi chale
मासिक पत्रिका
संपर्क करें या http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

हमारी बेड़ियां

मेरी बचपन की सहेली प्रैग्नैंट थी, तब उस के पिताजी की अकस्मात मृत्यु हो गई. उन लोगों में यह अंधविश्वास भरा है कि प्रैग्नैंट महिला पूरे 9 महीने तक किसी की भी मृत्यु हो जाने पर उस में शामिल नहीं हो सकती.

उस के प्रैग्नैंट होने के 2 महीने के बाद ही उस के पिताजी की मृत्यु हो गई, मगर पुराने अंधविश्वास की वजह से उस की ससुराल वालों ने उसे अपने पिताजी के अंतिम संस्कार में शामिल नहीं होने दिया.

आज भी मेरी सहेली अपने पिताजी के अंतिम संस्कार में शामिल न होने के लिए अफसोस करती है. इस तरह अंधविश्वास के कारण एक इकलौती बेटी अपने पिताजी के अंतिम दर्शन तक न कर सकी.

पूजा

मुझे अपनी एक दोस्त के साथ शौपिंग करने के लिए करोल बाग मार्केट जाना था. मार्केट मेरे घर से दूरी पर है तो मैं पटेल नगर के खन्ना चौक पर अपनी फ्रैंड को फोन कर के वेट करने लगी.

मैं ने देखा कि एक महिला खन्ना चौक के बीचोंबीच जा कर खड़ी हो गई. फिर कुछ देर बाद वह घुटने के बल बैठ कर दोएक मिनट रोड पर पता नहीं क्या करती रही. मुझे पहले समझ नहीं आया कि वह वहां कर क्या रही है, क्योंकि उस के कपड़ों से वह अच्छेभले घर की मौडर्न महिला लग रही थी.

जैसे ही वह महिला वहां से निकली तो चौक पर कुछ सामान पड़ा हुआ दिखा. मैं ने सोचा, देखती हूं क्या रखा हुआ है. जैसे ही मैं चौक के बीचोंबीच उसे देखने को पहुंची तो वहां पर आटे से सफेद घेरा बनाया हुआ था. उस घेरे के अंदर नीबू, कुछ लाल रंग की चूड़ियां, सिंदूर, चावल के दाने और 2 आलू रखे हुए थे, जिस में अगरबत्ती जला कर घुसाई हुई थी. नीबू में भी लाल सिंदूर पुता पड़ा था. देख कर बड़ा अजीब लग रहा था.

मैं ने वहां पास में एक दुकानदार से इस बारे में पूछा. उन्होंने कहा, "मैडम, यह ऊपरी छाया का चक्कर है. जरूर इन के घर में किसी पर भूतवूत का साया होगा." यह सुन कर मैं हैरान हो गई.

मैं ने उन से पूछा, "इस से क्या होगा?" उन्होंने कहा, "ये टोनेटोटके हैं. वशीकरण छुड़ाने के तरीके हैं. ऐसा कर के साया दूर होता है और घर में शांति बनी रहती है."

यह सुन कर मैं तो बिलकुल ही हैरान हो गई. समझ नहीं आता, आज भी हम पढ़ेलिखे लोग इन दकियानूसी बातों पर विश्वास कैसे कर लेते हैं.

नीलम रावत (सर्वश्रेष्ठ) ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

*अपना अनुभव **नाम** व **पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज/ऑडियो** भी कर सकते हैं.*

08588843415

मौत के मुआवजे की घिनौनी प्रथा

मौताणा

• देवेंद्रराज सुथार

'मौताणा' राजस्थान के आदिवासी समुदाय के बीच प्रचलित प्रथा है जो अब वसूली करने की कुप्रथा बन कर रह गई है. कुछ वर्षों से देखने में आया है कि यह प्रथा अब जबरन वसूली का तंत्र बन गई है.

पिछले दिनों राजस्थान के उदयपुर जिले के आदिवासीबहुल क्षेत्र कोटड़ा में शराब पीने से रोकने पर पत्नी की गोली मार कर की गई हत्या के मामले में पुलिस द्वारा कराए गए 10 लाख रुपए के मौताणा समझौते के बाद मृतका का अंतिम संस्कार हो पाया. डूंगरपुर जिले में युवक की हत्या के बाद उस का शव 20 घंटे तक मोर्चरी में पड़ा रहा.

पोस्टमार्टम के बाद जब पुलिस ने शव को अंतिम संस्कार के लिए परिजनों को सौंपा तो वे मोलभाव करने लगे. पुलिस परिजनों को समझाने का प्रयास करती रही, लेकिन वे नहीं माने. आखिरकार, 5 अगस्त की शाम को पुलिस की मौजूदगी में दोनों पक्षों के बीच 4 लाख रुपए में शव का निबटारा कर दिया गया. राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में लगातार ऐसे मामले सामने आ रहे हैं जिन में बेवजह मौत का जिम्मेदार ठहरा कर मौत की रकम वसूल की जा रही है.

मंडवाल में वृद्ध रणछा 23 अगस्त की दोपहर करीब 2 बजे अपने घर पैदल जा रहा था. रास्ते में बदमाशों ने उसे रोक कर 20 साल पुराने मामले में मौताणे की मांग करते हुए मारपीट की. साथ ही, जबरन बाइक पर बैठा कर जान से मारने की धमकी देते हुए अपहरण कर लिया.

इधर, आबूरोड समीपवर्ती आवल गांव में डामरो की फली में धर्माराम पुत्र भूराराम गरासिया ने अपनी पत्नी काली गरासिया के साथ लाठियों से मारपीट की, जिस से उस की मौत हो गई. हत्या के बाद आरोपी पति फरार हो गया.

मृतका के पीहर व ससुराल पक्ष के बीच मौताणे की मांग को ले कर पंचायती का दौर शुरू हो गया. पुलिस की मौजूदगी में ससुराल व पीहर पक्ष के बीच पंचायती चलती रही, जिस से मृतका का 2 दिन तक अंतिम संस्कार अटका रहा.

दरअसल, 'मौताणा' का मतलब 'मौत' पर 'आणा' यानी रुपए. शव का सौदा करने की इस प्रथा का इतिहास सदियों पुराना है. प्राचीन जमाने में कोई कानून तो था नहीं. तब दक्षिणी राजस्थान में अरावली पर्वत शृंखला से सटे उदयपुर, बांसवाड़ा, सिरोही व पाली जिले के आदिवासियों में अस्वाभाविक या अप्राकृतिक मौत होने पर उस के लिए जिम्मेदार व्यक्ति से मौताणा वसूलने की प्रथा शुरू हुई.

देश की आजादी के 75 साल बाद भी उदयपुर के आदिवासीबहुल क्षेत्र खेरवाड़ा, झाडोल, कोटड़ा, गिरवा, सलूंबर और निकटवर्ती डूंगरपुर जिले के कुछ हिस्सों में भील, गरासिया और मीणा जाति में आज भी यह प्रथा कायम है.

इस प्रथा के तहत किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर कथित दोषी परिवार के सदस्यों से 20 लाख रुपए तक का मुआवजा वसूल किया जा सकता है. उदाहरण के लिए, यदि किसी कारणवश गर्भवती महिला की मृत्यु हो जाती है तो महिला के परिजन उस के पति से जुर्माना वसूल सकते हैं क्योंकि गर्भधारण के लिए वह जिम्मेदार है.

इस प्रथा में यदि किसी व्यक्ति ने किसी अन्य व्यक्ति की हत्या कर दी तो वह जेल जाने के बजाय निर्धारित राशि का जुर्माना भर कर स्वतंत्र रूप से घूम सकता है. यदि पंचों द्वारा निर्धारित दंड का भुगतान नहीं किया जाता है तो संभव है कि सामने वाला आप के गांव पर

हमला भी कर दे. कई बार 'करे कोई और भरे कोई' की तर्ज पर आरोपी के परिजनों को भी जुर्माना भरना पड़ता है.

यह प्रथा सामाजिक न्याय के उद्देश्य से शुरू हुई थी, जिस में अगर किसी ने किसी व्यक्ति को मार डाला तो दोषी को सजा के रूप में मुआवजा देना पड़ता था. लेकिन अब आदिवासी अन्य कारणों से भी मौताणा की मांग करते हैं.

वहीं, पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है कि किसी कारणवश अपनों की मौत का दोष दूसरों पर मढ़ा जा रहा है और जबरन मौताणा वसूल किया जा रहा है. मृत्युराशि न मिलने पर आदिवासी चड़ोतरा करते हैं. इस में सामने वाले के घर को लूट कर आग लगा दी जाती है. चड़ोतरा में दोषी पक्ष पर हमला किया जाता है.

मौत का मुआवजा न मिलने के विवाद में कई दिनों तक शव का अंतिम संस्कार न होने से शव सड़ भी जाता है.

दरअसल, जब मृतक के परिवार वाले किसी को दोषी मान कर मौत की राशि देने के लिए मजबूर करते हैं तो आदिवासियों का अपना दरबार होता है जहां पंच अपराधी को स्पष्टीकरण का मौका दिए बिना ही मौताणा भुगतान करने का आदेश जारी करता है.

भुखमरी से जूझ रहे आदिवासी परिवारों को लाखों रुपए का मौताणा भुगतान करना पड़ता है, जिस से गरीब आदिवासी बरबाद हो जाते हैं.

इन पर न तो पुलिस का और न ही कानून का कोई नियंत्रण है. यह प्रथा पूरी तरह पंचायतों के अधीन है. इस प्रथा में विवाद के कारण कई बार अंतिम संस्कार न करने पर शव सड़ भी जाते हैं. आस्था, सेवा, मंदिर सहित कुछ स्थानीय गैरसरकारी संगठनों ने भी इस कुप्रथा पर केस स्टडी की है और राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद जैसे संगठन आदिवासियों में जागरूकता पैदा करने के लिए काम कर रहे हैं. लेकिन वे इस प्रथा को छोड़ने को तैयार नहीं हैं.

कई बार दोनों पक्षों को इस बात पर सहमत होने में इतना समय लग जाता है कि शव कंकाल में तबदील हो जाते हैं. पंचायत प्रावधान अनुसूचित क्षेत्र विस्तार अधिनियम 1996 के तहत आदिवासियों को छोटेमोटे विवादों को पारंपरिक तरीके से निबटाने की अनुमति है लेकिन इस प्रथा के नाम पर हिंसा ठीक नहीं है.

कई मामलों में पीड़ित को कुछ मिलता भी नहीं और कई बार पीड़ित मौताणा की मांग भी नहीं करना चाहते, लेकिन वे अपनी जाति के पंचों के आगे स्वयं को बेबस पाते हैं. अब मौताणा किसी विवाहित महिला या पुरुष की अकाल मृत्यु तक सीमित नहीं है. सड़क हादसों में पशुओं की मौत या अस्पताल में बीमारी से मौत जैसे मामलों में भी इस प्रथा की आड़ में जबरन वसूली की जाने लगी है. ●

भिक्षावृत्ति महानवृत्ति

• मदन कोथुनियां

कहने को यह देश युवाओं का है, यहां 65 प्रतिशत युवा रहते हैं पर असल में यह बूढ़ों और भिखारियों की संस्कृति का देश बन चुका है. यहां जवानी पैदा नहीं होती, बल्कि जवान होने से पहले ही युवाओं को बूढ़ा कर दिया जाता है. ऐसे में फिर कैसे महान बना जा सकता है?

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक राष्ट्रीय न्यूज चैनल को इंटरव्यू दिया था. उस में बड़ी बेशर्मी के साथ कहते नजर आए कि ‘आप को यह जान कर हैरानी होगी कि मैं ने 35 साल भिक्षा मांग कर खाया है.’ जैसे भिक्षा मांगना इंटरनैशनल महान कार्य किया हो.

इस देश में भीख मांगने को सदा उच्च माना गया है, आदरणीय माना गया है. कई धर्मग्रंथों में लिखा है कि ब्राह्मणों को भिक्षा देना पुण्य का कार्य है.

ब्राह्मणों के छोटेछोटे बच्चों को शास्त्रों का हवाला दे कर भिक्षावृत्ति में धकेला गया. उन को बताया गया कि तुम्हारे ऋषिमुनि, महात्मा भी भिक्षा मांग कर जीवनयापन करते थे, इसलिए वे महान

थे. इस महान संस्कृति को आगे बढ़ाना तुम्हारा कर्तव्य है. यही कारण है कि आज बेशर्मी के साथ मांगने की वृत्ति रगरग में समा गई है.

साल 1962 में चीन में त्रासदी आई. ब्रिटेन के एनजीओ ने राहत सामग्री से भरा जहाज भेजा था. चीन के लोगों ने उस जहाज पर यह लिख कर वापस कर दिया कि भूखों मर जाएंगे मगर भीख स्वीकार नहीं करेंगे. ब्रिटेन की संसद में 31 मई 1962 में एम पी नोएल बेकर की अपील पर प्रधानमंत्री ने कहा था कि चीन ने बाहर से बड़े पैमाने पर खाद्यान्न खरीदा है और शायद वे सहायता न लें.

भारत में इस तरह मदद पहुंचती तो जहाज के कैप्टन का मालाओं से स्वागत होता, पंडितजी स्वागत में नारियल फोड़ते. हम बेशर्म लोग हैं. हम ने भीख को आत्मसात कर के, आदर दे कर इस को महान संस्कृति का स्वरूप दे दिया है.

आज 10-12 साल के बच्चे तिलक लगा कर, चोटी बना कर पंडालों में प्रवचन देते हैं कि जीवन के आवागमन से मुक्ति का रास्ता कैसे प्राप्त किया जा सकता है, मोक्ष कैसे मिलेगा. जिंदगी की दहलीज पर कदम रखा है अभी और अभी से ही मौत पर निशाना. जवानी तो दूर की बात है, अभी तो बचपन भी नहीं जिया, उस से पहले ही बूढ़े हो गए, बूढ़ों की सोच घर कर गई.

मरुस्थलीय पौधे कीकर के भी कोंपल फूटती है, फूल आते हैं, फल लगते हैं. मगर भारत के मनुष्यों के जीवन में कोई रस नहीं है. कोई कली नहीं खिलती, न फूल आते हैं न फलों का आगमन होता है. पौधा पैदा हुआ और सूखे की मार पड़ जाती है. बच्चा पैदा हुआ कि धर्म की आड़ में मौत से रूबरू करवा दिया जाता है.

जिंदगी क्षणभंगुर है, आसपास सबकुछ मोहमाया है. तू इस से मुक्ति का मार्ग ढूंढ़. दुनिया बेगानी घोषित की हुई है और बच्चों को भिखारी बना दिया गया है, बच्चों को बूढ़ा बना दिया गया है.

यह भिखारियों की संस्कृति वाला देश है. यह बूढ़ों का देश है. यहां जवानी पैदा नहीं होती है. अगर आप भौतिक रूप से देखोगे तो हुक्मरान सही कह रहे हैं कि यह युवा देश है. हमारे पास 65 करोड़ युवाओं की संख्या है. मगर युवा सोच, स्टेट औफ माइंड, स्पिरिट के रूप में देखोगे तो ये 65 करोड़ मिट्टी के पुतले हैं.

जिस देश की आधी से ज्यादा आबादी युवा हो उस देश की इतनी दयनीय हालत हो सकती है? दरिद्रता का ढेर हो सकता है? समस्याओं का अंबार हो सकता है? कदमकदम पर अन्याय व अत्याचार है मगर कहीं कोई बगावत, विरोध, विद्रोह की कोई आवाज नहीं. क्या युवा देश में यह संभव है?

जवान आदमी कोई भीख मांगता है तो हम कह देते हैं कि जवान हो कर भीख मांगता है. बूढ़ा भीख मांगे तो कोई अचरज नहीं क्योंकि वह पैदा नहीं कर सकता. मगर धर्म/संस्कृति/दान/पुण्य का तड़का लगा दिया जाए तो न मांगने वाले को शर्म आती है और न देने वाले को.

मांगने वाला भी गर्व के साथ मांगता है क्योंकि यह उस की महान विरासत है जिसे वह संभाल रहा है और देने वाले के मन में भी कोई सवाल खड़ा नहीं होता कि जवान को क्यों दूं? बल्कि उसे भी गर्व की अनुभूति होती है कि भीख दे कर उस ने भी महान कार्य किया है.

इस तरह हम ने हजारों सालों से भिखारियों की फौज खड़ी कर ली है.

अनुत्पादक लोगों का जमघट तैयार कर लिया. जो थोड़ेबहुत उत्पादक लोग हैं उन की ऊर्जा व श्रम इन अनुत्पादक लोगों को पालने में व्यर्थ जा रहा है. देश में कोई रैडिकल प्रोग्रैस नहीं हो रही है. बस, खुद द्वारा तैयार बोझ ही खुद के कंधों पर उठाए घूम रहे हैं.

यहां के धर्मगुरु समझा रहे हैं कि 'क्या ले के आया बंधु, क्या ले के जाएगा!' पैदा होते ही बुढ़ापे की चादर ओढ़ा दी जाती है. जिंदगी को मौत की ट्रेन के इंतजार करने का वेटिंगरूम बना दिया है. बस, मौत आने वाली है. यहीं शौच कर लो, कूड़ा बिखेर दो. हमारे साथ क्या चलने वाला है? सृजन करने की, निर्माण करने की क्या जरूरत है? हम तो खाली हाथ आए थे और खाली हाथ जाना है, इसलिए कुछ करने की जरूरत नहीं है. गलती से कुछ हाथ लग गया है तो वह भी इन भिखारियों को दे दो.

धर्मपुण्य के नाम पर न भीख मांगने वालों को शर्म आती है न ही देने वालों को, बल्कि देने वाला शान समझता है.

इसी वृत्ति के कारण, इसी भीख मांगने की सोच के कारण यह देश हजारों सालों से दरिद्रता का, भुखमरी का, गरीबी का दर्द झेल रहा है. इसी वृत्ति के कारण यह देश हजारों साल गुलाम रहा है. इसी महान भिखमंगी वृत्ति के कारण हम आज भी कटोरा ले कर कभी अमेरिका, कभी रूस, कभी ब्रिटेन, कभी फ्रांस की तरफ भाग रहे हैं.

दुनिया की सब से ज्यादा उपजाऊ भूमि हमारे पास है. दुनिया के सब से ज्यादा खनिज पदार्थों का भंडार हमारे पास है. प्राकृतिक विविधताओं का अद्‌भुत संगम है. मानव संसाधन का दुनिया का सब से बड़ा युवा भंडार है. मगर युवाओं की सोच में हम ने बुढ़ापा भर दिया है. यही कारण है कि पंडालों में, मसजिदों में, चर्चों में बालबह्मचारी तो पैदा हो रहे हैं, मगर भगतसिंह कहीं पैदा नहीं हो रहे.

भारत के राजनेता युवाओं को दिशा देने के बजाय भटका रहे हैं. कुछ युवा मूढ़ताओं, मूर्खताओं से आजिज आते हैं तो उन की बगावती, हिंसक वृत्ति को तोड़फोड़ में लगा देते हैं. क्या तोड़ना है, वह युवाओं को समझ में नहीं आ रहा है, इसलिए जो नेताजी इशारा कर देते हैं वे वो ही तोड़ने लग जाते हैं.

भटका हुआ युवा

भारत के युवाओं को अंधविश्वास व पाखंड की बेड़ियां तोड़नी हैं, भिखमंगों की वृत्ति तोड़नी है, गुंडेमवालियों की कमर तोड़नी है, बेईमान राजनेताओं के बंगले व गाड़ियां तोड़नी हैं, विकास की राहों के हर अवरोधक को तोड़ना है जबकि वे तोड़ रहे हैं कालेज की खिड़कियां, टेबलकुरसियां, सार्वजनिक परिवहन की बसें, रेलें, आमजन के व्हीकल आदि. राजनेता भी यही चाहते हैं कि युवा यही तोड़ते रहें. धर्मगुरु भी यही चाहते हैं युवा यही तोड़ते रहें क्योंकि इसी युवा भटकाव पर इन के साम्राज्य खड़े हैं. ●

स्त्री का समर्पण

प्रेम के लिए किया गया
स्त्री का समर्पण,
न जाने कब बदल गया जंजीरों में,
उपेक्षा, तिरस्कार, डांट, फटकार
कुम्हला गए पत्ते प्रेम के.

सहन की झीनी चादर तले,
दब गए इंद्रधनुष रंग नेह के.

दो दिलों का प्रेम,
बदल गया एकालाप में,
वे अब बात तो करते हैं,
मगर अपने से.

एकतरफा संवाद, मौन मुखर,
मुंह छिपाए बैठी मुसकराहटें,
हरसिंगार के फूल गिर जाते हैं,
ढल गए हैं दिन गजरे के.

बारिश की बूंदें बरसते ही गुम,
विरह की तपिश में,
गरम तवे पर पड़ी बूंदों की तरह,
सावन के झूले पड़े हैं रीते,
कभी छोटी चिड़िया आ बैठती है उन पर,
लेना चाहती है पींगें पर,
पर हिल कर ही रह जाता है झूला.

प्रेम से पहले,
स्त्री चाहती है मानसम्मान के दो बोल,
तिरस्कार, उपेक्षा में लिपटे प्रेम के शब्द,
हैं चाशनी में लिपटे करेले से.

क्याक्या नहीं गया तुम्हारे लिए,
भौतिक सुविधाओं की
लंबी फेहरिस्त मिली,
पर छीन ली गई आजादी,
हाथ बराबरी का, स्वीकारोक्ति एक
स्वतंत्र व्यक्तित्व की.

स्त्री का समर अभी शेष है,
आहत आत्मसम्मान की सुधि,
काश कि दो बोल प्रेम के बोलना भी,
तुम को रहता याद.

• यामिनी नयन गुप्ता

कहानी

नया रिश्ता

• ताराचंद मकसाने

विशाल अंकल को धन्यवाद दे कर शिवानी और रेणू खुशीखुशी विदा हुईं और फिर दोनों ने पार्वती से बात की. उन्होंने ना नू, ना नू किया, मगर उन दोनों की बेहतर कन्विसिंग स्किल के सामने पार्वती की ‘ना’ कुछ ही समय में ‘हां’ में बदल गई.

अमित की मम्मी पार्वती ने शरमाते हुए विशाल कुमार को अंगूठी पहनाई तो अमित की पत्नी शिवानी और उन के बच्चों अनूप व अतुल ने अपनी दादी पर फूलों की बरसात करनी शुरू कर दी. बाद में विशाल कुमार ने भी पार्वती को अंगूठी पहना दी. माहौल खुशनुमा हो गया, सभी के चेहरे खिल उठे, खुशी से झूमते बच्चे तो अपने नए दादा की गोद में जा कर बैठ गए.

यह नजारा देख कर अमित की आंखें नम हो गईं. वह अतीत की यादों में खो गया. अमित 5 वर्षों से शहर की सब से पौश कालोनी सनराइज सोसाइटी में रह रहा था. शिवानी अपने मिलनसार स्वभाव के कारण पूरी कालोनी की चहेती बनी हुई थी. कालोनी के सभी कार्यक्रमों में शिवानी की मौजूदगी अकसर अनिवार्य होती थी.

अमित के मातापिता गांव में रहते थे. अमित चाहता था कि वे दोनों उस के साथ मुंबई में रहने के लिए आ जाएं मगर उन्होंने गांव में ही रहना ज्यादा पसंद किया. वे

साल में एकदो बार 15-20 दिनों के लिए जरूर अमित के पास रहने के लिए मुंबई आते थे. मगर मुंबई आने के 8-10 दिनों बाद ही गांव लौटने का राग आलापने लग जाते थे.

वक्त बीत रहा था. एक दिन रात को 2 बजे अमित का मोबाइल बजा.

'हैलो, अमित बेटा, मैं तुम्हारे पिता का पड़ोसी रामप्रसाद बोल रहा हूं. बहुत बुरी खबर है, तुम्हारे पिता शांत हो गए हैं. अभी घंटेभर पहले उन्हें हार्ट अटैक आया था. हम उन्हें अस्पताल ले कर जा रहे थे, रास्ते में ही उन्होंने दम तोड़ दिया.'

अपने पिता की मृत्यु के बाद अमित अपनी मम्मी को अपने साथ मुंबई ले कर आ गया. बतौर अध्यापिका सेवानिवृत्त हुई पार्वती अपने पति के निधन के बाद बहुत अकेली हो गई थी. पार्वती को पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक था. अमित और शिवानी के नौकरी पर जाने के बाद वह अपने पोते अनूप और अतुल को पढ़ाती थी. उन के होमवर्क में मदद भी करती थी.

पार्वती को अमित के पास आए 2 साल हो गए थे. अमित के पड़ोस में विशाल कुमार रहते थे. वे विधुर थे, नेवी से 2 साल पहले ही रिटायर हो कर रहने के लिए आए थे. उन का एक ही बेटा था जो यूएस में सैटल हो गया था. एक दिन शिवानी ने पार्वती की पहचान विशाल कुमार से करवाई. दोपहर में जब बच्चे स्कूल चले जाते थे तब दोनों मिलते थे. कुछ दिनों तक दोनों के बीच औपचारिक बातें होती थीं. धीरेधीरे औपचारिकता की दीवार कब ढह गई, उन्हें पता न चला. अब दोनों के बीच घनिष्ठता बढ़ गई. पार्वती और विशाल कुमार का अकेलापन दूर हो गया.

एक दिन शिवानी ने अमित से कहा, 'अमित, पिछले कुछ दिनों से मम्मी में आ रहे बदलाव को तुम ने महसूस किया क्या?'

अमित की समझ में कुछ नहीं आ रहा था, उस ने विस्मय से पूछा, 'मैं कुछ समझा नहीं, शिवानी, तुम क्या कह रही हो?'

'अरे अमित, मम्मी अब पहले से ज्यादा खुश नजर आ रही हैं, उन के रहनसहन में भी अंतर आया है. पहले मम्मी अपने पहनावे पर इतना अधिक ध्यान नहीं देती थीं, आजकल वे बहुत ही करीने से रह रही हैं. उन्होंने अपने संदूक से अच्छीअच्छी साड़ियां निकाल कर वार्डरोब में लटका दी हैं. आजकल वे शाम को नियमित रूप से घूमने के लिए जाती हैं...'

अमित ने शिवानी की बात बीच में काटते हुए पूछा, 'शिवानी, मैं कुछ समझा नहीं, तुम क्या कह रही हो?'

'अरे भई, मम्मी को एक दोस्त मिल गया है. देखते नहीं,

आजकल उन का चेहरा खिला हुआ नजर आ रहा है.'

'व्हाट...कैसा दोस्त, कौन दोस्त, शिवानी. प्लीज पहेली मत बुझाओ, खुल कर बताओ.'

'अरे अमित, आजकल हमारे पड़ोसी विशाल अंकल और मम्मी के बीच याराना बढ़ रहा है,' यह कहती हुई शिवानी खिलखिला कर हंस पड़ी.

'वाह, यह तो बहुत अच्छी बात है. मम्मी वैसे भी अकेली पड़ गई थीं. वे हमेशा किताबों में ही खोई रहती थीं. कोई आदमी दिनभर किताबें पढ़ कर या टीवी देख कर अपना वक्त भला कैसे गुजार सकता है. कोई तो बोलने वाला चाहिए न. चलो, अच्छा हुआ मगर यह सब कब से हो रहा है, मैं ने तो कभी महसूस नहीं किया. तुम्हारी पारखी नजरों ने यह सब कब भांप लिया? शिवानी, यू आर ग्रेट...' अमित ने विस्मय से कहा.

'अरे अमित, तुम्हें अपने औफिस के काम, मीटिंग, प्रोजैक्ट्स आदि से फुरसत ही कहां है, मम्मी अकसर मुझ से तुम्हारी शिकायत भी करती हैं कि अमित को तो मुझ से बात करने का वक्त भी नहीं मिलता है,' शिवानी ने शिकायत की तो अमित तुरंत बोला, 'हां शिवानी, तुम सही कह रही हो, आजकल औफिस में इतना काम बढ़ गया है कि सांस लेने की फुरसत तक नहीं मिलती है. मगर मुझे यह सुन कर अच्छा लगा कि अब मम्मी बोर नहीं होंगी. साथ ही, हमें कभी बच्चों को ले कर एकदो दिन के लिए बाहर जाना पड़ा तो मम्मी घर पर अकेली भी रह सकती हैं.' अमित ने अपने दिल की बात कह दी.

'मगर अमित, मैं कुछ और सोच रही हूं,' शिवानी ने धीरे से रहस्यमयी आवाज में कहा तो अमित ने विस्मयभरी आंखों से शिवानी की सूरत को घूरते हुए कहा, 'हां, बोलो, बोलो, तुम क्या सोच रही हो?'

'मैं सोच रही हूं कि तुम विशाल अंकल को अपना पापा बना लो,' शिवानी ने तुरुप का पत्ता फेंक दिया.

'क्या... तुम्हारा दिमाग तो नहीं खिसक गया,' अमित लगभग चिल्लाते हुए बोला.

'अरे भई, शांत हो जाओ, पहले मेरी बात ध्यान से सुनो. मम्मी अकेली हैं, उन के पति नहीं हैं. और विशाल अंकल भी अकेले हैं व उन की पत्नी नहीं हैं. जवानी की बनिस्बत बुढ़ापे में जीवनसाथी की जरूरत ज्यादा होती है. मम्मी और विशाल अंकल दोनों सुलझे हुए विचारों के इंसान हैं, दोनों सीनियर सिटिजन हैं और अपनी पारिवारिक व सामाजिक जिम्मेदारियों से मुक्त हैं.

'विशाल अंकल का इकलौता बेटा है जो यूएस में सैटल है. विशाल अंकल के बेटे सुमित और उस की पत्नी तान्या से मेरी अकसर बातचीत भी होती रहती है. वे दोनों भी चाहते हैं कि उन के पिता यूएस में हमेशा के लिए आ जाएं मगर उन्हें तो अपने वतन से असीम प्यार है, वे किसी भी कीमत पर वहां जाने को राजी नहीं, सेना के आदमी जो ठहरे. फिर उन का तो कहना है कि वे आखिरी सांस तक अपने बेटे और बहू को भारत लाने की कोशिश करते रहेंगे. मगर वे अपनी मातृभूमि मरते दम तक नहीं छोड़ेंगे.' अमित बड़े ध्यान से शिवानी की बात सुन रहा था.

शिवानी ने किंचित विश्राम के बाद कहा, 'अमित, अब मैं मुख्य विषय पर आती हूं. तुम ने लिवइन रिलेशनशिप का नाम तो सुना ही होगा.'

शिवानी की बात सुन कर अमित के चेहरे पर अनभिज्ञता के भाव तेजी से उभरने लगे जिन्हें शिवानी ने क्षणभर में पढ़ लिया और अमित को समझाते हुए बोली, 'अमित, आजकल हमारे देश में विशेषकर युवाओं और बुजुर्गों के बीच एक नए रिश्ते का ट्रेंड चल रहा है जिसे लिवइन रिलेशनशिप कहते हैं. इस में महिला और पुरुष शादी के बिना अपनी सहमति के साथ एक ही घर में पतिपत्नी की तरह रह सकते हैं. आजकल शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वतंत्र लोग इस तरह की रिलेशनशिप को अधिक पसंद करते हैं क्योंकि इस में विवाह की तरह कानूनी प्रक्रिया से गुजरना नहीं पड़ता है. भारतीय कानून में भी इसे स्वीकृति दी गई है.

'शादी के टूटने के बाद आप को कई तरह की कानूनी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है मगर इस रिश्ते में इतनी मुश्किलें नहीं आती हैं. लिवइन रिलेशनशिप में रहने का फैसला आप को सामाजिक व पारिवारिक दायित्वों से मुक्ति देता है. इस रिश्ते में सामाजिक व पारिवारिक नियम आप पर लागू नहीं होते हैं. अगर यह रिश्ता टूट भी जाता है तो आप इस में आसानी से बाहर आ सकते हैं. इस में कोई कानूनी अड़चन भी नहीं आती है. इसलिए मैं चाहती हूं कि...' बोलती हुई शिवानी फिर रुक गई तो अमित अधीर हो गया और झल्लाते हुए बोला, 'अरे बाबा, लगता है तुम ने लिवइन रिलेशनशिप विषय में पीएच डी कर रखी है. पते की बात तो बता नहीं रही हो, लैक्चर दिए जा रही हो.'

'अरे यार, बता तो रही हूं, थोड़ा धीरज रखो न,' शिवानी ने मुसकराते हुए कहा.

लेखकों से निवेदन

- प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में 15-20 सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्र व्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं.
- हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं.
- टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.
- रचनाएं आप डाक के अलावा **article.hindi@delhipress.in** पर वर्ड फाइल बना कर भी भेज सकते हैं. ईमेल से प्राप्त रचनाओं की अस्वीकृति की सूचना देना संभव नहीं है.
- रचना के पहले व अंतिम पृष्ठ पर अपना पूरा नाम, पता, मोबाइल नं. व ईमेल आईडी भी लिखें. रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें.
- यदि आप किसी अनूठे विषय पर लिखना चाहते हैं तो उस बारे में ऊपर के ईमेल के द्वारा पूर्व सलाह ले सकते हैं.

पता : सरिता दिल्ली प्रैस, ई-8,
रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

- हम युवा लेखकों को विशेष प्रोत्साहन देते हैं. वे अपनी समस्याओं और अनुभवों पर आधारित रचनाएं भेज सकते हैं.
- भेजी गई रचनाओं में कुछ केवल डिजिटल संस्करण में ही प्रकाशित की जाती हैं. **Sarita.in** को भी देखते रहें.

सरिता के वार्षिक ग्राहक बनने के लिए **Subscribtion@ delhipress.in** पर ईमेल करें.
-संपादक

'ठीक है, बताओ,' अमित ने बात न बढ़ाने की मंशा से कहा.

'अमित, मैं चाहती हूं कि हम मम्मी और विशाल अंकल को लिव इन रिलेशनशिप में रहने के लिए राजी कर लेते हैं ताकि दोनों निश्चिंत और स्वच्छंद हो कर साथसाथ घूमफिर सकें,' शिवानी ने अपने मन की बात कह दी.

'मगर शिवानी, क्या मम्मी इस के लिए तैयार होंगी?' अमित ने संदेह व्यक्त किया.

'क्यों नहीं होंगी, वैसे भी आजकल दोनों छिपछिप कर एकदूसरे से मिल रहे हैं, मोबाइल पर घंटों बातें करते हैं. लिव इन रिलेशनशिप के लिए दोनों तैयार हो जाएंगे तो वे दुनिया से डरे बगैर खुल कर मिल सकेंगे, साथ में भी रह सकेंगे,' शिवानी ने अमित को आश्वस्त करते हुए कहा.

'इस के लिए मम्मी या विशाल अंकल से बात करने की मुझ में तो हिम्मत नहीं है बाबा,' अमित ने हथियार डालते हुए कहा.

'इस की चिंता तुम न करो, अमित. अपनी ही कालोनी में रहने वाली मेरी एक खास सहेली रेणु इस मामले में मेरी सहायता करेगी. वह इस प्रेम कहानी से भलीभांति वाकिफ भी है. हम दोनों मिल कर इस कार्य को जल्दी ही अंजाम दे देंगे. हमें, बस, तुम्हारी सहमति का इंतजार है,' शिवानी ने विश्वास के साथ यह कहा तो अमित की व्यग्रता कुछ कम हुई.

उस ने शांत स्वर में कहा, 'अगर मम्मी इस के लिए तैयार हो जाती हैं तो भला मुझे क्यों एतराज होगा. उन्हें अपनी जिंदगी अपने हिसाब से जीने का हक तो है न.'

अमित की सहमति मिलते ही शिवानी और रेणु अपने मिशन को अंजाम देने में जुट गईं. शिवानी को यह विश्वास था कि पार्वती और विशाल अंकल पुराने जमाने के जरूर हैं मगर उन्हें आधुनिक विचारधारा से कोई परहेज नहीं है. दोनों बहुत ही फ्लैक्सिबल हैं और परिवर्तन में यकीन रखते हैं. एक संडे को शिवानी और रेणु गुलाब के फूलों के एक सुंदर गुलदस्ते के साथ विशाल अंकल के घर पहुंच गईं.

विशाल कुमार ने अपने चिरपरिचित मजाकिया स्वभाव में उन का स्वागत करते हुए कहा, 'वाह, आज सूरज किस दिशा में उदय हुआ है, आज तो आप दोनों के चरण कमल से इस गरीब की कुटिया निर्मल हो गई है.'

शिवानी और रेणु ने औपचारिक बातें समाप्त करने के बाद मुख्य बात की ओर रुख किया. रेणु ने कहना शुरू किया, 'अंकल, आप की और पार्वती मैडम की दोस्ती से हम ही नहीं, पूरी कालोनी वाकिफ है. इस दोस्ती ने आप दोनों का अकेलापन और एकांतवास खत्म कर दिया है. कालोनी के लोग क्या कहेंगे, यह सोच कर अकसर आप दोनों छिपछिप कर मिलते हैं. अंकल, हम चाहते हैं कि आप दोनों औफिशियली एकदूसरे से एक नया रिश्ता बना लो और दोनों खुल कर दुनिया के सामने आ जाओ...'

कुछ गंभीर बने विशाल कुमार ने बीच में ही पूछा, 'मैं समझा नहीं, रेणू. तुम कहना क्या चाहती हो?'

'अंकल, आप और पार्वती मैडम 'लिवइन रिलेशनशिप' बना लो, फिर

एक साथी का साथ हर उम्र में जरूरी है

इस तरह के विषयों के सही उत्तर पाने के लिए सरिता नियमित पढ़िए. सरिता के वार्षिक ग्राहक बनिए. रजिस्टर्ड डाक से सुरक्षित डिलीवरी. Subscription.mag@delhipress.in पर ईमेल भेजिए या 08588843408 पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर पूरी जानकारी लें.

''वाह, आज सूरज किस दिशा में उदय हुआ है,'' शिवानी और रेणू को देख कर विशाल कुमार बोले.

आप को दुनिया का कोई डर नहीं रहेगा. आप कानूनीरूप से दोनों साथसाथ रह सकते हैं और घूमफिर सकते हैं,' यह कहती हुई शिवानी ने लिवइन रिलेशनशिप के बारे में विस्तृत जानकारी विशाल अंकल को दे दी.

विशाल अंकल इस के लिए तुरंत राजी होते हुए बोले, 'यह तो बहुत अच्छी बात है. दरअसल मेरे और पार्वती के बीच अब तो अच्छी कैमिस्ट्री बन गई है. हमारे विचारों में भी बहुत समानता है. हम जब भी मिलते हैं तो घंटों बातें करते हैं. पार्वती को हिंदी साहित्य की अकूत जानकारी है. उस ने अब तक मुझे हिंदी की कई प्रसिद्ध कहानियां सुनाई हैं.'

'अंकल, अब पार्वती मैडम को लिवइन रिलेशनशिप के लिए तैयार करने की जिम्मेदारी आप की होगी.'

'यस, डोंट वरी, आई विल डू इट. मगर जैसे आप दोनों ने मुझ से बात की है, वैसे एक बार पार्वती से भी बात कर लो तो ज्यादा ठीक होगा, बाकी मैं संभाल लूंगा.'

विशाल अंकल को धन्यवाद दे कर शिवानी और रेणु खुशीखुशी वहां से विदा हुईं. अगले संडे दोनों ने पार्वती से बात की. पहले तो उन्होंने ना नू, ना नू किया, मगर शिवानी और रेणु जानती थीं कि पार्वती दिल से विशाल कुमार को चाहती हैं और वे इस रिश्ते के लिए न नहीं कहेंगी, फिर उन दोनों की बेहतर कन्विन्सिग स्किल के सामने पार्वती की ना कुछ ही समय के बाद हां में बदल गई.

शिवानी ने दोनों की 'लिव इन रिलेशनशिप' की औपचारिक घोषणा के लिए एक दिन अपने घर पर एक छोटी पार्टी रखी थी, जिस में अमित, शिवानी और विशाल कुमार के बहुत करीबी दोस्त ही आमंत्रित थे. विशाल और पार्वती ने एकदूसरे को अंगूठियां पहना कर इस नए रिश्ते को सहर्ष स्वीकर कर लिया.

"अरे अमित, कहां खो गए हो, अपनी मम्मी और नए पापा को केक तो खिलाओ," शिवानी ने चिल्ला कर यह कहा तो अमित अतीत से वर्तमान में लौटा.

इस नए रिश्ते को देख अमित की नम आंखों में भी हंसी चमक उठी. ●

कहानी

धूप का एक टुकड़ा

• डा. रंजना जायसवाल

उम्र की ढलान पर मनोज की पत्नी लता कैंसर के कारण दुनिया से चली गई तो मनोज के लिए अकेले जीना दुश्वार लग रहा था. इसी बीच पड़ोसी विधवा अनुपमा से मिलना उन्हें एक सहारा लगा लेकिन बेटी अनु की ओछी सोच आड़े आ गई. फिर क्या हुआ...

सर्द गुलाबी सुबह. बगीचे में पड़ी लकड़ी की बैंच और उस पर नटखट सा लुकाछिपी खेलता धूप का एक टुकड़ा. मखमली हरी दूब में मोती सा चमकता, लरजता ओस का एक कतरा. ऐसा लगा मानो ओस को अपने माथे पर मुकुट सा सजाए वह दंभ से इठला रहा हो. पर, शायद वह यह नहीं जानता था कि उस का यह दंभ क्षणभर का है. धूप का वह टुकड़ा, जी हां, धूप का वही टुकड़ा, जो अब तक लकड़ी की बैंच पर अपने पांव पसार चुका था, अपनी आगोश में धीरेधीरे उसे भर लेगा और वह धीरेधीरे पिघल कर धुआं बन कर अस्तित्वहीन हो जाएगा. जाड़े के दिनों में, इंसान हो या पंछी, सब को कितना लालची बना देता है धूप का एक टुकड़ा.

गोरैया का एक जोड़ा बैंच के एक सिरे पर अपने पंख पसारे चहचहा रहा था. ठंड से ऐंठती अपनी लंबीलंबी उंगलियों को मनोज पूरी ताकत से हथेलियों के बीच रगड़ कर गरम करने की कोशिश कर रहे थे.

मनोज, 58–60 साल की उम्र, सरकारी नौकरी करते थे. बालों में सफेद चांदनी मुंह चिढ़ाने लगी थी. नौकरी के दोचार साल ही रह गए थे. कैसा भी मौसम हो, पर मनोज पार्क आना न भूलते. पार्क की नरमनरम घास, क्यारियों में लगे रंगबिरंगे फूल उन्हें हमेशा से आकर्षित करते थे. लता अकसर चुटकी लेती थी... टहलने ही जाते हैं न...

और मनोज मुसकरा कर रह जाते. जैसेजैसे ठंड बढ़ती जा रही थी, पार्क में आने वालों, खासकर बुजुर्गों की संख्या घटती जा रही थी.

मनोज ने पार्क में 4 चक्कर लगाए और वहीं लकड़ी की एक बैंच पर बैठ गए. क्यारियों में लगे रजनीगंधा, गुलदाउदी और गेंदे के खिलेअधखिले फूल और धूप के एक टुकड़े के धीरेधीरे बढ़ते कदम को अपनी ओर आता महसूस कर खिलखिलाने लगे थे.

काश, आज लता जिंदा होती. कितनी तलब हो रही थी उसे. जाड़े की गुलाबी ठंड, गरमागरम आलूमटर की घुघरी, अदरक व कालीमिर्च की चाय और, बस, धूप का एक छोटा टुकड़ा. पर, अब लता

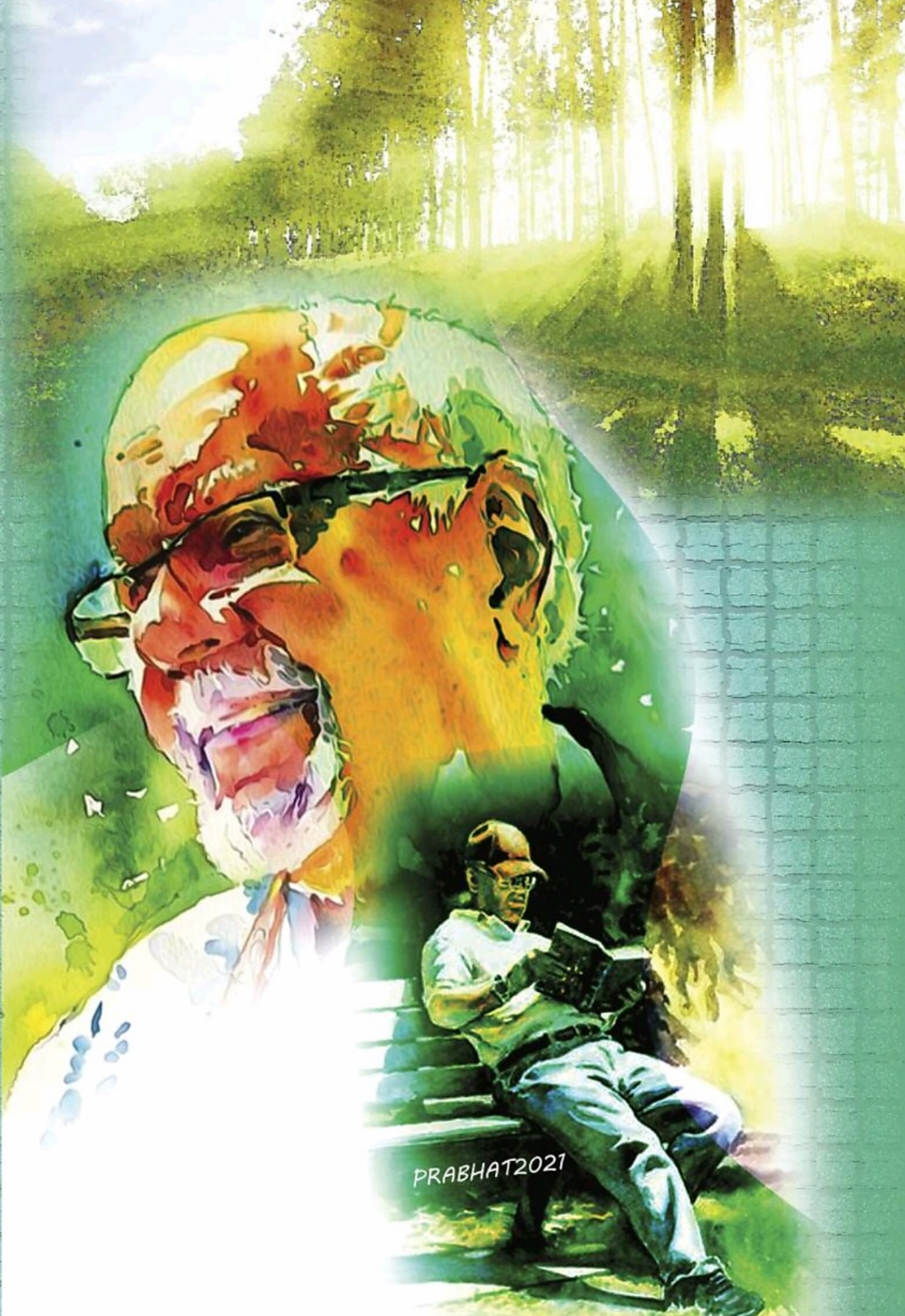
PRABHAT2021

कहां, वह तो उन्हें छोड़ कर कब की चली गई थी. दूर, बहुत दूर उन सफेद बादलों के पार. उसे सफेद रंग कितना पसंद था. साड़ी की दुकान पर उस की निगाहें सफेद साड़ी या सूट को ही ढूंढ़ती रहतीं.

'लता, सुहागिन स्त्री को सफेद रंग नहीं पहनना चाहिए,' मां हमेशा कहती थी, 'अपशकुन होता है.'

...और वह खिलखिला कर हंस पड़ती, 'आप भी न, किस जमाने की बात करते हैं. यह तो ऐसा रंग है जो सारे रंगों को खुशीखुशी, हंसतेहंसते स्वीकार लेता है. जीवन भी कुछ ऐसा ही तो है.

'चिंता न करिए, देख लीजिएगा, आप से पहले मैं ही जाऊंगी इस दुनिया से वह भी सुहागन. यह शगुनअपशकुन कुछ नहीं होता.'

और मनोज मुसकरा कर रह जाते.

'ये तुम्हें कैसे पता कि कौन पहले जाएगा?'

'चलिए शर्त लगाते हैं. अगर आप जीते तो आप जो कहेंगे, मैं वो करने को तैयार हूं. और अगर मैं जीती तो आप मुझे मौल से वही साड़ी दिलाएंगे, जो पिछली बार शोरूम पर देखी थी.'

लता जब भी शर्त जीतती, तो बच्चों की तरह खुश हो जाती. उस की खुशी की खातिर मनोज कई बार जानबूझ कर भी हार जाते, पर न जाने क्यों, इस बार वे उसे जीतने नहीं देना चाहते थे. लेकिन हमेशा की तरह वह इस बार भी जीत गई.

मनोज यादों के अथाह सागर में डूबते चले गए. सूरज अपनी पूर्ण लालिमा के साथ अवसान के लिए तत्पर था और शायद कहीं उस के भीतर भी बहुतकुछ डूब रहा था. घाट की सीढ़ियों पर बैठे मनोज को घंटों हो गए थे. दिल में कुछ टूट सा रहा था. आंखों से आंसू सारे बंधन तोड़ कर बाहर निकलने को बेचैन हो रहे थे. हाथ में पकड़े उस अस्थिकलश को बारबार विसर्जित करने की कोशिश नाकाम हो रही थी. मनोज हर बार अपनेआप को एकत्र करते उस को अपनेआप से पूर्ण रूप से मुक्त कर देने के लिए जिस ने हर परिस्थिति में उस का साथ दिया. लेकिन मनोज चाह कर भी ऐसा नहीं कर पा रहे थे.

कैंसर से जूझती लता की शिथिल देह, पलकों से विहीन उस की कातर दृष्टि जैसे बारबार मनोज से कह रही हो, 'जाने दो मुझे, अब तो जाने दो...'

कंकाल हो चुके उस शरीर में जब नर्स अपने बेरहम हाथों से सुई चुभोती थी, लता की आंखों के कोर आंसुओं से भीग जाते.

मनोज दर्द और वितृष्णा से मुंह फेर लेते, पर मनोज की खातिर लता एक बेजान सी मुसकान बिखेर देती और मनोज भी उस का साथ देने के लिए मुसकरा देते.

उस से हमेशा के लिए अलग हो जाने के विचार मात्र से ही मनोज का मन सिहर उठा. बेबसी से मनोज ने मुट्ठियां भींच लीं और आंखें बंद कर लीं.

मनोज अपनी आंखों से उसे विदा होते नहीं देख सकते थे. लता का मोह मनोज को बारबार अपनी ओर खींच रहा था. पर वह फिर से शर्त जीत गई थी. अस्पताल ने उसे उस के पसंदीदा रंग में लपेट कर मनोज के हाथों में सौंपा था. देखा, कहा था न, तुम से पहले जाऊंगी. मैं फिर अब हमेशा की तरह जीत गई न. लता के चेहरे पर एक सुकून था. शायद

यह सुकून उस के एक बार फिर से जीत जाने का सुकून था.

लता ने कितनी बार कहा था कि छोड़ दो मुझे. अब तो जाने दो, पर मनोज उस की स्मृतियों को अपने से दूर नहीं करना चाहते थे परंतु... इस परंतु का उत्तर मनोज के पास नहीं था.

मनोज ने दर्द से अपनी आंखें बंद कर लीं और मिट्टी के घड़े व अपनी स्मृतियों को गंगा के शीतल जल में प्रवाहित कर दिया.

मनोज ने अपनेआप से कहा... अब मैं कैसे रहूंगा उस के बिना, वह दूर जा रही है मुझ से... दूर बहुत दूर...

मनोज उस कलश को अपने से दूर नहीं करना चाहते थे. परंतु अंतहीन बेबसी, अप्रत्याशित बेचारगी, अकल्पनीय असहायता और अनंत प्रतिबंधनों की असंख्य भुजाओं ने किसी औक्टोपस की भांति मनोज को जकड़ लिया था. अदृश्य सा कोई था जो मनोज को न चाहने पर भी लता से दूर कर देना चाहता था. संस्कार या भौतिक मजबूरियां... मनोज तय नहीं कर पा रहे थे. घबरा कर मनोज ने अपनी आंखें बंद कर लीं और उन के हाथों ने यंत्रवत मिट्टी के उस घड़े व स्मृतियों के समंदर को गंगा के शीतल और पावन जल में बहा दिया था.

मनोज अनुपमा को चुपचाप देखते रह गए. अकेलापन जाति, धर्म या लिंग का कभी भेदभाव नहीं करता. अनुपमा की हालत भी तो कुछ उस की तरह ही तो थी. बेखयाली में भी जिस का खयाल कभी नहीं भूलता, शायद उसे ही जीवनसाथी कहते हैं.

लता के अवशेष और फूल बहते हुए पानी की धारा के साथ आगे बहते चले गए और मनोज की आंखों से ओझल हो गए. मनोज भरेमन से चलने को उठे पर घाट की सीढ़ियों पर खरपतवार में एक फूल अटक गया था और शायद कहीं मनोज का मन भी... रोक लो मुझे, मत जाने दो... अब तो सिर्फ उस की यादें ही रह गई थीं. लता की याद करतेकरते मनोज की आंखें कब भर आईं, पता ही न चला.

तभी एक मीठी सी आवाज कानों में रस सा घोल गई, "क्यों, भाभीजी की याद आ रही है क्या?"

अनुपमा, सरकारी स्कूल से प्रधानाचार्य के पद से कुछ साल पहले ही रिटायर हुई थीं. पति की कुछ साल पहले सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी. वर्षों का आनाजाना था. एकदूसरे के सुखदुख के साथी. नियति ने दोनों के जीवनसाथी को छीन लिया था. मनोज की 2 बेटियां ही थीं. दोनों ही शादी कर के अपने घर चली गई थीं. अनुपमाजी का एक ही बेटा था, जो बेंगलुरु में अपने परिवार के साथ रहता था.

"अनुपमाजी कैसी हैं आप?"

"बिलकुल ठीक, आप बताइए?"

"मैं भी, लगता है चश्मे का पावर बढ़ गया है. चश्मा चैक कराना पड़ेगा."

अनुपमाजी मंदमंद मुसकराने लगीं, बोलीं, "मनोज, पावर नहीं, आंखें पोंछिए. सब साफसाफ दिखने लगेगा."

मनोज झेंप से गए. क्या सोचेंगी मिसेज शुक्ला... उन्होंने झट से रूमाल निकाला, आंसू गाल तक ढुलक आए थे.

"भाभीजी की याद आ रही थी क्या?"

PRABHAT2021

लता का मोह मनोज को बारबार अपनी ओर खींच रहा था, मनोज उस की स्मृतियों को अपने से दूर नहीं करना चाहते थे.

"हम्म..."

"आप को नहीं आती महेश भाईसाहब की?"

एक अजीब सी मुसकराहट अनुपमा के चेहरे पर तैर गई, "मनोजजी, जवानी में घरपरिवार की जिम्मेदारी निभातेनिभाते खुद के लिए कभी समय ही न मिला. उम्र के जिस पड़ाव पर हूं, वहां दिलों में भावों के उफानों को एक ठहराव सा मिल जाता है. अब तितलियों के पीछे भागने, शहर के नुक्कड़ पर चटपटे गोलगप्पे और किसी फिल्मी हीरोइन के द्वारा पहने गए कपड़ों को सब से पहले खरीदने की होड़ नहीं रहती. अब तो अपने बच्चों को आगे बढ़ते हुए देखने का एक अजीब सा सुकून है, उन के साथ टेढ़ेमेढ़े मुंह बना कर तसवीरें खिंचवाने की खुशी है.

"जब तक ये थे तो कभी आंखों के आसपास उभर आई आढ़ीतिरछी रेखाओं को सौंदर्य प्रसाधनों से छिपाने की पुरजोर कोशिश रहती थी, तो कभी बगल वाली मिसेज कंचन की अपेक्षा अपनेआप को फिट और स्लिम दिखाने की कवायद जारी रहती थी. पति के ताने जो कभी दिल को चीर देते थे कि दिनभर करती क्या हो, बिस्तर पर फैला भीगा तौलिया, यहांवहां बेकदरी से पड़े जूतेचप्पलें, बच्चों की चिल्लपों और उन की फरमाइश पूरी करने वाले हाथ अब उन आवाजों को सुनने के लिए बेकरार रहते हैं.

"पर अब कहीं कुछ खोया सा महसूस होता है. इन के जाने के बाद जीवन खाली सा हो गया है. ऐसा नहीं कि मैं अपने वर्तमान से संतुष्ट या खुश नहीं हूं, पर उम्र के इस पड़ाव पर अतीत के अरमान, वे सपने जिन्हें हम कहीं बहुत पीछे छोड़ आए थे, मुझे दोबारा पुकारने लगे हैं. कभी आईने के सामने खड़ी होती हूं, तो अपना ही चेहरा अनजाना सा लगता है. आज एक बार फिर, उम्र के इस पड़ाव पर अपनेआप से दोबारा मिलने की ख्वाहिश है."

मनोज अनुपमा को चुपचाप देखते रह गए. अकेलापन जाति, धर्म या लिंग का कभी भेदभाव नहीं करता. अनुपमा की हालत भी तो कुछ उस की तरह ही तो थी. बेखयाली में भी जिस का खयाल कभी नहीं भूलता, शायद उसे ही जीवनसाथी कहते हैं. मनोज की नजर कलाई पर बंधी घड़ी पर अचानक ही चली गई, "ओह, आज तो बहुत देर हो गई. अनुपमाजी चलता हूं."

"अरे मनोजजी, क्या हुआ? आप यों अचानक क्यों उठ गए? आज तो रविवार है? फिर."

"ओह, हां, मैं तो भूल ही गया था."

"अब उठ ही गए तो चलिए आप को

एक बढ़िया सी अदरक वाली चाय पिलाती हूं."

चाय की कितनी तलब हो रही थी मनोज को, मनोज को तो मानो मुंहमांगी मुराद मिल गई, पर वे बोल पड़े, "अरे, आप क्यों परेशान हो रही हैं? राम सिंह एक घंटे में आ ही जाएगा. फिर कभी..."

"फिर कभी क्यों, उस के लिए भी मुहूर्त निकालना पड़ेगा. आप के बहाने मैं भी पी लूंगी."

मनोज अब चाह कर भी मना नहीं कर पाए. "आप मानेंगी नहीं. आप चाय चढ़ाइए, मैं तब तक गीजर औन कर आऊं."

एक दीवार का फासला ही भर तो था दोनों घरों में. कुदरत ने दोनों घरों का भविष्य जाने क्यों एकजैसा लिख दिया था. एक सा दर्द, एक सा खालीपन, एक सा ही सूनापन.

"मनोजजी, चाय ठंडी हो रही है. कहां रह गए आप?" अनुपमा ने गेट से आवाज लगाई.

"आ रहा हूं अनुपमाजी. बस एक मिनट," मनोज ने दरवाजे पर कुंडी चढ़ाई और अनुपमा के घर की ओर चल दिए.

"कहां रह गए आप? ठंड की वजह से चाय भी ठंडी हो गई है. रुकिए, एक मिनट में गरम कर के लाती हूं."

"जाने दीजिए, मैं पी लूंगा."

"अरे, ऐसे कैसे? मैं हूं न."

"वो असल में, निक्की का फोन आ गया था. बस, उस से बात करने में वक्त लग गया. वह तो अभी और बात करने के मूड में थी. वैसे तो जल्दी फोन करती नहीं. जब करती है तो जल्दी रखती नहीं. वह तो उस से कहना पड़ा कि तेरी आंटी चाय बना कर इंतजार कर रही हैं, फोन रख, बाद में बात करते हैं," कह कर मनोज मुसकराने लगे.

"अनुपमाजी, यह रहा आप का डब्बा. मजा आ गया गाजर का हलवा खा कर."

"पसंद आया आप को."

"हां बिलकुल, लता भी बहुत अच्छा हलवा बनाती थी."

"आप को शायद पता नहीं, मैं ने हलवा बनाना उसी से सीखा था."

"अरे वाह, तभी आप के हाथ का हलवा खा कर मुझे लता की याद आ गई."

मनोज लता को याद कर भावुक हो गए. अनुपमा चाय गरम करने के लिए अंदर चली गई. एक जानीपहचानी सी खुशबू से मनोज की तंद्रा टूट गई.

"अरे वाह, घुघरी... अनुपमाजी, आप को विश्वास नहीं होगा, आज मुझे घुघरी खाने का बहुत मन कर रहा था."

"वाह, लीजिए आप की इच्छा पूरी हो गई. बातें तो होती रहेंगी. पहले अब आप गरमागरम घुघरी का आनंद लीजिए."

मनोज गरमागरम घुघरी और अदरक वाली चाय के स्वाद में डूब गए. अनुपमा ने डब्बे को उठाया, तो उन्हें कुछ भारी सा लगा.

"मनोजजी, इस डब्बे में कुछ है क्या?"

"वो चौक की तरफ गया था, तो दुकान पर चिक्की मिल रही थी. सोचा, आप के लिए भी ले लूं. आप के ब्लडप्रैशर की दवा का पत्ता भी उसी में रखा है."

"मनोजजी, आप क्यों परेशान होते हैं, मैं मैनेज कर लेती."

"इस में परेशान होने जैसा क्या है. इस लौकडाउन में आप ने मदद न की होती तो मैं तो भूखे मर जाता."

"ऐसा कुछ भी नहीं है, पड़ोसी ही

पड़ोसी के काम नहीं आएगा, तो फिर कौन आएगा. सच कह रहे हैं मनोजजी, इस लौकडाउन ने जीवन की सचाई से सामना करा दिया कि कौन कितने काम आएगा. जो अपने थे वे झांकने तक न आए कि जिंदा भी हूं या फिर... बस, एक फोन घुमा दिया... ठीक हो न. किसी चीज की जरूरत तो नहीं श्यामजी का बेटा अमेरिका से आ कर अपने मांबाप को ले कर चला गया और यहां बेंगलुरु से कोई झांकने तक... खैर छोड़िए, निक्की और अनु कैसे हैं? आप को नौकरी से वौलंटियरी रिटायरमैंट ले लेना चाहिए. अब तो लताजी भी नहीं रहीं."

"सोचा था कि रिटायरमैंट के बाद लता के साथ सारी दुनिया घूमूंगा, पर लता मुझे छोड़ कर किसी और दुनिया में चली गई. घर के एकएक कोने में उस की खुशबू है जो उस के साथ होने का एहसास दिलाती है. उसे छोड़ कर जाना."

"सच कह रहे हैं मनोजजी. दीपू भी कितनी बार कह चुका है कि बेंगलुरु आ जाओ. अब तो पापा भी नहीं रहे, नौकरी तो सिर्फ एक बहाना थी. अपनी जड़ों को छोड़ कर जाना इतना आसान नहीं."

एक अजीब सा गहरा सन्नाटा दोनों के बीच पसर गया. इंसान को जिस उम्र में जीवनसाथी की सब से ज्यादा जरूरत होती है, उस उम्र में वे दोनों ही अकेले और अधूरे थे.

"कहां थे, पापा? मैं 2 बार फोन कर चुकी हूं. आप फोन ही नहीं उठा रहे. मैं तो घबरा ही गई थी."

"अरे वह कुछ नहीं. फोन चार्जिंग में लगा था. तुम्हारी अनुपमा आंटी ने चाय पर बुला लिया. बस, अभीअभी तेरी मिस्डकौल देखी."

"कैसी हैं वह, अंकलजी के जाने के बाद तो बिलकुल ही अकेली पड़ गई हैं वह. दीपू के पास क्यों नहीं चली जातीं?"

"मैं ने भी कई बार उन से कहा, पर महेशजी की यादों को छोड़ कर जाना इतना आसान नहीं."

"क्या पापा, आप भी... आप की पीढ़ी का समझ ही नहीं आता, आप से भी कितनी बार कहा कि नौकरी छोड़िए, मेरे या निक्की के पास आ जाइए, पर पता नहीं उन दीवारों से कैसा मोह है आप का कि आप वहां से आना ही नहीं चाहते."

मनोज मुसकरा कर रह गए. क्या कहते उन दीवारों में तेरी मां की यादें, तुम दोनों बच्चों के बचपन की न जाने कितनी बातें छिपी हैं.

"तू नहीं समझेगी, जब तू मेरी उम्र में पहुंचेगी, तब शायद तुझे समझ में आएंगी मेरी बातें."

"पापा, कई दिनों से मैं और निक्की आप से एक बात कहना चाहते थे,"

"बोलो, मैं सुन रहा हूं."

मनोज भी कई दिनों से यह महसूस कर रहे थे कि निक्की और अनु शायद उन से कुछ कहना चाह रही हैं. दोनों के फोन आजकल लगभग रोज ही आने लगे थे. लता के जाने के बाद तो वे दोनों नियमित ही फोन करती थीं. फिर धीरेधीरे वे अपनी घरगृहस्थी की जिम्मेदारियों में ऐसी उलझ गईं कि महीने में दोतीन बार ही फोन कर पातीं.

"पापा, मम्मी के जाने के बाद आप बिलकुल अकेले हो गए हैं. कोरोना के चक्कर में घर से निकलना भी मुश्किल है, वरना हम दोनों में से कोई न कोई आप को जरूर लेने आ जाता."

"हम्म.." मनोज सोच रहे थे. आएदिन पार्टियों की फोटो सोशल

नैटवर्क पर दिखती ही रहती हैं, पर पिता के लिए 300 किलोमीटर से आने के लिए कोरोना का बहाना.

"वैसे भी आप को कोई दिक्कत नहीं है, अनुपमा आंटी तो हैं ही."

मनोज ने एक अजीब सी कड़वाहट अनु की आवाज में महसूस की. बोले, "सच कह रही हो. तुम्हारी अनुपमा आंटी ने इस लौकडाउन में बहुत मदद की है. राम सिंह भी 3 महीने के लिए अपने गांव चला गया था. तू तो जानती है कि तेरी मां जब तक थीं, तब तक कभी चौके में झांका भी नहीं पर इन 3 महीनों में दालरोटी का भाव पता चल गया."

"वह तो देख ही रही हूं. अनुपमा आंटी किसी न किसी बहाने घर में घुसी ही रहती हैं. कभी वह तो कभी आप."

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"पापा, इस उम्र में ये सब... आप ने सोचा है कि मेरे पति को अगर पता चला तो वे... वे क्या सोचेंगे."

मनोज सन्नाटे में आ गए. उन की छोटी सी अनु आज इतनी बड़ी हो गई. नर्स ने छोटी सी अनु को जब उस के हाथों में दिया था... एक बार लगा था कि उस की सारी दुनिया हाथों में सिमट आई हो.

"हैलो... हैलो, पापा आप सुन रहे हैं न."

"हम्म... बोलो."

"पापा, क्या अच्छा लगता है इस उम्र में ये सब... जानती हूं कि मम्मी के जाने के बाद आप बिलकुल अकेले पड़ गए हैं. आप को एक साथी की जरूरत है जिस से आप अपने दिल की बात कह सकें, बांट सकें, पर इस तरह से," मनोज चुपचाप अनु की बात सुनते रहे.

सीखना

यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि सीखने की कोई सीमा नहीं है और सीखना कभी रुक नहीं सकता, चाहे आप की उम्र जो भी हो. *–क्रिस्टियानो रोनाल्डो*

"अनु, एक बात कहूं, दुनिया हमें वैसी ही दिखती है, जैसे हम देखना चाहते हैं."

"आप कहना क्या चाहते हैं पापा?"

"तुझे याद है, जब तू ने कालेज जौइन किया था... कभी वर्कशौप तो कभी असाइनमैंट, तो कभी एक्स्ट्रा क्लास के नाम पर तू देररात तक विशाल के साथ लौटती थी."

"तो..."

"तेरी मां ने एक बार तुझे टोका भी था कि यों लड़के के साथ देररात तक काम करना कहां तक सही है. तब तुम ने अपनी मां से कहां था, 'मां, किस जमाने की बात कर रही हो. आजकल लड़केलड़कियां साथ काम करते हैं, पढ़ते हैं और एंजौय करते हैं. आप भी न, वी आर जस्ट फ्रैंड. कुछ सालों बाद तुम ने उसी विशाल से शादी भी कर ली."

"पापा..."

"अनु, तुम्हारी शादी से मुझे कोई गुरेज नहीं था, पर तुम्हारी यह पीढ़ी कब एडवांस हो जाती है, कब बैकवर्ड, समझ नहीं आता."

"पापा, आप समझ नहीं रहे. राम सिंह क्या सोचता होगा. आप ने सोचा है एक बार भी. कितने मजे ले कर बताता है मुझे."

"हम्म... एक वक्त था, जब तेरे पापा तेरा गरुर थे. आज एक आदमी ने तुम्हारे उस वर्षों के विश्वास को पलभर में डिगा दिया. इतनी कमजोर है तुम्हारे विश्वास की नींव."

"नहीं पापा, ऐसा नहीं है."

"अनु, क्या एक औरत और आदमी के बीच सिर्फ एक ही संबंध हो सकता है... स्त्री और पुरुष का संबंध, सिर्फ जीवनसाथी के रूप में ही नहीं, साथी के रूप में भी हो सकता है. एक पुरुष का मित्र पुरुष तो हो सकता है, पर स्त्री नहीं. सुखदुख बांटने वाला कोई भी हो सकता है, पर हम और हमारा समाज स्त्रीपुरुष में ही उलझ कर रह जाता है.

इस जीवन में जीने के लिए तेरी मां की यादें ही काफी हैं. जहां तक तेरी अनुपमा आंटी की बात है, हां, उन के साथ मेरा रिश्ता है दर्द का रिश्ता, शुभचिंतक का रिश्ता... अकेलेपन का रिश्ता... और एक कप चाय का भी. मुझे पूरा यकीन है तुम्हारी अनुपमा आंटी का भी मुझ से बस इतना सा ही रिश्ता है."

"हम्म..."

"तुझे कुछ और पूछना है तो पूछ ले, दिल पर बोझ न रख."

"रखती हूं पापा. विशाल उठ गए हैं. उन की चाय का वक्त हो गया है."

मनोज न जाने क्यों अपनेआप को आज बहुत हलका महसूस कर रहे थे. पार्क में भी न जाने कितनी बार मनोज ने लोगों की आंखों में कुछ ऐसे ही सवाल उठते देखे थे, पर कुछ सवालों के जवाब नहीं होते... पर उठते जरूर हैं.

मनोज की नजर दीवार की तरफ चली गई. दीवार पर अपने पसंदीदा रंग में लता की तसवीर मुसकरा रही थी और वही खिड़की से झांकता धूप का टुकड़ा मनोज के साथ हमेशा की तरह अठखेलियां कर रहा था. ●

CHAMPAK
DELHI PRESS

चंपक पढ़ें →→→ आगे बढ़ें

चंपक की कहानियों के छपे सुंदर चित्र, जानकारी, रोचक कहानियों से याद रखने की आदत बनेगी.

स्क्रीनों की तसवीरें मन में टिकती नहीं हैं.

छपे चित्रों को काट कर सजा लें, खुद ही इन में सुंदर रंग भर लें. अपटूडेट रहें.

हवाई जहाज में हों, बस में हों या रेल में, हर समय चंपक सच्ची दोस्त.

चंपक पढ़ें, आगे बढ़ें.

ग्राहक बनने के लिए
Subscription@delhipress.in

ऐसा भी होता है

मेरी सहेली सुषमा के पड़ोस में एक बिष्ट परिवार था. आतेजाते मेरी भी जानपहचान उन से हो गई थी.

एक बार मैं ने उन के घर कुछ बिल्लियों और एक घायल कुत्ते को देखा तो मुझे लगा कि ये सब उन के पालतू होंगे. मैं ने उत्सुकतावश सहेली से कहा कि ऐसे कोरोना संक्रमण के वक्त कैसे इन्हें संभालती हैं बिष्ट भाभी. तब सहेली ने बताया कि ये जो छोटी बिल्लियां देख रही हो, ये रोड पर किसी वाहन के नीचे न आ जाएं और कुत्ते के ऊपर तो किसी ने गाड़ी चढ़ा दी थी तो वैसे ही घायल अवस्था में उसे वे डाक्टर के पास पहले ले गईं और अब घर पर ला कर उस के ठीक होने तक उस की सेवा करेंगी.

यही नहीं, अगर रास्ते में वे किसी जानवर को मरे हुए देखती हैं तो अपने वाचमैन को कुछ पैसे दे कर उस का विधिवत दाह संस्कार करती हैं.

मैं ने जिज्ञासावश उन से पूछा कि इस के बाद वे उन का क्या करती हैं, तब सुषमा ने बताया कि सबकुछ ठीक हो जाने के बाद वे जानवरों को ऐनिमल रेस्क्युअर को दे देती हैं और साथ ही देखरेख के लिए आर्थिक मदद भी करती हैं. इतना सुन कर मेरा दिल उन के प्रति सम्मान और श्रद्धा से भर गया.

दीपा सिन्हा (सर्वश्रेष्ठ)

मेरी कालोनी में एक सब्जी वाला रोज आता है. सुबहसुबह ही वह फेरी लगाना शुरू कर देता है. जैसे कि औरतों की आदत होती है, वे मोलभाव कर के उस से सब्जियां खरीदतीं. वह बोलता रहता कि बीबीजी, मंडी का भाव यह चल रहा है. मुझे भी तो दो पैसे कमाने हैं. लेकिन कई औरतें तो उस के बहुत कहने पर भी उसे कम पैसे दे कर, सब्जी ले कर चली जाती थीं.

मेरी यह आदत न थी. वह जितना भाव बोलता, मैं उतने में ही सब्जी ले लेती. मुझे लगता, गरीब आदमी है. इसे भी तो कमाना है, सच कह रहा है. मुझ से वह इतना खुश है कि रोज सुबह मुझे ताजा धनिया, कभी पुदीना, हरीमिर्च फ्री में दे कर जाता है. चाहे मैं उस से सब्जी लूं या नहीं. मैं सोचता हूं, औरतें इन्हीं सब के लिए झिकझिक करती हैं और ये मुझे फ्री में दे जाता है.

करुणा रस्तोगी ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.**

*अपना अनुभव **नाम** व **पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज/ औडियो** भी कर सकते हैं.*

08588843415

सरिता, बीस साल पहले,
अक्तूबर (प्रथम) 2001

वो बेचारा आदत का मारा

• सुजय कुमार

इंसान अपनी फितरत बदल नहीं सकता, चाहे वह अच्छी हो या बुरी. शंकर बेचारा करता भी क्या, उस का दिल दूसरों का दुखदर्द देख नहीं सकता था, इसीलिए उसे अपनी इस भलमनसाहत का खमियाजा भुगतना पड़ा.

मूसलाधार बरसात के साथसाथ सायंसायं करती तूफानी हवाएं भी थीं. ऐसे मौसम में औफिस का काम कैसे होता? 2 बजे ही सभी कर्मचारी निकल पड़े. केवल एक नवविवाहित रह गई थी, वह भी इसलिए कि उस का पति दूसरे औफिस में काम करता था. उस से संपर्क साधने की कोशिश घंटेभर से जारी थी. चपरासी बारबार खिड़की से बाहर झांकता और हर बार मायूसी की खबर उस महिला को सुनाता. अब नवविवाहिता की घबराहट और चिंता पहले से भी अधिक बढ़ गई थी, क्योंकि वह बारबार कांच के दरवाजे से बाहर का दृश्य देख रही थी.

नवविवाहिता के चेहरे से भय साफ झलक रहा था. तभी फोन की घंटी बज उठी, दौड़ कर उस ने रिसीवर उठाया.

"तुम वहीं रहो, मैं लेने आऊंगा," पति की आवाज सुन कर उसे ढाढ़स बंधा और चेहरे पर संतोष झलकने लगा.

शंकर को भी तसल्ली महसूस हुई. 2 घंटे से बैठा वह उस की परेशानी को बारीकी से देख रहा था.

'मुझे इस के बारे में अब चिंता करने की जरूरत नहीं है,' उस ने सोचा, 'मैं अब आराम से घर जा सकूंगा. पता नहीं वहां क्या हाल है?' सब 2 बजे चले गए. सब तो खुदगर्ज हैं, पर वह तो ऐसा नहीं है. आखिर इंसानियत भी कोई चीज है. एक महिला को इस स्थिति में छोड़ कर वह भला कैसे जाता?

इस में शक नहीं, वह न भी जाता तो औफिस का कोई और जानने वाला उसे घर पहुंचाने की जिम्मेदारी ले लेता,

लेकिन शंकर की आदत... उस का दिल कैसे मानता? दोबारा उसे सहीसलामत देखने तक यही चिंता घेरे रहती कि वह घर पहुंची है या नहीं. इस से बेहतर खुद रुक जाना ही है, यही सोच कर उस ने इस जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकारा था.

एक हाथ में टिफिन, दूसरे में छतरी लिए वह आगे बढ़ा. दरवाजा खोलते ही तेज तूफानी हवा का झोंका आया और उस के मुंह से सिसकी निकल गई. वह बोलनेसुनने की स्थिति में नहीं था.

चेहरे पर पानी की तेज बौछारें पड़ते ही लगा, मानो सांस रुक जाएगी. छाता खोलने का प्रयत्न नाकाम रहा. जबरदस्ती खोलने पर छाता उलटा हो गया.

सड़क पर इक्केदुक्के व्यक्ति भी छाता थामे आजा रहे थे. साइकिल सवार साइकिल थामे पैदल ही चल रहे थे. बहते पानी को चीरते हुए वह चलता रहा. ठंड के मारे कंपकंपी छूट गई. सड़क पर ट्रक, कार कुछ भी तो नजर नहीं आ रहे थे. न जाने सभी कहां गायब हो गए. हमेशा भीड़भरा यह रास्ता, जहां पैदल चलना मुश्किल होता है, आज... एकदम सुनसान, वीरान है. इन्हीं विचारों में डूबा वह घर पहुंच गया. दरवाजे पर खड़ी पत्नी बेसब्री से उस का इंतजार कर रही थी.

"अरे, यहां क्यों खड़ी हो?" आवाज में तेजी थी.

"तुम्हारे इंतजार में," भवानी ने कहा.

"यहां तक आने वाला भीतर नहीं आएगा क्या, इस बारिश में भीगना जरूरी है?"

"आप को क्या, घर बैठे कितनी चिंता होती है, तुम क्या जानो?"

"हाय, क्या बारिश है," कहते हुए शंकर घर में घुसा. पत्नी उस के लिए ही तो परेशान हो रही थी, यह जान कर उस की आवाज में नरमी आई.

"तूफानी हवाएं चल रही हैं न, टीवी में बतलाया था."

"अरे, बाहर जा कर देखो, क्या हाल है. कितने पेड़ जड़ से उखड़ कर गिर गए, कितने कंपाउंड, दीवारें धराशायी हो चुकी हैं. बाप रे, ऐसा विनाशकारी तूफान तो मैं ने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा."

"चलिए, हाथपांव धो लीजिए. गरम रोटी, बैंगन का भरता, चावल, दाल, सब तैयार है. खा कर जल्दी सो जाएंगे."

"वैरी गुड, अभी आया," कहता हुआ शंकर हाथमुंह धोने चला गया, पर उसे नहीं मालूम कि 'वैरी गुड' शब्द का इस्तेमाल उस ने क्यों किया. मनपसंद खाना बना है, इसलिए या खाने के बाद सोने की बात कही, इसलिए.

खाना समाप्त कर भवानी प्लेटें समेट बरतन साफ करने लगी. उन का वह घर काफी पुराना था. करीब सौ साल पुराना. उस समय लोगों के दिल बड़े थे, घर बड़ा था. इस बात की गवाही उस का वह पुराना घर दे रहा था.

राहगीरों के विश्राम के लिए बरामदा और बरामदे के आगे एक डेवढ़ी तथा डेवढ़ी को पार करते ही आंगन.

शंकर को वह घर कम किराए में मिल गया था. मकानमालिक की आर्थिक तंगी के कारण वह घर, जैसा बना था वैसा ही रह गया था, लेकिन बरामदे व डेवढ़ी के बीच ग्रिल डाला गया था.

मकानमालिक के पिता ने शायद यही सोच कर एक बड़ा दरवाजा लगा दिया था कि जानवरों व उठाईगीरों से रहने वालों की सुरक्षा हो सके. 'उस जमाने में

इस दरवाजे को लगाने के लिए करीब 200 रुपए खर्च हुए थे.' यह बात किराया वसूलते समय मकानमालिक बड़े गर्व से कहता.

शंकर ग्रिल व दरवाजा बंद करने पहुंचा था. अंधेरा काफी था. बत्ती जलाने के लिए बिजली का बटन दबाया तो पता चला, बल्ब फ्यूज हो चुका है. वह अंदाजे से चलने लगा. डेवढ़ी में बातचीत की हलकी ध्वनि सुनाई पड़ी. वह कान लगा कर सुनने लगा.

'तू नीचे सो जा. ग्रिल में टाट लगा दूं तो ठंड नहीं लगेगी और पानी की बौछारों से भी बच सकेंगे,' एक बूढ़ी औरत की आवाज थी.

'इतनी ठंड और नीचे सो जाऊं?' बूढ़े की आवाज सुनाई पड़ी.

'अरे, तुझे तकलीफ क्या है? थोड़ी जगह मिली, आराम करने को कहा तो बड़बड़ा रहा है. तेरे लिए पलंग, गद्दी लगेगी क्या?'

शंकर रास्ता तलाशते बाहर आया. सड़क किनारे के बल्ब जल रहे थे. उस की धीमी रोशनी में उस ने देखा, एक बुढ़िया फटे टाट से ग्रिल ढक रही थी. बूढ़ा कोने में सिमटा हुआ था. शरीर को अधूरा ढकती पुरानी शर्ट पहने हुए था. हड्डियों का ढांचा, खेत में पक्षियों को डराने के लिए खड़ा किया जाने वाला नमूना लग रहा था. उस की कंपकंपी रुकने का नाम नहीं ले रही थी.

"कौन है?"

बुढ़िया टाट छोड़ शंकर की ओर देखती हुई बोली, "सरकार... माईबाप, बाहर तेज बरसात है. रातभर के लिए ठिकाना दे दो. सुबह चले जाएंगे."

"कहां रहते हो तुम?"

"वह स्कूल है न, उस के पास वाले रिकशा स्टैंड में. बारिश से बचने के लिए स्कूल में रात गुजार लेते थे. आज वह भी टूट कर गिर गया. कहां जाते भैया, यहां आ गए. रात गुजारने दो, तड़के चले जाएंगे."

''माईबाप, जाने को मत कहना, बाहर की ठंड और बारिश में तो हम मर जाएंगे,'' बुढ़िया शंकर के सामने गिड़गिड़ाई.

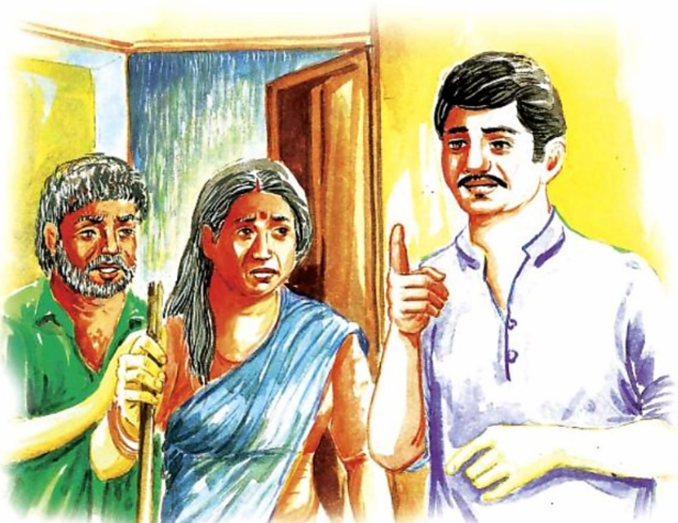

शंकर सोचता रहा, ये बूढ़े रातभर क्या यहीं सोएंगे? इस ठंड में तो ये अकड़ जाएंगे. बरसात का वेग कम होने का नाम नहीं ले रहा. तेज हवाओं का भी वही हाल है. ये बूढ़े रात यहां कैसे गुजारेंगे?

“यहां तो बहुत ठंड लगेगी,” शंकर ने कहा.

“माईबाप, जाने को मत कहना,” बुढ़िया गिड़गिड़ा उठी, “बाहर की ठंड और बारिश में तो हम मर जाएंगे.”

“अरे, डरो मत. मैं भेजूंगा नहीं. बाहर सोने की जरूरत नहीं. भीतर आ जाओ. बारिश और ठंडी हवा से बच सकोगे.”

बुढ़िया के चेहरे पर मुसकान फैल गई. उस ने दिल खोल कर आशीर्वाद दिया, “बेटा, तुम्हारा भला हो, बालबच्चे सुखी रहें.”

दोनों भीतर आ गए.

शंकर ने दरवाजा, ग्रिल सभी बंद किए. बुढ़िया भी एक कोने में टाट बिछा कर लेट गई. आंगन के एक कोने में पीपल का बड़ा हंडा रखा था. उस पर गिरती पानी की बूंदें अलग ध्वनि देतीं. शंकर बिस्तर पर आ कर लेट गया.

“अरे, तुम ने यह क्या किया? कर्ण के समान दानी व दिलदार बन गए. किसी राहचलते को घर में जगह दे दी. घर को धर्मशाला बना दिया. घर हमारा नहीं, किराए का है, इसलिए किसी को भी टिका लिया. अपना घर होता तो क्या ऐसा ही करते.”

“आजकल तुम्हें हो क्या गया है? कमाल करती हो. किराया हम देते हैं तो जगह हमारी ही हुई न. उन्हें एक रात सहारा दे दिया तो क्या गुनाह किया? उन से तो मैं कुछ ले नहीं रहा हूं. वह बुढ़िया क्या बोली, जानती हो?”

“क्या?”

“दिल खोल कर आशीर्वाद दिया. देखना, उस की दुआ जरूर लगेगी. हमारे बच्चे जरूर सुखी होंगे. चलो, बच्चों की तैयारी करें.”

“छी... तुम बड़े वो हो,” शरमा कर भवानी ने कहा और बत्ती बंद कर के वह भी शंकर के समीप आ कर लेट गई.

अगले दिन सुबह बरसात थम चुकी थी. शंकर ने बिस्तर पर पड़ेपड़े बाहर देखा. आसमान साफ था.

शंकर ने पास में सोई पत्नी को जगाया. वह हड़बड़ा कर उठ बैठी.

वह बाहर गई. क्षणभर में उस की चीख सुनाई दी, “अरे, यहां आओ तो, देखो न...”

शंकर घबरा कर बाहर की तरफ भागा, “क्या हुआ?”

“यहां रखा पीतल का हंडा गायब है. मेरी शादी में कानपुर वाली मौसी ने दिया था.”

शंकर ने दरवाजे की तरफ देखा. दरवाजा, ग्रिल, दोनों खुले थे. दरवाजा केवल भिड़ा रखा था. वह बाहर बरामदे में आया, इधरउधर देखा और फिर थके कदमों से भीतर आ गया.

“बड़े कर्ण बने थे. देखी उन की करतूत? उस में नहाने के लिए पानी गरम करती थी. आज भी 2-3 सौ रुपए से कम क्या होगा. आप ने उन का भला किया और वे चूना लगा कर चले गए.”

“जाने भी दो, भवानी. अब वह बरतन वापस मिलने से रहा. हमारे लिए गरम पानी का साधन, उन के लिए भूख शांत करने का साधन...” लंबी सांस लेते हुए शंकर ने कहा.

सांप डसेगा ही, बिच्छू काटेगा ही... और गरीब अपनी भूख शांत करने के लिए ऐसी हरकतें करेगा ही. ●

दिल्ली प्रैस

सरिता 'युवा नारायणी' पुरस्कार 2021-22

श्रीमती कुसुम नारायण (1931-2015) ने नारायणी के नाम से 150 से ज्यादा कहानियां हिंदी की पत्रिकाओं में लिखीं. अधिकतर कहानियां दिल्ली प्रैस की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं. श्रीमती कुसुम नारायण के परिवार के अनुरोध पर उन की स्मृति में दिल्ली प्रैस की पत्रिकाओं सरिता, गृहशोभा, मुक्ता द्वारा हर वर्ष 'युवा नारायणी पुरस्कार' दिया जाता है.

कुछ नए नियमों के साथ नारायणी पुरस्कार की हकदार इस वर्ष लेखिकाओं की उम्र 35 वर्ष तक होनी चाहिए.

इस नारायणी पुरस्कार शृंखला के अंतर्गत नई युवा उभरती लेखिकाओं को मौका दिया जा रहा है कि वे लेखन प्रतियोगिता का हिस्सा बन कर अपनी नई सोच, नए मापदंडों, नए आदर्श कहानी के माध्यम से उजागर करें. उन के प्रयास को लोगों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी दिल्ली प्रैस की पत्रिकाओं की है जो वर्षों से अपने पाठकों को नया दृष्टिकोण देने की क्षमता रखती हैं.

पुरस्कार
₹ 1,00,000
के नकद पुरस्कार

₹ 50,000 का
प्रथम पुरस्कार

₹ 10,000 के
3 द्वितीय पुरस्कार

₹ 5,000 के
4 अन्य पुरस्कार

नियम

- रचनाएं केवल मेल से भेजी जाएं. कहानी के पहले पृष्ठ पर 'युवा नारायणी पुरस्कार' शब्द लिखें.
- पुरस्कृत लेखिकाओं को पत्रिकाओं द्वारा सूचित किया जाएगा.
- इस बारे में संपादक का निर्णय अंतिम होगा.
- विस्तृत नियम जानने के लिए एक ब्लैंक मेल editor.pratiyogita@delhipress.biz पर भेजें. आप को रिप्लाई में सभी लेखन संबंधी नियम मिल जाएंगे.

कहानियां सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, वैश्विक, प्रेम, विघटन, मनोवैज्ञानिक विषयों पर हो सकती हैं

अब अंतिम तिथि
30 नवंबर, 2021

कोविड के कारण अंतिम तिथि 4 माह बढ़ाई गई है

रचनाएं भेजने का ई मेल
editor.pratiyogita@delhipress.biz

कहानी

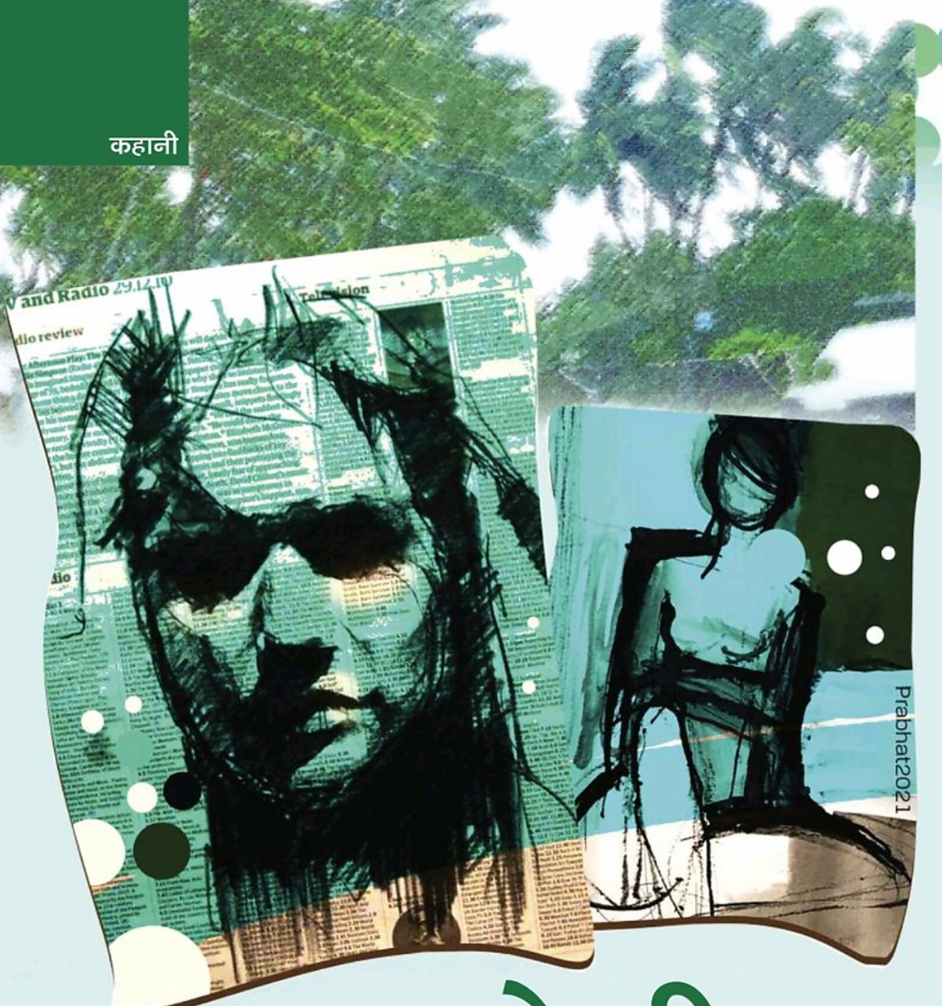
V and Radio 29.12.10
Television
dio review
Prabhat2021

खामोशी

• राघवेंद्र सैनी

जिंदगी की आपाधापी में कब 45 साल गुजर गए, पता ही न चला, जब पता चला तब तक सबकुछ पीछे छूट गया था. ऐसी कई यादें थीं जो मन को कचोट रही थीं.

धीरेधीरे चल कर मैं बाहर की बालकनी में आ कर बैठ गई. नवंबर का महीना है. ठंडी हवा चल रही है. बाहर खामोशी है. शायद तूफान आने वाला है. मैं शौल को ठीक से लपेट कर कुरसी पर बैठी हूं. अंधेरा घिर आया है. बालकनी की लाइट जलाने का मन नहीं हुआ. भीतर के तूफान को कैसे रोकूं, यह समझ नहीं आ रहा था.

जीवन की आपाधापी में पता ही न चला कि कब 45 साल बीत गए. उन का साथ छूट गया. कल ही उठाले के बाद सब चले गए थे. खामोशी काटने को दौड़ रही थी. भीतर के दुख से आंखों के कोर गीले हो गए थे.

मुझे आज भी याद है, जब मैं ब्याह कर आई थी. एक कमरे का घर, शौच भी बाहर जाना पड़ता था. परदा लगा कर नहाने की व्यवस्था थी, बाकी खाली मैदान था. पूरे प्लौट को घेरा भी नहीं गया था. वह भी बाद में पता चला उन की बहन और जीजे ने धोखे से अपने नाम करवा लिया था. कभी रही होगी कोई कड़वाहट, पर अब उन की कोई औकात न थी. मुझे भी पति के प्यार के अलावा कुछ नहीं मिला था. सेना में थे इसलिए कभी प्यार मिलता, कई बार सालोंसाल नहीं भी मिलता. परिवार ऐसा मिला, जिस ने उन को धोखे के अतिरिक्त कुछ न दिया था. वे बाहर सेना में रहे, उन को परिवार की धोखेबाजियों के बारे में पता नहीं था. वे कहते तो मैं उन पर यकीन नहीं कर पाती थी. कैसे कोई अपनी मां, बहनभाइयों के बारे में नहीं जानता था. इस के लिए हमेशा मैं ने उन्हें लताड़ा. वे सफाई देते रहे थे, पर मैं ने इसे कभी नहीं माना था. आज लगता है कि शायद वे ठीक कहते थे.

मेरे दहेज की बहुत सी चीजें चोरी हो गई थीं. मैं ने इस के बारे में उन्हें बताया, तो हैरान रह गए थे. उन को भी यकीन नहीं हुआ था कि घर में ऐसा हुआ है. फिर यकीन करना पड़ा था. कुछ सामान गांव में मिला था. कुछ बहन की बेटी के पास.

उन्होंने बड़े दुखी मन से कहा था, 'मैं ने यह कह कर बड़ी भारी गलती की थी कि मांबहन के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है. उन्हीं लोगों ने मुझे आप के पहले करवाचौथ पर आने नहीं दिया था, जिस का गम और मलाल तुम्हें आज तक है, शायद मुझे भी है. दोष तुम उन के साथसाथ मुझे भी दो. सारे फसाद की जड़ तो मैं था. मैं ही अपनों को समझ नहीं पाया था.

'मानता हूं, मेरा इतना दिमाग नहीं था. मैं ही बेवकूफ था, पर तुम तो समझदार थीं. तुम तो अपनी चीजें संभाल कर रख सकती थीं.'

'मुझे क्या पता था कि घर में ही चोर बैठे हैं. मैं ने तो सब को अपना समझा था. मुझे थोड़ा सा भी पता होता तो मैं ताले लगा कर रखती.' मैं ने जवाब दिया था.

'कोई बात नहीं. जो हो गया उस का कुछ नहीं हो सकता है. मैं ने क्वार्टर के लिए अप्लाई किया है. बहुत जल्दी मिल जाएगा. तब तक ताले लगा देते हैं.'

ताले लगाने का भी विरोध हुआ था. पर ये नहीं माने थे. क्वार्टर मिला तो फिर हम ने मुड़ कर नहीं देखा था. वह शहर

तक छोड़ दिया था. सेना से पैंशन पा कर दूसरे प्रदेश में बस गए थे.

ब्याह होने पर कितने चाव होते हैं. हम यह करेंगे, वह करेंगे. पर मेरा कोई चाव पूरा नहीं हुआ था. न किसी ने दुलार किया था और न प्यार. मैं तरसती रह गई थी. मैं ने इन से बात की थी, तो इन्होंने कहा, 'मैं तुम्हें उस दलदल से निकाल लाया हूं. सैटल होने में थोड़ा टाइम तो लगेगा ही.'

'मैं आप के प्यार की बात कर रही हूं. आप भी मुझे प्यार नहीं करते हैं?'

वे थोड़ी देर चुप रहे थे, फिर कहा था, 'झल्ली हो क्या, किस ने कहा कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता हूं? मैं तुम्हारे अलावा किसी से प्यार नहीं करता. पत्नी की अपने पति से अपेक्षाएं होती हैं. उसी तरह पति की भी अपनी पत्नी से अपेक्षाएं होती हैं. तुम बिस्तर पर कभी सक्रिय नहीं रहीं.

'याद है, मैं ने एक बार कहा था. लगता है, मैं तुम से बलात्कार कर रहा हूं. जरा गहराई से सोचो, तुम अपने जीवन में कभी मेरे पास नहीं आईं. लगता था जैसे एक मुरदे के साथ मिलन कर रहा हूं. बस किया और दूसरी तरफ मुंह फेर लिया. मुझे कभी पता ही नहीं चला कि तुम संतुष्ट हो अथवा नहीं.

'पुराने जमाने में एक रिवाज था, पति बाहर से थक कर आता था, पत्नी उस की टांगें दबाया करती थी. यह कोई गुलामी नहीं थी, बल्कि इसी बहाने सारे दिन की बातें भी हो जाती थीं और पति का प्यार भी मिल जाता था.

'तुम ने अपने जीवनकाल में केवल एक बार टांगें दबाई थीं. वे इतनी पुष्ट और सख्त थीं कि तुम से दबाई नहीं गई थीं.

'मैं ने उस समय मना कर दिया था. फिर कभी नहीं आईं? मैं इस एहसास से कभी मुक्त नहीं हुआ कि तुम निर्जीव हो, बिलकुल जैसे जान नहीं है. मैं नामर्द नहीं था. अगर होता तो बच्चे न होते. ऐसी पत्नी को क्यों और कैसे प्यार किया जाए या किया जा सकता है. बस, घर का काम किया और दूसरी तरफ मुंह फेर कर सो गई.

'जरा सोचो, कईकई दिन, कईकई

"जरा सोचो, कईकई दिन, कईकई महीने तुम्हारे पास आने को मन नहीं करता था," मुझे आज पति की कही कई बातें याद आ रही थीं.

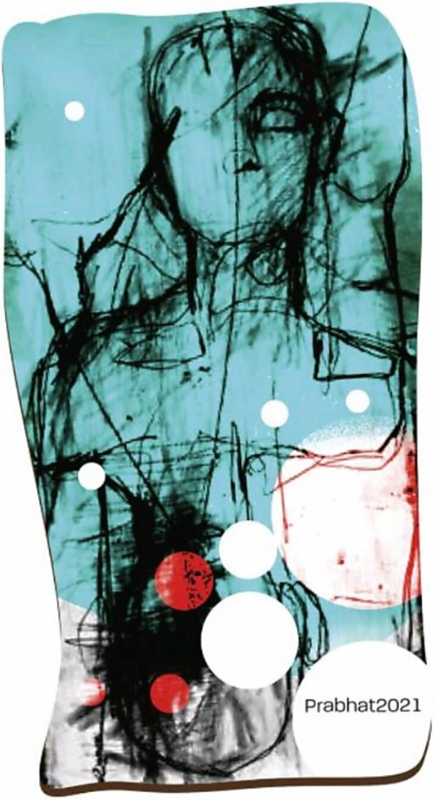

महीने तुम्हारे पास आने को मन नहीं करता था. तुम मेरा इंतजार करती थीं और मैं तुम्हारा. तृप्ति की जरूरत दोनों को होती है. तुम्हारी ओर से इस के लिए कोई कोशिश नहीं थी. वासना तंग करती, तो मैं तुम्हारे पास आता.'

मैं ने कहा था, 'जमीन अच्छी थी, इसलिए बच्चे हुए.'

वे गहरी आंखों से मुझे देखते रहे थे, 'जमीन और बीज दोनों अच्छे हों तो फसल अच्छी होती है वरना कईकई सालों तक लोग लगे रहते हैं, बच्चे नहीं होते हैं. कहीं जमीन उपजाऊ नहीं होती है, तो कहीं बीज श्रेष्ठ नहीं होता. तुम्हें अपनों में ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे.'

मैं ने कभी इन का साथ नहीं दिया. कोई मर्द मुरदा औरत को क्यों प्यार करेगा. यह कैसा बेतुका संस्कार है? शादी के बाद पतिपत्नी एक होते ही हैं? इस का उत्तर मिल जाने के बाद भी उन के पास कभी नहीं गई थी.

मेरे पास उन की इन बातों का कोई जवाब नहीं था. सच में, मैं उन के पास कभी नहीं गई थी. क्यों? इस बात का उत्तर खोजती रही हूं. बचपन से शरीर को ढकढक कर रखती थी. शायद, हर लड़की ऐसा ही करती है. जानती थी, एक दिन शादी होगी और इस सुंदर काया को अपने पति को समर्पित करना पड़ेगा. फिर भी मैं मन के भीतर के इस संस्कार से उभर नहीं पाई थी कि पति भी पराया मर्द होता है. मैं ने कभी इन का साथ नहीं दिया. कोई मर्द मुरदा औरत को क्यों प्यार करेगा. यह कैसा बेतुका संस्कार है? शादी के बाद पतिपत्नी एक होते ही हैं? इस का उत्तर मिल जाने के बाद भी उन के पास कभी नहीं गई थी.

मैं मानती हूं, वे मुझ से हमेशा अतृप्त रहे. मैं भी कभी तृप्त नहीं हुई. उन के जाने के बाद अब ऐसा महसूस करने का कोई फायदा नहीं है. वे मुझ से सदा दुखी रहे. जब भी मौका मिला, पुरानी बातों को ले कर मैं ने उन को लताड़ा था. कईकई दिन, कईकई महीने हम दोनों के बीच अनबन रहती थी. फिर कभी रात को मेरे पास आ जाते, तो जिंदगी नौर्मल हो जाती थी. मेरी ओर से कोशिश न होना क्या सही था? बस, इसी प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता था. यह सब याद कर के आंखों के कोर फिर गीले हो गए थे.

सर्दी बढ़ गई थी. छोटी बहू ने आवाज दी. मैं चुपचाप अंदर चली आई थी. मन की अंतर्वेदना से मुक्त नहीं हुई थी. चाहे लाभ नहीं था. यादों में फिर घिर गई थी. घर में सबकुछ मेरे मुताबिक होता था. मेरे घर में जो भी आया, उसे लेदे कर भेजा था. फिर भी सारी जिंदगी मुझे अफसोस रहा था. इन से और अपनेआप से भी. आखिरी दम तक यह अफसोस रहा.

वे कहते थे, 'मुझे समझ नहीं आता कि तुम्हें अफसोस किस बात का है. बच्चे हैं, बच्चों ने भी अपनेअपने घर बना लिए हैं. औफिस हैं. पोतेपोतियां हैं. भरापूरा परिवार है. हम बच्चों पर बोझ नहीं हैं. हमारी अच्छीखासी पैंशन है. फ्री दवाएं और कैंटीन की सुविधा अलग से है. फिर भी तुम खुश नहीं हो, क्यों?'

मैं कैसे कहती कि बुढ़ापे में भी पतिपत्नी एंजौय करते हैं. मेरी सहेली बता रही थी, चाहे कुछ नहीं होता है, फिर भी खूब अच्छा लगता है. हम एकदूसरे के बिना सो ही नहीं पाते हैं. यहां तो

बिलकुल ही उलट है. रात को गलती से भी अगर उन का हाथ मुझे लग जाता था तो मैं इस तरह झटक देती थी, जैसे उन्होंने गोली मार दी हो. वे कभी आए भी तो मैं फिर मुरदा हो जाती थी.

समुद्र के पास रह कर भी मिलन नहीं हो पाया था. मैं नितांत प्यासी रह गई थी. उन्होंने मुझे कई रोमांटिक फिल्में भी दिखाने की कोशिश की थी. कैसे पतिपत्नी संबंधों को मजबूत करते हैं? छी:, गंदे, कह कर नकार दिया था.

'जिस से सारा संसार चलता है, वह गंदा कैसे हो गया? सारे चराचर का आधार ही सैक्स है,' इन्होंने समझाने की कोशिश की थी, 'मेलफीमेल इसीलिए बनाए गए हैं. मैं पैदा हुआ इसी मिलन से. तुम भी इसी मिलन से पैदा हुई हो. जिस मिलन में महा आनंद, वह गंदा कैसे हो गया?'

यह अंक आप को कैसा लगा

इस अंक की कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई, आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना पसंद करेंगे? हमें बताएं, हम आप की आलोचनाओं का भी और सुझावों का भी स्वागत करेंगे.

पत्र संपादक, सरिता, दिल्ली प्रैस, ई-8, रानी झांसी रोड, झंडेवाला, नई दिल्ली-110055 पर डाक से या editor@delhipress.biz **पर ईमेल से या 08527666772 पर एसएमएस या व्हाट्सऐप से भेजें.**

–संपादक

मैं थोड़ी देर के लिए उन के तर्क को मान लेती थी और वादा करती थी कि आगे से ऐसा नहीं होगा.

रात को फिर वही ढाक के तीन पात. मैं उन को सहयोग नहीं दे पाती थी. वे 'मर' कह कर दूसरी ओर मुंह फेर लेते थे.

वे कहानी लेखक थे. अपने लेखन में डूब जाते. मुझे उन के लिखने से भी विरोध था. मैं समझती थी कि वे अपनों के बारे में लिखते हैं. उन्होंने समझाने की बहुत कोशिश की थी कि उन के सामने पूरा समाज होता है. उन्होंने कहा था, 'मेरी शैली अथवा लिखने के ढंग पर तुम को एतराज है. तुम को लगता है कि यह तुम्हारे बारे में लिखा है. हां, मैं यह मानता हूं कि लिखतेलिखते जीवन की कोई घटना कहानी में फिट बैठती है, तो उसे जरूर फ्रेम करता हूं. इस में मैं कुछ नहीं कर सकता.'

मेरा विरोध यह भी था कि उन्होंने दूसरी औरतों से संपर्क साध लिया है. वे इसे नकारते रहे थे, 'मेरी लेखनी के पाठकों में लड़कियां भी हैं, औरतें भी हैं, बूढ़े हैं, जवान भी हैं, सब हैं. मेरा उन से कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं है. कोई मुझे कहानी के बारे में लिखता है तो मैं उसे जवाब देता हूं. सारा दिन मैं घर में रहता हूं तुम्हारी आंखों के सामने. फिर भी शक करती हो. यह तुम्हारा वहम है. मेरे पास इस का कोई इलाज नहीं है.'

घर में हर रोज किसी न किसी बात को ले कर झगड़े होते. मन के भीतर बहुत विरोध थे. कोई न कोई ऐसी बात हो जाती कि बात तूल पकड़ लेती.

एक बार मां घर में आईं और ये उन को बेटी के पास नोएडा छोड़ने गए थे. वहां बैठ कर इन्होंने चाय पी ली थी. मैं ने समझा, अब इन का आनाजाना फिर से शुरू हो जाएगा. यही दोनों थीं, जिन के कारण मैं 2 साल पीड़ित रही. ये भी उन दोनों को पसंद नहीं करते थे. मैं ने इतना झगड़ा किया था कि इन को घर छोड़ कर जाना पड़ा था. ये मुझे समझाते रहे थे, 'शन्नो, चाय तो दुश्मन के साथ भी पी लेते हैं. कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं, चाह कर भी उन को नकारा नहीं जा सकता है. वे मां हैं. मुझे जन्म दिया है, पाला है, बड़ा किया है. दूसरी तरफ बहन थी. खून के रिश्ते तो हैं ही न. वे बहुत अच्छी तरह जानती हैं कि उन्होंने हमारे साथ क्या किया है. मां भी कल वहीं से आगे अपने बड़े बेटे के पास चली जाएंगी. वे यहां आने की कभी हिम्मत न करेंगी.'

पर, फिर भी मन की शंका दूर नहीं हुई थी. झगड़ा चलना था, चलता ही रहा था.

वे इतने पीड़ित हुए थे कि घर छोड़ कर ही चले गए. जब गुस्सा ठंडा हुआ तो घबराई. मांबेटी को ले कर जाने क्या हो जाता है कि कुछ भी बरदाशत नहीं कर पाती हूं. सारा दारोमदार इन्हीं पर है. पूरा घर इन से चलता है. मैं ने ऐसा क्यों किया? अब कहां ढूंढ़ूं? सभी रिश्तेदारों और जानकारों से बात की. वे वहां भी नहीं गए थे. फैक्टरी में साथ काम करने वाले इन के दोस्त से बात की. सलाह दी कि थाने में रिपोर्ट कर दें. सारी रात मैं और बच्चे परेशान रहे.

अगले दिन सुबह 6 बजे थाने में रिपोर्ट की. फोटो साथ ले गई थी. पता था, मांगेंगे. थानेदार ने एक बार मुझे गुस्से से घूरा, पर मुझे परेशान देख कर कहा कुछ नहीं.

अगर कल शाम तक लौट कर नहीं आते हैं, तो हम खोजबीन शुरू करेंगे. वे खुद आ जाएं तो हमें फोन कर के बता जरूर दें.

दूसरे दिन घर में चूल्हा नहीं जला था. छोटी बहन हमारे लिए खाना ले कर आई थी. मैं दिनभर अपने को कोसती रही कि ऐसा भी क्या गुस्सा था. वे अपनी मांबहन के साथ चाय पी कर ही तो आए थे. चाहते तो सब छिपा सकते थे. उन्होंने ईमानदारी से सारी बात बताई थी. मैं ने उस का यह सिला दिया. मन में कई तरह के बुरेबुरे खयाल आते रहे. उन को कुछ हो न गया हो.

छोटी बहन समझाती कि जीजू आ जाएंगे. वे बहुत समझदार हैं. उन को अपनी जिम्मेदारियों का एहसास है. पता है, बच्चे अभी छोटे हैं. दीदी, आप भी अपने गुस्से पर काबू रखें. जब उन्होंने कह दिया था कि वे यहां कभी नहीं आएंगे तो आप को भरोसा करना चाहिए था. अब अगर वे आ भी जाते हैं तो कोई फालतू बात नहीं करनी है. वे भी अपना गुस्सा ठंडा करने ही गए होंगे.

शाम हो गई थी. अंधेरा घिर आया था. मन बैठने लगा था. उन का कोई अतापता नहीं था. इतने में दरवाजे की घंटी बजी. छोटी बहन बोली, 'ये आए होंगे. मैं चलती हूं.'

दरवाजा खोला, सामने जीजू खड़े थे, 'हाय, जीजू.' वह खुशी के मारे उछल पड़ी और रोने लगी थी. वह ऐसा कभी नहीं करती थी. रोना तो दूर की बात है. वे चुपचाप अपने कमरे में चले गए थे. थोड़ी देर बाद मैं पानी ले कर गई थी. साथ में छोटी बहन भी थी. उन्होंने गिलास लिया और एक ही घूंट में सारा पानी पी गए. छोटी बहन ने पूछा था, 'जीजू, और पानी लाऊं?'

उन्होंने मुझ से पूछा, 'कैसी हो शन्नो? देखा, अपने गुस्से का कमाल.'

मैं चुप रही थी. केवल दहाड़ मार कर रोने लगी थी. उन्होंने मुझे चुप नहीं कराया था. वे भी चाहते थे कि मेरे मन का गुबार निकल जाए. कुछ देर बाद मैं ने चाय बनाई, तब तक छोटी बहन के हसबैंड भी आ गए थे. उन्होंने पूछा था, 'आखिर आप गए कहां थे?'

वे मुसकराए और कहा था, 'वैसे तो मैं जा नहीं पाता. हरिद्वार में गंगा स्नान कर के आया हूं. मुझे अपनी जिम्मेदारियों का एहसास था, इसलिए लौट आया हूं. शन्नो का बेवजह गुस्सा भी ठंडा हो गया होगा और मेरा भी.'

मैं कुछ नहीं बोली थी. केवल दूसरे कमरे में जा कर रोती रही थी. जानती थी, वे मुझे कभी मनाने नहीं आएंगे. गलती किसी की भी हो, मनाना उन के स्वभाव में नहीं था. रो कर अपने को हलका कर लेने की आदत पड़ गई थी. हलका महसूस किया तो बाहर आ कर रात के खाने के लिए लग गई थी. खाना खा कर दोनों एकदूसरे के विपरीत सो गए थे.

दूसरी बार जब घर छोड़ कर गए तो उस के मूल में भी मेरा और मेरी बहनों का शक ही था. मेरी सब से छोटी बहन, जब हमारी शादी हुई थी, तब वह 5 साल की थी. ये उस को बहुत स्नेह करते थे. सुंदर थी और पढ़ाई में बहुत तेज थी. आज वह बच्चों वाली है.

वार्षिक ग्राहक बनें!
घर बैठे पाएं

भारत की सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली महिलाओं की हिंदी पत्रिका

वार्षिक
₹1020 में

प्रोफिटेबल
गृहशोभा
फेस्टिव ब्यूटी ट्रिक्स
पुरुषों की
महिलाएं
ऑनलाइन फर्नीचर खरीदने के टिप्स
क्या है रिवेंज पोर्न
नाथरा बनर्जी

सरिता
महाशक्ति की महा हार

विश्वसनीय,
निर्भीक,
सुखद,
सदा युवा
पत्रिका

वार्षिक
₹1020 में

3 वर्षों पहले इन्होंने उन के मैसेंजर पर लिखा था, 'हाय, कैसी हैं आप?'

'जीजू, मैं जिम में हूं.'

'ओके, बाय.'

बस, इतनी सी बात को ले कर घर में वह बवाल मचाया था कि इन को फिर घर छोड़ कर जाना पड़ा था. इन्होंने समझाने की बहुत कोशिश की थी, 'जरा सोचो शन्नो, तुम कैसी बात कर रही हो? वह मेरे बच्चों की तरह है. यह भी 3 साल पहले की बात है. तुम्हें याद होगा, मैं नयानया जूनियर अफसर बना था. मुझे काठगोदाम की डिटैचमैंट का चार्ज लेना था. उसी समय तुम्हारी इसी बहन का पत्र आया था. उस समय वह कालेज में पढ़ती थी. कालेज का एक प्रोफैसर उस को तंग कर रहा था. मैं ने अपने कमांडिंग अफसर को बताया था. उन्होंने कहा था कि ठीक है, 5 दिन की छुट्टी पर जा कर पहले प्रौब्लम सौल्व करो, फिर वहीं से काठगोदाम चले जाना.

'उस के तो और भी जीजे थे, उन को क्यों नहीं लिखा? तब पहले मैं जोशीमठ से अमृतसर गया था. उस के कालेज जा कर सारी समस्या हल कर के आया था. उस प्रोफैसर को वार्निंग दे कर आया था कि दोबारा ऐसा हुआ तो मैं तुम्हारा कैरियर खराब कर दूंगा. मैं वरदी में था और सच में वह प्रोफैसर डर गया था. प्रिंसिपल भी कालेज की रैपुटेशन खराब होने के डर से उस प्रोफैसर को वार्निंग दे चुकी थी. तुम्हें यह भी याद होगा, एक

दिल्ली प्रैस

औफर क्रमांक	पत्रिका	प्रतियों की संख्या	अंक	अवधि	प्रति मूल्य	वार्षिक मूल्य	सब्सक्रिप्शन औफर	चिहिंत करें
1.	गृहशोभा	1	पाक्षिक	1 वर्ष	50.00	1200.00	1020.00	☐
2.	सरिता	1	पाक्षिक	1 वर्ष	50.00	1200.00	1020.00	☐

यह फौर्म अपने चैक/डी.डी. के साथ भेजे

नाम: जन्मतिथि: DD MM YY

पता:

पिन:

मोबाइल नं.: फोन नं.: ई–मेल: Yes No

चैक / डी.डी. नं.: तिथि:

DELHI PRAKASHAN VITRAN PRIVATE LIMITED के पक्ष में देय होगा.

क्रैडिट कार्ड: ☐ अमेक्स ☐ वीसा ☐ मास्टर कार्ड अंतिम तिथि: MM YY

जारी करने वाले बैंक का नाम:

हस्ताक्षर तिथि

नियम व शर्तें : कृपया इस फौर्म को चेक/डीडी के साथ इस पते पर भेजें– DELHI PRAKASHAN VITRAN PVT. LTD. ई-8, झन्डेवालान एस्टेट, ग्राउंड फ्लोर, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली - 110055 चेक/डीडी का भुगतान भारत में मान्य हो. यह विशेष योजना कुछ समय के लिए ही है. पत्रिका डिलीवरी के लिए कृपया 4-5 हफ्तों का समय दें. पत्रिका की प्रति आपको रजिस्टर डाक के द्वारा प्राप्त होगी. प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त **₹180/-** का भुगतान करें. समस्त विवाद केवल दिल्ली न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र में निबटाए जाएंगे. अधिक जानकारी के लिए दिल्ली प्रैस के सब्सक्रिप्शन विभाग से संपर्क करें: फोन-टोल फ्री नबंर 1800 103 8880 फोन नबंर 41398888 (सभी लैंडलाइन और मोबाइल द्वारा मान्य, सोमवार से शनिवार सुबह 10:00 से शाम 6:00 तक) ईमेल : subscription@delhipress.in, आप औनलाइन http://www.delhipress.in/subscribe पर भी सब्सक्राइब कर सकते है.

बार यही बहन अंबाला आई थी. मैं बेटी बना कर उसे स्किन स्पैशलिस्ट को दिखाने गया था. तुम उस को ले कर मन मैला कर रही हो. तुम्हारा मन दोषी है. सच में, यह घर रहने के काबिल नहीं है.'

इस बार पता था कि वे कहां गए थे. अपने बड़े भाई के पास.

'आज मैं वहां जा रहा हूं, जहां मैं कभी नहीं जाना चाहता था. काश, तुम इसे समझ पातीं. जीवन के अंतिम पड़ाव में हैं. न कभी तुम मुझे समझ पाई हो और न कभी मैं. शक और वहम का कोई इलाज नहीं होता है. तुम्हारे हर समय झगड़ने और लताड़ने पर मैं जब अपनेआप में खोने लगता अर्थात अपने लिखने में खोने लगता तो तुम्हें मेरा लिखना भी पसंद नहीं.

'सच पूछो तो मेरा तुम्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता था. बच्चे अब बड़े हो गए हैं. मेरे जाने से भी तुम्हें फर्क नहीं पड़ेगा. वे तुम्हें संभाल लेंगे.'

वे पहले भी गए थे, वापस आ गए थे. अब भी आ जाएंगे. महीना बीत गया. पर वे नहीं आए. बच्चे भी कहने लगे थे, 'आप की रोजरोज के झगड़ने की आदत ने पापा को परेशान कर के रखा हुआ था. चले गए, अब खुश हो न. इतना सब होने पर भी वे आप के कई काम संवारते थे. आप तो चलफिर सकती नहीं हैं.'

बहुएं भी कैड़ी आंख से देखने लगी थीं. उन को भी लगता था कि मैं ही झगड़ा करती हूं, पापा तो खामोश रहते हैं.

'अब कोई झगड़ा नहीं करूंगी. बस, इन को जा कर ले आओ,' ऐसा मैं ने अपने बड़े बेटे से कहा था. वह मना कर ले आया था. फिर ये हमेशा की तरह खामोश रहने लगे थे, लिखना भी छोड़ दिया था.

वे कहते थे, 'लिखना मेरी मानसिक भूख मिटाता है. पर मैं यह भी समझ नहीं पाई थी. एक दिन दिल का दौरा पड़ा. अस्पताल पहुंचाया, पर वे बच नहीं पाए. आंखों के कोर फिर गीले हो गए थे.

छोटी बहू ने कहा, "मम्मी, सो जाओ. रात बहुत हो गई है. सुबह जिला सैनिक बोर्ड के औफिस और पैंशन औफिस जाना है.'

बहुत कोशिश की, पर नींद नहीं आई थी. रात आंखों में ही कट गई. सुबह 7 बजे बहू ने गरम पानी दिया, फिर चाय दी. 9 बजे मैं तैयार हो गई थी. 10 बजे जिला सैनिक बोर्ड के अफसर के सामने और फिर पैंशन अफसर के सामने एक बार पेश होना था. बेटे ने वीडियो फोन के जरिए मेरे जिंदा होने की बात कही थी, पर वे नहीं माने थे. उन्होंने बड़ी विनम्रता से कहा था, 'सिर्फ एक बार तकलीफ करने की जरूरत है.' केवल बैंक मैनेजर ने वीडियो कौल से पैंशन खाता खोलने की बात मान ली थी. जिला सैनिक बोर्ड के अनुसार, बैंक ने उन का ओरिजनल डैथ सर्टिफिकेट, उन की 25 फोटो कौपी, फौज की डिस्चार्जबुक, पैंशनबुक और बैंक खाते की डिटेल साथ में ले ली थी. जैसेतैसे कार में बैठी, व्हीलचेयर साथ में ले कर जिला सैनिक बोर्ड औफिस पहुंची.

औफिस में अधिकारी ने बड़े प्यार से बिठाया. अफसोस भी जताया, "मृत्यु जीवन का एक ऐसा सत्य है, जिसे नकारा नहीं जा सकता. मैं ने सबकुछ अटैस्ट कर दिया है. फैमिली पैंशन फिक्स होती रहेगी. प्रोविजनल पैंशन अगले महीने से शुरू हो जाएगी. आप लालकिले पैंशन औफिस ले जाएं. मेरी

उन से बात हो गई है. वहां भी जल्दी काम हो जाएगा."

उसी समय सैनिक बोर्ड का एक कर्मचारी 2,500 रुपए का कैश वाउचर लाया. मेरे साइन करवा कर रुपए मुझे दे दिए.

मैं ने प्रश्न किया कि ये कैसे रुपए हैं?

सामने बैठे अफसर ने फिर अफसोस प्रकट किया और कहा, "सरकार का आदेश है, हर मरने वाले सैनिक को दाहसंस्कार के लिए ये रुपए दिए जाते हैं. मानता हूं, यह रकम बहुत कम है, पर इतनी ही राशि देने का आदेश है."

मेरी आंखों से फिर आंसू बहने लगे थे. मैं सैनिक बोर्ड के औफिस से बाहर आ कर कार में बैठ गई. उन की बहुत सी बातें याद आने लगी थीं. उन्होंने जीवन में दिया ही दिया है. उन को मिला कुछ नहीं. मैं ने भी प्रताड़ना दी. मरने के बाद भी रुपए देने का सिलसिला जारी है. अंतिम सांस तक पैंशन के रूप में यह जारी रहेगा.

वे कहा करते थे, 'शन्नो, आदमी की कद्र करना सीखो. जीवन में पैसा बहुत बड़ी चीज है. मैं एक ऐसी दुधारू गाय हूं, जो 12 महीने दूध देती है. मैं मर भी जाऊंगा तो भी यह दूध की धारा बहती रहेगी. तुम्हें पैसे के लिए बच्चों के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा. तुम्हारे हाथ हमेशा देने के लिए उठेंगे. यही पैसा तुम्हें इज्जत दिलाता रहेगा. तुम्हारी अंतिम सांस तक संभाल होती रहेगी.'

कितनी सच बात कही थी. पर मैं ही समझ नहीं पाई थी.

पैंशन औफिस में भी ज्यादा देर नहीं लगी थी. सारी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद अफसर ने कहा था, 'अगले महीने से आप की प्रोविजनल पैंशन आप के खाते में आनी शुरू हो जाएगी. फैमिली पैंशन फिक्स होने में 2 महीने लग जाएंगे. आर्थिक तंगी न आए, इसलिए पैंशनर को अनुमानित पैंशन मिलती रहती है. आप उन का मैडिकल कार्ड डैथ सर्टिफिकेट के साथ जमा करवा दें. कैंटीन कार्ड भी नया बनेगा. इस के लिए सारी फौर्मेलिटीज जिला सैनिक बोर्ड के औफिस में की जाएंगी. हर साल इसी महीने में आप को लाइव सर्टिफिकेट देना है. यह औनलाइन भी हो जाएगा.'

विनम्र

एक श्रेष्ठ व्यक्ति अपने भाषण में विनम्र होता है लेकिन अपने कार्यों में अधिक विनम्र होता है. —कन्फ्यूशियस

सरिता

पैंशन औफिस से निकलने के बाद खामोशी ने फिर मुझे घेर लिया था. मेरा मन फफकफफक कर रोने को करता था. पर मैं रो न पाई थी.

घर आ कर मैं फिर बालकनी में आ कर बैठ गई थी. ठंडी हवा चल रही थी, पर मैं ने शौल नहीं ओढ़ी थी. खामोशी की तपस मेरे साथ है. यह खामोशी हमेशा मेरे साथ रहेगी. ●

मुंबई में शिपिंग कंपनी में मैरीन इंजीनियर के पद पर काम करने वाले पंकज के साथ उस रात ऐसा क्या घटित हो गया कि वह रात उन के लिए तूफानी बन गई? आखिर तूफान की वह रात उन के लिए मौत का सबब कैसे बनी?

तूफान की वह रात

• चितरंजन भारती

जैसी कि उम्मीद थी, शाम को पटना एयरपोर्ट पर एयरबस के उतरते ही उस ने चैन की सांस ली. मगर अभी तो बस शुरुआत थी. आगे के झंझावातों को भी तो उसे झेलना था. पंकज की डैड बौडी भी इसी फ्लाइट से आई थी. और उसी के साथ उसे भी गांव जाना था. पहली बार वह विमान पर चढ़ा था. मगर पहली बार फ्लाइट पर जाने का उसे कोई रोमांच या खुशी नहीं थी.

पंकज एक शिपिंग कंपनी में मैरीन इंजीनियर थे और उन की अच्छीभली स्थायी नौकरी और तनख्वाह थी. फिर उन के परिवार वाले संपन्न किसान भी थे. उन्होंने ही अपने खर्च पर पंकज के शव को यहां मंगवाया था कि उन का दाह संस्कार अपने ही गांव में हो और इसी बहाने वह भी साथ आ गया था.

पंकज के बड़े भाई और उन के 2 भतीजे भी साथ थे. संभवतया वे वहीं समस्तीपुर से ही एम्बुलैंस की व्यवस्था कर पटना एयरपोर्ट आए थे.

कोरोना के चक्कर में इस समय औक्सीजन और दवाओं के साथ अस्पतालों में बैड व एम्बुलैंस के लिए भी तो मारामारी थी.

कोरोना की जांच और दूसरी सुरक्षा जांच संबंधी औपचारिकताओं को पूरा करने में ही एक घंटा खर्च हो गया था. फिर बाहर निकलते ही पंकज की डैड बौडी को एम्बुलैंस की छत पर रख कर बांधा जाने लगा. वह चुपचाप सारी गतिविधियां देखता रहा. उन का 16 साल का बेटा अनूप अभी भी फूटफूट कर रो रहा था. उन के बड़े भाई नारायण की भी आंखें नम थीं.

पंकज का भतीजा आलोक उसी की हमउम्र था और सभी कामों में काफी तत्परता दिखा रहा था.

वैसे तो आलोक मैट्रिक तक उसी का क्लासमेट था. वह उस के स्वभाव को जानता था कि वह कितना कामचोर और आलसी है. मगर आज उस की काम के प्रति तेजी देखते ही बनती थी. सच है, समय व्यक्ति को किस तरह बदल कर रख देता है.

"अब खड़े क्या हो राजन, आगे जा कर बैठ जाओ," आलोक बोला, "हम अभी चलेंगे तो शाम के 7 बजे तक समस्तीपुर पहुंच पाएंगे. फिर वहां से अपने गांव गणेशी पहुंचने में आधा घंटा और लगेगा."

वह चुपचाप ड्राइवर की बगल वाली सीट पर जा कर बैठ गया.

एम्बुलैंस अपने गंतव्य की ओर दौड़ चली थी.

लौकडाउन की वजह से सड़कें शांत थीं. पटना के हर प्रमुख चौराहे पर गश्ती पुलिस का पहरा था. वहां यह बताते ही कि वे एयरपोर्ट से आ रहे हैं, कोई कुछ कहता नहीं था. गंगा सेतु पार करते ही एम्बुलैंस पूरी रफ्तार में आ गई थी.

6 बजे तक वे समस्तीपुर में थे. वहां भी हर गलीचौराहे पर लौकडाउन की वजह से पुलिस का पहरा था. साढ़े 6 बजे

तक वे अब अपने गणेशी गांव में थे और अब एम्बुलैंस 'निकुंज भवन' के आगे खड़ी थी.

एम्बुलैंस देखते ही पंकज की पत्नी चीत्कार मार कर बाहर निकली और उस के आगे पछाड़ खा कर गिर पड़ी. मां और बहन अलग दहाड़ें मार कर रो रहे थे.

सबकुछ जैसे तैयार ही था. दरवाजे पर घंटेभर के लिए शव को रखा गया था और लोग मुंह पर मास्क लगाए अंतिम दर्शन के लिए आजा रहे थे. वह चुपचाप अपना बैग संभाले खड़ा रहा. छोटा भाई माखन आया और उस का बैग लेते हुए बोला, "अब घर चलिए भैया. मां इंतजार कर रही हैं तुम्हारा."

अंत्येष्टि पूरी होने के बाद घर जाते हुए उस ने जैसे खुद से कहा, "गांव तो आ ही गया हूं. थोड़ी देर और सही."

"अभी यहां की औपचारिकताएं पूरी होने में देर तो लगेगी ही," आलोक उस के असमंजस और कशमकश को देखते हुए बोला, "नहीं राजन, तुम घर हो आओ. तुम भी काफी थक गए हो. मैं समझ सकता हूं. जब हम मुक्तिधाम को चलेंगे, उसी समय आ जाना."

उसे देखते ही मां उस से चिपट कर रोने लगी, "मैं तो समझी कि सारा खेल खत्म हो गया. यह मेरे किसी अच्छे कर्म का प्रताप है कि तुम बच कर आ गए राजू. मेरा नया जन्म हुआ है. सालभर पहले ही तुम्हारे पिता का देहांत हुआ था. कितनी मुश्किल से खुद को संभाला है मैं ने."

"अब बीती बातों को छोड़ो मां," उस की भी आंखें भर आई थीं, "क्या करता, बाबूजी के जाने के बाद घर में एक चवन्नी तक नहीं थी. उलटे उन के श्राद्धकर्म के नाम पर बिरादरी वालों ने कर्ज का पहाड़ चढ़ा दिया था. उसे उतारने के लिए ही तो मुझे मुंबई जाना पड़ गया."

"मगर, लौटे तो किस हालत में..." मां रोते हुए कह रही थी, "अगर तुम्हें कुछ हो जाता, तो मैं तो जीतेजी मर जाती."

"अब ये बातें छोड़ो मां," वह बोला, "पंकज की अंत्येष्टि के लिए मुझे जाना ही होगा. यह उन का ही एहसान है कि मैं कुछ कमाने लायक बन पाया हूं."

माखन ने बाहर ही एक बालटी पानी और मग ला कर रख दिया था. वह वहीं अपने कपड़े उतार कर नहाने लगा था.

नहाने के बाद मां ने उसे चाय का गिलास और घर के बने नमकीन की तश्तरी उस के आगे धर दी थी. दोनों छोटे भाईबहन भी वहीं आ कर बैठ गए थे. उस ने जल्दीजल्दी चाय पी और नमकीन खत्म कर बोला, "निकुंज भवन हो कर आता हूं. तुम इंतजार करना. जल्दी ही लौट आऊंगा."

रात लगभग 9 बजे अर्थी उठी और वह भी सभी के साथ श्मशान घाट तक गया. दाह संस्कार के बीच वह जैसे शून्य में खोया सा था कि तभी आलोक आ कर उस से बोला, "राजू भाई, यह अचानक क्या हो गया?"

"क्या कहूं आलोक," वह फफकफफक कर रो पड़ा, "मृत्यु नजदीक थी. कुछ को मुक्ति मिल गई. कुछ हमारे जैसे लोग भारतीय नौसेना की वजह से बच गए."

"अब जो होना था, हो ही गया," आलोक उसे सांत्वना देते हुए कहने लगा, "कुछकुछ जानकारी हमें भी हुई है. तुम बहुत थके हो और परेशान भी रहे. अब

घर लौट जाओ. यहां हम कई लोग हैं देखने के लिए."

उस के मन में वापस लौटने की इच्छा थी, मगर वह संकोचवश उठ नहीं रहा था. भारी मन लिए वह वहां से उठा और घर चला आया.

एक बार फिर स्नान कर वह ताजातरीन हुआ और बेमन से खाना वगैरह खा कर बाहर बिछी चौकी पर लेट गया. छोटा भाई आ कर पैर दबाने लगा. उस ने उसे मना किया, तो वह मनुहारभरे स्वर में बोला, "इसी बहाने तुम्हारे पास हूं भैया. यहां मां और दीदी कितना रोती हैं."

"क्योंक्यों, क्या बात हुई?" वह उठ कर बैठ गया, "फिर तुम तो घर पर ही हो."

"मगर, मैं क्या कर सकता हूं. मैं तो बहुत छोटा हूं," वह सुबकता हुआ बोला, "एक तो तुम इतनी दूर चले गए. उस पर यह तूफान वाला हादसा हुआ तो हम बहुत डर गए."

"डरने की कोई बात नहीं. मैं हूं ना. अब बाहर नहीं जाता तो घर के खर्चे कैसे चलते?" वह उसे समझाते हुए बोला, "अब तुम जाओ. रात बहुत हो गई है, इसलिए जा कर सो जाओ. मुझे भी नींद आ रही है. कल ढेर सारी बातें करूंगा."

"नहीं, मैं तुम्हारे साथ ही सोऊंगा."

"ठीक है, सो जा," उस ने उसे अपनी बगल में सुलाते हुए कहा.

अब वह सोने का प्रयास करने लगा था. मगर नींद अब आंखों से कोसों दूर थी. ऊपर आसमान तारों से सजा था, जिसे वह निहार रहा था. वह उन में कहीं पंकज को खोज रहा था कि उसे अपने दिवंगत पिता की याद आ गई.

विगत वर्ष जब उस के पिता का देहांत हुआ था तो इसी प्रकार के भयावह शून्य को देख कर घबराया था. उन की अंतिम क्रिया संपन्न होने के बाद समस्या यह थी कि अब रोजमर्रा के खर्चे कैसे चलेंगे. तिस पर बिरादरी वालों ने श्राद्ध के नाम से अलग शाही खर्च करा उस के घर को कर्ज में डुबो दिया था. उस की भी उसे भरपाई करनी थी. थोड़ी सी खेती थी. दरअसल, उसी पर सभी की दृष्टि लगी थी. मगर मां उसे किसी भी कीमत पर बेचने को तैयार नहीं थी.

> मगर मनुष्य की जिजीविषा भी तो बड़ी है. वह इसी की बदौलत प्रकृति से, समय और समाज से संघर्ष करता है. हार होती है. मगर कभीकभी वह जीत भी जाता है. और जो जीतता है, वह इतिहास रचता है.

उस ने बहुत भागदौड़ की. उस ने 3 साल पहले ही आईटीआई से वेल्डर का सर्टिफिकेट हासिल कर लिया था. मगर सरकारी तो दूर, कोई प्राइवेट नौकरी भी उसे नहीं मिल रही थी. वह वहीं समस्तीपुर में एक ग्रिल बनाने वाली दुकान में बतौर वेल्डर लग गया था कि घर बैठने से अच्छा है कि कुछ किया जाए. इस से काम में हाथ भी साफ रहता और परिपक्वता भी आती.

उन्हीं दिनों पंकज छठ त्योहार के अवसर पर घर आए थे. वे मुंबई में किसी शिपिंग कंपनी में मैरीन इंजीनियर के अच्छे पद पर थे. एक दिन वे किसी काम के सिलसिले में उन के छोटे भाई आलोक से मिलने गया तो उन से भेंट हो गई. वे

उस के घर का हालचाल पूछने लगे तो जैसे दिल का दर्द बाहर उमड़ आया, "आप से कुछ छिपा तो है नहीं. दानेदाने तक के लिए मुहताज थे हम. तभी मैं समस्तीपुर में उस ग्रिल बनाने वाली दुकान पर जाने लगा.

"इस लौकडाउन में तो हमारी क्या, सभी की हालत खराब रही. वे बस, कुछ खानेपीने भर को दे देते हैं. छोटे भाई को अगले साल 12वीं की परीक्षा देनी है. पता नहीं, वह पैसों के चलते फौर्म भर पाएगा कि नहीं. वह इसीलिए विक्षिप्त सा हो रहा है. छोटी बहन को भी 10वीं की परीक्षा देनी है. उस की पढ़ाई में कुछ खर्च तो होता नहीं, मगर भोजनपानी तो चाहिए ही चाहिए न. उधर हमारी थोड़ी सी बची जमीन पर गिद्धदृष्टि लगाए बैठे हैं. वह कैसे बचेगी? और बड़ी बात यह कि हम कैसे बचें, समझ नहीं पाता हूं.

"आप तो मुंबई में अच्छे पद पर हैं. वहां कुछ जुगाड़ हो पाता मेरा, तो बहुत अच्छा रहता. मुमकिन हो तो आप अपनी शिपिंग कंपनी में ही मुझे रखवा लें."

"अरे, मैं भी तो उस कंपनी में मुलाजिम ही हूं," कहते हुए वह जोरों से हंसे थे, "मैं वहां क्या कर सकता हूं?"

थोड़ी देर ठहर कर कुछ याद करते हुए से वे बोले, "तुम ने वेल्डिंग ट्रेड से आईटीआई पास किया है न. कैसा काम है तुम्हारा?"

"अब मैं अपने मुंह से अपनी प्रशंसा क्या करूं. मैं जिस दुकान में काम करता हूं, उन्हीं से पूछ लीजिएगा. इस फिनिशिंग से काम करता हूं कि सभी मेरी वेल्डिंग की प्रशंसा करते हैं."

"मैं जिस जहाज पर काम करता हूं, उस के कैप्टन ने मुझ से किसी अच्छे वेल्डर के बारे में बात की थी. मगर भाई, सागर में जहाज की नौकरी रहेगी. पता नहीं, तुम्हें पसंद आए या नहीं? वैसे, पैसे अच्छे मिलेंगे. संभवतया 20,000 रुपए महीने के दें."

उस ने उन के पैर पकड़ लिए थे, "मुझे मंजूर है, समुद्र के जहाज पर रहना. कम से कम मेरी मां तो ठीक से रहेगी. भाईबहन थोड़ी पढ़ाई तो कर पाएंगे. आप मुझे साथ ले चलिए."

और इस प्रकार वह पंकज के साथ मुंबई आ गया था. वहां पहले उसे शिपिंग कंपनी के तकनीकी विभाग में रखा गया. फिर वह जहाजों पर ही काम करने लगा था. कैसा नीरस जीवन था यहां का.

पंकज का जीवन तो समुद्र में खड़े जहाजों के बीच ही गुजरता था. फिर भी उन्होंने मुंबई के उपनगर अंधेरी में एक कमरा ले रखा था. वेतन मिलते ही वे वहां जाते और कुछ आवश्यक खरीदारी के साथ घर पैसा भेज देते थे. अगले माह जब वेतन मिला, तो वे उसे भी साथ ले गए.

वह तो अपने वेतन के 20,000 रुपयों को एकसाथ घर भेजने पर उतारू था. उन्होंने उसे समझाया कि अब तो उसे यहीं रहना है, इसलिए जरूरी सामान और कपड़े खरीद ले. और इस प्रकार उसे जूतेकपड़े आदि के साथ ब्रशमंजन से ले कर शेविंग किट्स तक की खरीदारी कराई, जिस में उस के 8,000 रुपए निकल गए थे.

वे उस से हंस कर बोले, "यह मुंबई पैसों की नगरी है. यहां सारा खेल पैसों का ही है. अभी अपने पास 2,000 रुपए रखो और बाकी 10,000 रुपए घर भेज दो."

पंकज के अकाउंट की मारफत वह मां के पास 10,000 रुपए भिजवा कर निश्चिंत हो पाया था. लगे हाथ उन्होंने उस का वहीं उसी बैंक में अकाउंट भी खुलवा दिया था.

नवंबर में वह यहां मुंबई आया था. जहाज का यह समुद्री जीवन अजीब था. चारों तरफ समुद्र की ठाठें मारती खारे पानी की लहरें और बजरे का बंद जीवन. दिनभर किसी जहाज में काम करो और फिर शाम को बजरे में बंद हो जाओ. हजारोंलाखों लोगों का जीवन इसी समुद्र के भरोसे चलता है. विशालकाय व्यापारिक जहाजों से ले कर सैकड़ों छोटीबड़ी नौकाएं अपने मछुआरों के संग जाल या महाजाल बिछाए मछली पकड़ती व्यस्त रहती हैं. ऐसे में वह कोई अनोखा तो नहीं, जो यहां रह न पाए.

पंकज ने खुद को आर्मी अस्पताल में पाया. बजरे में फंसे अन्य लोग भी उस वार्ड में भर्ती थे.

उसे अभी मौजमस्ती की क्या जरूरत. उसे तो अभी अपने परिवार के अभावों के जाल काटने हैं. यहां खानेपीने की समस्या नहीं. ठेकेदार की तरफ से सभी के लिए यहां निशुल्क भोजन की भी व्यवस्था है. पंकज ने उसे अपना छोटा मोबाइल दे दिया था, जिस से वक्तजरूरत मां या भाईबहन से बात कर लिया करता था.

जिस जहाज पर पंकज तैनात थे, उसी पर उस का काम चल रहा था. उस जहाज पर उसे ले कर कुल 24 लोग थे. शाम को वह वापस बजरे पर आ जाते, जहां उन की रिहाइश थी.

बजरा एक सपाट डेक वाली नौका को कहते हैं, जो सिर्फ पानी की सतह पर तैरती रहती है. कुछ बजरों में उसे चलाने के लिए इंजन भी लगा रहता है. लेकिन आमतौर पर बिना इंजन वाले इन बजरों को जहाजों द्वारा खींच कर ही इधरउधर लाया या ले जाया जाता है. इस समय ओएनजीसी के औयल रिंग प्लेटफौर्म पर कुछ काम चल रहा था. शाम में सभी 'राजहंस' नामक इस बजरे पर चले जाते और वहां के

लगभग ढाई सौ छोटेबड़े दड़बेनुमा केबिनों में समा जाते. वहीं खानापीना, नहानाधोना वगैरह होता और अगले दिन के लिए सो जाना होता था. यहां से बहुत जरूरी होने पर ही लोग मुंबई समुद्रतट का रुख करते थे, क्योंकि आनेजाने में ही दिनभर लग जाता था. आमतौर पर महीनेपखवाड़े ही कोई उधर जाता था.

विगत दिनों का वह मनहूस दिन उस के सामने दृश्यमान सा खड़ा था जब वह पंकज के साथ बजरे पर शाम को वापस लौटा था. समुद्र किसी कुपित बाघ की भांति दहाड़ रहा था. पंकज पिछले 18 साल से यहां इसी समुद्री तल पर काम करते आए थे. उन्होंने समुद्र के विविध रंग बदलते तेवरों को देखा ही नहीं, झेला भी था. 'अरे, कुछ नहीं,' वे बेफिक्री से बोले थे, 'तूफान आतेजाते रहते हैं. मनुष्य को अपना काम करते रहना चाहिए.'

'फिर भी सर, इस बार खतरा कुछ ज्यादा ही दिख रहा है,' उन का सहायक मनीश सशंकित शब्दों में बोला, 'चारों तरफ से वार्निंग की खबरें आ रही हैं. सभी छोटेबड़े जहाज किनारों की ओर चले गए हैं. हमें रिस्क नहीं लेना चाहिए.'

'अब जो होगा, कल ही होगा न,' वे निश्ंचितभाव से बोले, 'अब आराम से खाना खाओ और सो जाओ. कल सुबह देखा जाएगा.'

'एक कोरोना से कम तबाह थे क्या, जो यह तूफान आया है,' शिवजी बोला, 'पूरे मुंबई में लौकडाउन लगा है. और यहां यह हाल है कि क्या होगा, क्या पता...'

'इसलिए तो मैं कहता हूं कि हम सुरक्षित जगह में आइसोलेटेड हैं, क्वारंटीन हैं.'

'आप भी सर, गंभीर बातों को हंसी में उड़ा देते हैं,' मनीश के यह बोलने पर वे हंसते हुए बोले, 'सोच लो, आज से हजार साल पहले जब वास्को डि गामा समुद्री मार्ग से आया होगा तो क्या हाल होगा... अभी तो ढेर सारी सुविधाएं हैं, सुरक्षा के इंतजाम भी हैं. अरे, हम जहाजियों का जीवन ही खतरों से खेलने के लिए बना है.'

खैर, रात 9 बजे तक सभी खापी कर अपनेअपने केबिनों में सोने चले गए. वह यों ही डेक पर टहलने जाने का विचार कर ही रहा था, मगर हवा काफी तेज थी. समुद्री लहरें जैसे हर किसी को लपकने के लिए आसमान चूमना चाह रही थीं. वह अपने केबिन में जा कर लेटा रहा. बजरा और दिनों की अपेक्षा आज कुछ ज्यादा ही हिचकोले खा रहा था. चूंकि समुद्री जीवन जीने के अभ्यस्त लोग इसे देखने के आदी हैं, उन्हें बजरे के हिलनेडुलने से विशेष फर्क नहीं पड़ना था.

अचानक तीखी आवाज से बजते सायरन को सुन कर वह चौंक पड़ा. सभी को लाइफ जैकेट पहनने और तैयार रहने को कहा जा रहा था. फोन, पर्स आदि जरूरी सामान के साथ वह लाइफ जैकेट पहने औफिस की ओर आया. वहां वरिष्ठ अधिकारियों के साथ पंकज भी गंभीर मुद्रा में लाइफ जैकेट पहने खड़े थे. वे बोले, 'सचमुच हम ने तूफान की गंभीरता समझने में भूल की. मगर अब तो बचाव का रास्ता ढूंढ़ना ही एकमात्र उपाय है.

बजरे के लंगर टूटते जा रहे हैं. 8 में से 3 टूट चुके हैं और अन्य भी कमजोर

पड़ रहे हैं. हमें डर है कि लंगर से मुक्त होते ही यह अनियंत्रित बजरा हिलतेडुलते, तूफान की लहरों के साथ बहते औयल रिंग के प्लेटफौर्म से न जा टकराए. प्लेटफौर्म पर तेल और गैस की पाइपलाइनें हैं, जो टकराने पर फट कर विस्फोट कर सकती हैं. ऐसे में बचने की सारी संभावना खत्म हो जाएगी.'

वे सभी लोग नौसेना अधिकारियों, तटरक्षकों, अपनेअपने मुख्यालयों में हाहाकार भरा त्राहिमाम संदेश फोन से, रेडियो द्वारा और व्हाट्सऐप से भी भेज रहे थे. उधर तूफान क्षणप्रतिक्षण विकराल होता जा रहा था. कमजोर पड़ते लंगरों के टूटने के साथ बजरे का हिलनाडुलना बेतरह बढ़ता जाता था. और आखिरकार वही हुआ, जिस की आशंका थी. लंगरविहीन बजरा अनियंत्रित हो औयल रिंग के प्लेटफौर्म की तरफ बढ़ने लगा, जिसे देख सभी का कलेजा मुंह को आने लगा था.

औयल रिंग प्लेटफौर्म के पास क्रूर लहरों ने बजरे को पटक सा दिया था. उस से बजरा जोर से टकराया जरूर, मगर कोई विस्फोट नहीं हुआ. लेकिन इस टक्कर से बजरे की पेंदी में एक छेद हो गया था, जिस से उस में पानी भरना आरंभ हो गया था. मतलब, एक मुसीबत से बचे, तो दूसरी मुसीबत में घिर गए थे. रबर के राफ्ट निकाले जाने लगे. उन्हें तैयार कर नीचे समुद्र में डाल दिया गया. मगर थोड़ी ही देर बाद देखा कि राफ्ट किसी नुकीली चीज से पंक्चर हो गया था और उस में बैठे लोग समुद्री लहरों के बीच लापता हो चुके हैं.

'घबराना नहीं राजन, हिम्मत रखना,' पंकज जैसे उस के बहाने खुद को दिलासा दे रहे थे, हौसला बढ़ा रहे थे. कह रहे थे, 'नौसेना का जहाज अब पहुंचने ही वाला है. अब हम सभी बच जाएंगे.'

डर

आप जो करने से डरते हैं उसे करिए और करते रहिए. अपने डर पर विजय पाने का यही सब से पक्का और तेज तरीका है जो आज तक खोजा गया है. *–डेल कार्नेगी*

सरिता

सचमुच नौसेना का जहाज ज्यादा दूर नहीं, दोचार मील के अंदर ही रहा होगा. मगर भयंकर तूफान और गहन अंधकार के बीच कम विजिबिलिटी की वजह से कुछ दिखाई नहीं दे रहा था. वहां से लगातार संदेश आ रहे थे, 'थोड़ा इंतजार करो, क्योंकि खराब विजिबिलिटी की वजह से नजदीक आने पर नेवी शिप की बजरे से टक्कर हो सकती है.'

और इसी इंतजार के बीच बजरा पानी में तेजी से धंसता चला जा रहा था. लगभग आधे से अधिक बजरे के पानी

में समाने पर ही सभी एकएक कर कूदने लगे. जो तैरना नहीं जानते थे, वे कूदने में ज्यादा झिझक रहे थे. हालांकि उन्हें यहां आने पर लाइफ जैकेट पहन कर तैरने का प्रशिक्षण दिया गया था. कुछ कूदे भी. मगर जो भयवश नहीं कूद पाए, उन्होंने बजरे के साथ ही जल समाधि ले ली.

तैराकी में उस की सदैव रुचि रही थी. गांव के समीप बहने वाली बूढ़ी गंडक हो अथवा मामा के गांव के किनारे बहने वाली बागमती, वह नहाने के बहाने काफी देर तक तैराकी करता, करतब दिखाता रहता था. यहां तक कि बाढ़ के दिनों में भी उसे कभी डर नहीं लगा. मगर नदी में तैरना एक बात है और अनंत समुद्र में तूफान का मुकाबला करना बिलकुल दूसरी बात. वह भी आधी रात के इस गहन अंधेरे में, जब एक हाथ को दूसरा हाथ नहीं सूझ रहा हो, तैरना असंभव को संभव बनाने जैसा है. समुद्र के नमकीन, खारे पानी से आंखों में जलन हो रही थी. तूफानी लहरें शरीर को कभी हवा में उछालतीं, तो कभी गहरे पानी में खींच ले जाती थीं.

मगर मनुष्य की जिजीविषा भी तो बड़ी है. वह इसी की बदौलत प्रकृति से, समय और समाज से संघर्ष करता है. हार होती है. मगर कभीकभी वह जीत भी जाता है. और जो जीतता है, वह इतिहास रचता है. यथार्थ तो यही है कि वह इतिहास रचने के लिए संघर्ष नहीं करता, बल्कि खुद को बचाने के लिए संघर्ष करता है. आने वाला समय उसे विजेता घोषित कर देता है.

यह सब तो बाद की बात है, अभी तो वह खुद को बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है, ताकि वह भविष्य में अपनी मां को, अपने छोटे भाईबहन को पालपोस सके, उन्हें सही शिक्षा दिलवा सके. यही तो उस के जीवन का मकसद है. उसे और क्या चाहिए?

उस के इर्दगिर्द अनेक लोग तैर रहे हैं, डूब या उतरा रहे हैं. लाइफ जैकेट उन्हें डूबने नहीं दे रही. उन के लाइफ जैकेट में लगी बत्ती जल रही है, जिस से उन के अस्तित्व का पता चल रहा है. जो तैरना नहीं जानते, वे जोरजोर से हाथपैर चलाते हुए खुद को थकाए दे रहे हैं. उन के भय और लाचारगी की कोई सीमा नहीं थी. और तो और, यहां सभी को अपनी जान के लाले पड़े थे. इस अथाह समुद्र में मौत से लड़ते लोगों को कोई पहचान कर भी क्या कर पाता.

इसी तरह तैरते कई घंटे के बाद नौसेना का जहाज दिखा तो जैसे आशा की किरण फूटी. पूर्व दिशा में भी लालिमा दिखने लगी थी. सूर्योदय होने को था. सभी उस जहाज की दिशा की ओर तैरने लगे.

मगर, यह क्या...? देखते ही देखते आसमान कालेकाले बादलों से भर गया था और उसी के साथ फिर अंधकार छा गया था. मूसलाधार वर्षा होने लगी थी. आशा की जो एक धूमिल किरण थी, वह भी धुंधली पड़ने लगी थी. समुद्री लहरें फिर काल के समान अट्टहास करते सभी को कभी आकाश की ओर उछालतीं, तो कभी गरदन दबा खारे पानी के भीतर खींच ले जाती थीं.

प्रकृति के इस रौद्र खेल को खेलने को वे अभिशप्त से थे. समय का ध्यान कहां था? कौन समय का ध्यान रख पाया है?

अचानक आकाश में बादल छंटे,

ऊपर सूर्य मुसकराया तो सब ने देखा कि ठीक बगल में नौसेना का जहाज खड़ा है. जहाज में बैठे नौसैनिक चिल्लाते हुए निर्देश दे रहे थे. वे हर संभावित व्यक्ति की तरफ रोप लैडर (रस्सी की सीढ़ियां) फेंक उसे पकड़ने के लिए इशारे कर रहे थे. कोई जैसे ही उसे पकड़ता, वह उसे खींच जहाज के अंदर कर लेते. न जाने कहां से अचानक उस में इतनी ताकत आ गई थी कि आखिरकार उस ने एक रोप लैडर को पकड़ लिया था.

अब वह नौसेना के जहाज में था. उस का रोआंरोआं अभी तक कांप रहा था. भय और आशंकाएं जैसे पीछा नहीं छोड़ रही थीं. नौसैनिक वहीं डेक पर उसे लिटा उस का प्राथमिक उपचार कर रहे थे. लेकिन उस की चेतना उसी तरह ऊपरनीचे हो रही थी, जैसे कि वह लहरों के द्वारा ऊपरनीचे उछाला जा रहा हो. डेक पर सैकड़ों लोग पड़े थे. उन में कौन जिंदा है और कौन मर गया, कहना मुश्किल था. फिर भी नौसैनिक भागदौड़ करते मैडिकल ट्रीटमैंट दे रहे थे. उन का एक दूसरा दल अभी भी समुद्र में निगाहें टिकाए देख रहा था कि शायद कहीं कोई भूलाभटका दिख जाए. इसलिए नेवी शिप से बंधे रोप लैडर अभी तक पानी में तैर रहे थे.

अगले दिन वह चैतन्य हुआ, तो खुद को आर्मी अस्पताल में पाया. बजरे में फंसे अनेक लोग उस वार्ड में भरती थे.

'यह अच्छी बात है कि आप ठीक हैं,' एक डाक्टर कह रहा था, 'आप मेरे सामने थोड़ा चलनेफिरने का प्रयास करें.'

वह उठा और कुछ कदम चल कर वापस अपने बैड पर आ गया.

इन्हें आजमाइए

✓ आवश्यक तेल आप की बौडी पर प्रभाव डाल सकते हैं और इन तेलों की सुगंध आप को नींद की आगोश में ले जा सकती है. अनिद्रा से ग्रस्त महिलाओं के लिए लैवेंडर, जैस्मीन, नेरोली और यांग लांग जैसे तेल से मालिश नैचुरल औयल थेरैपी है.

✓ अगर आप घर में एक नयापन चाहते हैं तो छोटीछोटी चीजों में बदलाव करें, जैसे कुशन कवर, टेबल रनर्स, बैडशीट, परदे आदि बदलें, जो घर में कलर तो ऐड करें ही, साथ ही थोड़े अलग व फंकी भी हों.

✓ अगर स्टडी से रिलेटिड कुछ सर्च करना है तो सीधा गूगल.कौम की जगह स्कौलर. गूगल.कौम पर सर्च करें तो आप को ज्यादा बढ़िया रिजल्ट मिल सकता है.

✓ खजूर में प्राकृतिक शर्करा पाई जाती है जो ग्लूकोज, फ्रक्टोज और सुक्रोज के रूप में होती है. यह शरीर में ऊर्जा के स्तर को बनाए रखने में मदद करती है.

✓ किसी खाली पड़ी टेबल पर अलगअलग रंग और साइज की मोमबत्तियां रखें और फिर देखें कमरा कितना सुंदर लगेगा.

✓ कोशिश करें कि आप घर में ऐसे पौधों को स्थान दें जो हवा को शुद्ध करने के साथसाथ किचन में भी आप के काम आ सकें. ●

दोपहर को उसे भोजन कराने के बाद एक नौसैनिक अधिकारी उस के पास आया और बोला, 'मुझे आप का सहयोग चाहिए. आशा है, आप 'ना' नहीं करेंगे.'

जिन लोगों की वजह से वह जिंदा है, उन का सहयोग कर खुशी ही मिलेगी. मगर अभी तो वह खुद अशक्त है. वह किसी की क्या मदद कर सकता है.

'बस, कुछ नहीं. कुछ लोगों की शिनाख्त करनी है,' नौसैनिक अधिकारी कह रहा था, 'डैड बौडी विकृत सी हो गई हैं. आप उन्हें पहचान सकें तो बेहतर है, ताकि उन के घर खबर भिजवाई जा सके.'

'ओह, तो यह काम है,' उस ने विचार किया, 'अब जब वह बच गया है, तो बचाने वाले का सहयोग करना उस का फर्ज बनता है.'

आर्मी अस्पताल के बाहर खुले में अनेक शव सफेद चादरों में लिपटे पड़े थे. उन्हें देखना यंत्रणादायक था. मगर एक शव के पास आते ही वह चीत्कार भर कर रो पड़ा. वह पंकज का शव था. वह वहां से दौड़ कर भागा और खुले में लोट गया.

उस के पीछे जब वह सैन्य अधिकारी आया, तो उस ने उस से फोन मांग कर पहले शिपिंग कंपनी में फोन कर उन्हें इस की जानकारी दी. फिर गांव में आलोक को फोन कर जानकारी देने लगा था.

और इस के बाद तो जैसे गांव से फोन पर फोन आने लगे थे. पंकज के भैया नारायण चाह रहे थे कि पंकज का शव गांव आए और वहीं उस की अंत्येष्टि हो. शीघ्र ही शिपिंग कंपनी का मैनेजर भी आ गया और उस से जानकारी लेने लगा था. अब वह उन के शव को उन के गांव भिजवाने की तैयारी में लग गया था.

'उन के शव के साथ तुम जाओगे,' मैनेजर उस से कह रहा था, 'अभी तुम्हें भी आराम की जरूरत है और यह तुम्हें अपने घर पर ही मिल सकता है. एकाध माह वहीं घर पर अपने लोगों के बीच रहोगे तो इस त्रासदी को भूलने में तुम को सुविधा रहेगी. इस के बाद तुम सुविधानुसार आ जाना.'

अचानक उसे लगा कि पंकज उस के पास खड़े कह रहे हैं, 'देखा, मैं ने कहा था न कि हम बच जाएंगे. देखो, हम बच कर वापस गांव आ गए हैं.'

अचानक फिर उस के सामने एक और दृश्य उभरा. सफेद चादरों में लिपटे कुछ शव उस की ओर देख रहे थे. उन्हीं के बीच जा कर पंकज फिर लेट गए थे. वह चीख मार कर उठा. बगल में लेटा हुआ उस का भाई सकते में था और पूछ रहा था, 'क्या हुआ भैया, कोई खराब सपना देखा क्या?'

'हां रे, बहुत खराब सपना था.'

सुदूर पूर्व में सूर्योदय हो रहा था. अंदर से मां आ रही थी. वह मां से लिपट कर रो पड़ा. ●

रिश्तों की परख मुसीबत में होती है
इस तरह के विषयों के सही उत्तर पाने के लिए सरिता नियमित पढ़िए. सरिता के वार्षिक ग्राहक बनिए. रजिस्टर्ड डाक से सुरक्षित डिलीवरी.
Subscription.mag@delhipress.in पर ईमेल भेजिए या 08588843408 पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर पूरी जानकारी लें.

जीवन की मुसकान

युगांडा के तानाशाह ईदी अमीन ने अगस्त 1972 में जब एशियाई मूल के सभी लोगों के निष्कासन के आदेश दिए तब भारत के विदेश मंत्रालय से कुछ अधिकारियों का दल कंपाला स्थित भारतीय उच्चायोग की सहायता के लिए भेजा गया, जिस का एक सदस्य मैं भी था.

धीरेधीरे भारतीय मूल के लोगों के चले जाने व अधिकतर दुकानों और प्रतिष्ठानों पर ताले लग जाने के कारण कंपाला शहर सुनसान सा लगने लगा.

नवंबर 1972 की एक शाम मैं अपने 2 मित्रों के साथ शहर के मुख्य मार्ग कंपाला रोड पर टहल रहा था. चारों ओर लगभग सन्नाटा पसरा था, इक्कादुक्का लोग ही नजर आ रहे थे. अचानक एक बैंक के सामने खड़ा सुरक्षा गार्ड हमें देख कर वहां की भाषा 'स्वाहिली' में चिल्लाने लगा.

हमें उस की बात समझ में न आई व हम चलते ही गए. इतने में वह हमारे सामने आ गया और बंदूक तान कर धमकीभरे अंदाज में बोलने लगा. इस अप्रत्याशित घटनाचक्र से हम घबरा गए व वहीं पर रुक गए. उसी समय सामने से आने वाले एक अफ्रीकी ने यह नजारा देख कर स्थिति भांपी. वह उस गार्ड और हमारे बीच आ गया.

वह उस गार्ड से बातचीत करने लगा. साथ ही, उस ने हमें वहां से निकलने का इशारा भी कर दिया. हम लोग फटाफट आगे बढ़े व एक गली में घुस कर भागते हुए वापस अपने होटल में पहुंच गए. आज भी जब वह घटना याद आती है तो हृदय उस अनजान अफ्रीकी के प्रति कृतज्ञता से भर जाता है.

सुरेश मल माथुर (सर्वश्रेष्ठ)

इस वर्ष कोरोना की सैकंड वेव में मुझे भी कोविड हो गया. अस्पताल जाने की नौबत आ गई. लेकिन अस्पताल में बैड नहीं मिल रहे थे. औक्सीजन के लिए लोग मारेमारे फिर रहे थे. मेरा औक्सीजन लैवल बहुत डाउन चला गया था. घरवाले परेशान थे. सब फोन कर के जानपहचान निकाल रहे थे कि कहीं से कोई मदद मिल जाए.

ऐसे में मेरी ननद का फोन आया कि तेरा अस्पताल में इंतजाम हो गया है और अभी आधे घंटे में एम्बुलैंस आ रही है. उन के हसबैंड ने मेरा एडमिशन करवाया था, जिन से हमें कोई उम्मीद नहीं थी. लेकिन उस वक्त वे हमारे लिए फरिश्ता बन कर आए थे. **सोनाली बिड़ला** ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा.

पता : **सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट,**
रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-55.

*अपना अनुभव **नाम** व **पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज/ऑडियो** भी कर सकते हैं.*

08588843415

कहानी

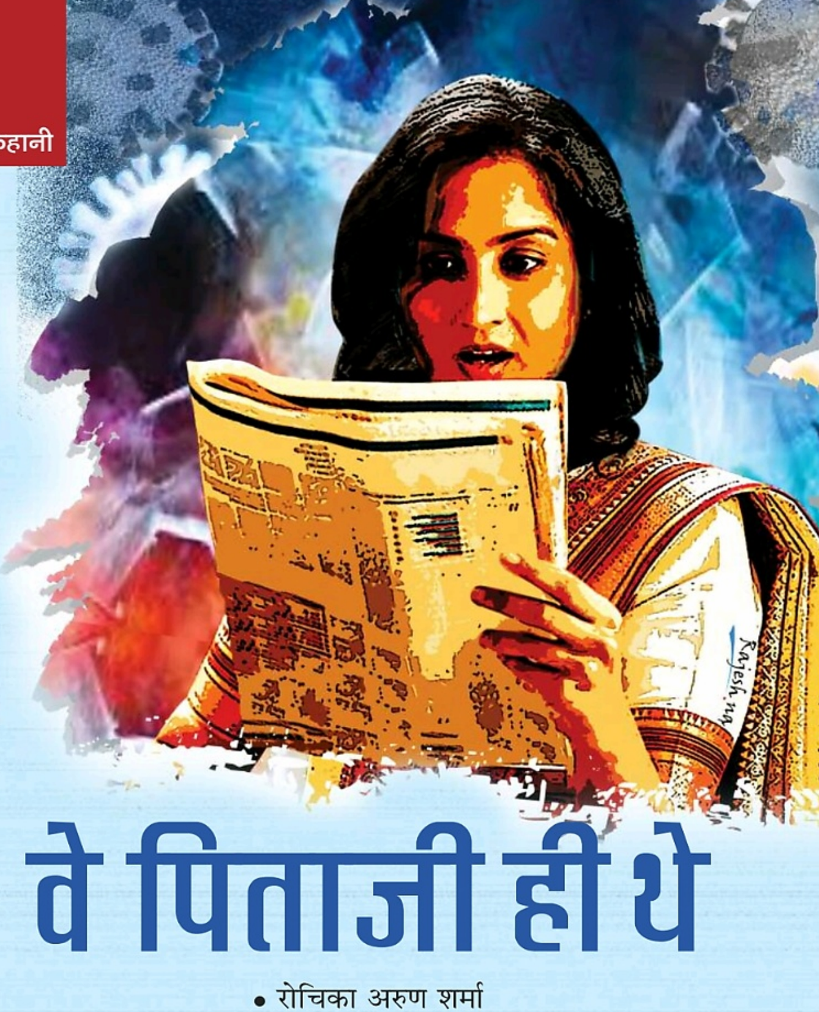

वे पिताजी ही थे

• रोचिका अरुण शर्मा

‘युवक को बचाने के लिए बुजुर्ग का बैड लेने से इनकार, 3 दिनों बाद स्वयं की मृत्यु’ शीर्षक से प्रकाशित खबर पढ़ कर रति बुदबुदाई, ‘मैं ही तो हूं वह महिला, जिस ने अस्पताल में फूटफूट कर रोना शुरू किया था.’ उसे सब समझते देर न लगी...

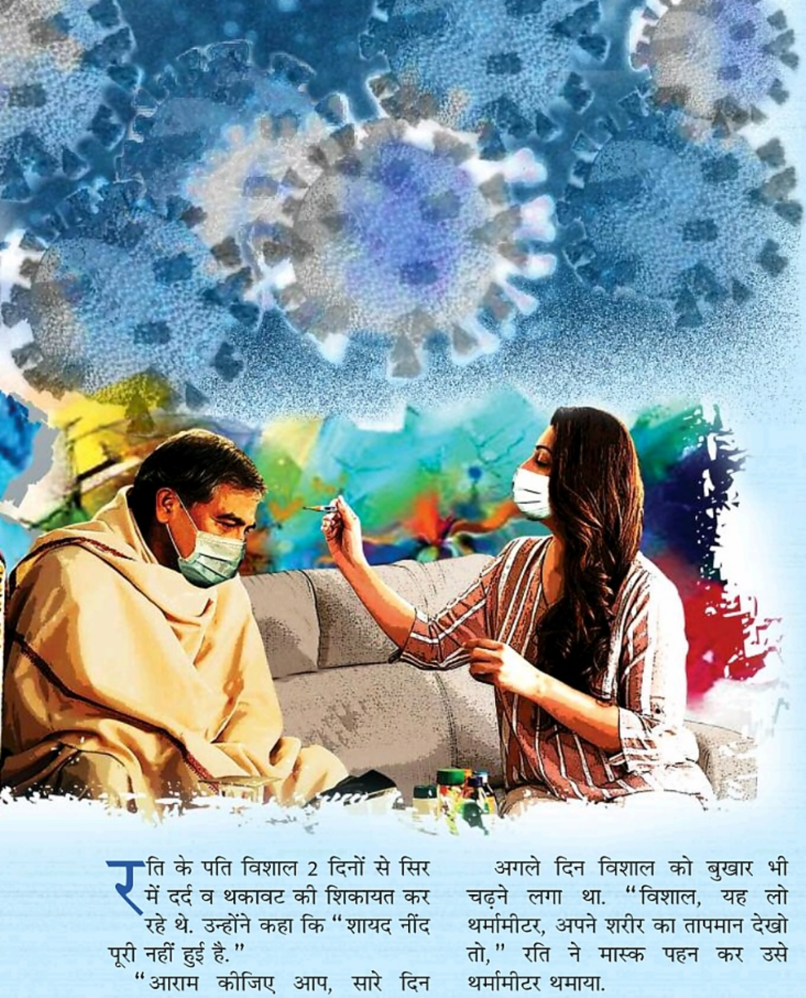

रति के पति विशाल 2 दिनों से सिर में दर्द व थकावट की शिकायत कर रहे थे. उन्होंने कहा कि “शायद नींद पूरी नहीं हुई है.”

“आराम कीजिए आप, सारे दिन लैपटौप में आंखें गड़ाए काम भी तो करते हैं,” रति के कहने पर विशाल ने सिरदर्द की दवा ली और दूसरे कमरे में जा कर सो गए.

रति मन ही मन चिंतित थी कि इन्हें तो आराम करने को कह रही हूं पर कहीं इन्हें... उफ्फ, मैं भी न क्या फालतू की बात सोचने लगी हूं.

अगले दिन विशाल को बुखार भी चढ़ने लगा था. “विशाल, यह लो थर्मामीटर, अपने शरीर का तापमान देखो तो,” रति ने मास्क पहन कर उसे थर्मामीटर थमाया.

तापमान सौ डिग्री था. विशाल ने स्वयं ही पास के डाक्टर को फोन किया और अपनी स्थिति बताई.

“लग तो कोरोना के लक्षण ही रहे हैं. यों करिए, आप अस्पताल जा कर सीटी स्कैन करवा लीजिए, कुछ ब्लड टैस्ट भी व्हाट्सऐप पर बता देती हूं,

आप जा कर करवा लीजिए और फिर रिपोर्ट मुझे दिखाएं."

घर में मानो भूचाल सा आ गया था. विशाल के पृथकवास यानी आइसोलेशन के लिए उस की पत्नी ने अलग कमरा तैयार कर दिया था.

सभी टैस्ट हुए, रक्त की जांच भी करवा ली गई थी और आज रिपोर्ट भी आ गई. डाक्टर ने सारी रिपोर्ट्स देख कर कोरोना का संक्रमण होने की पुष्टि कर दी थी.

रति के हाथपैर फूल गए थे. विशाल की शारीरिक स्थिति से अधिक मानसिक स्थिति खराब थी. एक कमरे में बंद हर पल यही विचार मन में आता कि 'यदि मुझे कुछ हो गया तो बच्चों का क्या होगा? उन की शिक्षा के लिए कैसे इंतजाम करेगी अकेली रति? कभी ऐसा सोचा ही नहीं था कि ऐसी महामारी यह सोचने पर विवश कर देगी. वैसे कुछ इंश्योरैंस पौलिसी तो ली हुई हैं मैं ने अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए. कुछ म्यूचुअल फंड्स और शेयर्स में भी इन्वैस्ट किया हुआ है. पर रति को तो फाइनैंस की कुछ जानकारी ही नहीं. कभी दोनों ने साथ बैठ कर यह सब चर्चा तो की ही नहीं.'

सोचतेसोचते उस का जी घबराने लगा था, कलेजा मानो हलक तक आ गया था. रहा न गया तो रति को फोन किया. फोन की घंटी लगातार बज रही थी, लेकिन रति ने फोन न उठाया तो वह कमरे के दरवाजे तक आ कर रति को आवाजें देने लगा था. बच्चों की औनलाइन कक्षाएं चालू थीं, सो उस की आवाज किसी ने न सुनी.

हताश हो कर वह फिर अपने बिस्तर पर लेट गया. उस की आंखों से अश्रुधारा बहने लगी थी. शरीर टूट रहा था और उस का धीरज भी छूट रहा था.

तभी उस के फोन की घंटी बजी. उस ने झट से फोन उठाया, देखा रति की कौल थी, "कहिए क्या चाहिए, आप ने फोन किया था, दरअसल रात में फोन साइलैंट मोड में कर देती हूं न, सुबह नौर्मल करने का ध्यान ही नहीं आया, इसलिए आप के कौल की घंटी नहीं सुनाई दी थी पहले. अब नौर्मल किया तो देखा कि आप की मिस्डकौल थी."

"कुछ नहीं चाहिए रति, बस मन थोड़ा घबरा रहा है. तुम फ्री हो तो कुछ बातें तुम से करना चाहता हूं," उस के पति ने घबराए स्वर में कहा.

"देखो, यदि मुझे कुछ हो जाए..."

"उफ्फ, ये कैसी बातें कर रहे हैं आप," रति ने विशाल की बात काटी.

"क्या करूं, मजबूर पिता हूं मैं. कल को मैं न रहूं तो तुम्हें व बच्चों को कोई परेशानी न हो, इसलिए कुछ बातें तुम से साझा करना चाहता हूं. अखबारों और टीवी चैनलों पर दिखाई जा रही खबरों के अनुसार कोरोना के बढ़ते संक्रमण के चलते अस्पतालों में मरीजों के लिए जगह नहीं, दवाइयों की मुश्किल, रेमडेसिविर इंजैक्शन की सप्लाई कम पड़ रही है, अस्पतालों में बैड उपलब्ध नहीं. इसलिए फिक्रमंद हूं."

"पहले आप नकारात्मकता को स्वयं से दूर कीजिए, सब अच्छा ही होगा. हम ने आज तक किसी का बुरा नहीं किया," रति ने उसे ढाढ़स बंधाया.

"तुम ठीक ही कहती हो पर क्या करूं मन में बहुत बुरे भाव आ रहे हैं, अस्पतालों में लाशों के ढेर, भयावह मंजर आंखों के सामने बारबार घूमघूम कर

आता है तो तुम्हारी और बच्चों की फिक्र होती है. खैर छोड़ो, मैं तुम्हें जो जानकारी दे रहा हूं उसे ध्यान से सुनो." विशाल ने रति को अपने इन्वैस्टमैंट और इंश्योरैंस पौलिसी के बारे में जानकारी दी और कहा कि सभी फाइलें पढ़ कर अपने पास संभाल कर रख लो.

"ऐसा करो, तुम फाइलें ले कर बैठो, मैं वीडियोकौल करता हूं और तुम्हें फाइलों के अंदर की सामग्री की जानकारी देता जाता हूं."

रति फाइलें ले कर बैठ गई थी और विशाल उसे वीडियोकौल की मारफत जानकारी दे रहा था.

सारी जानकारी दे कर उस ने अंत में रति से कहा, "सुनो, यदि मुझे कुछ हो जाए तो तुम विधवा के लिबास में न रहना..."

"विशाल, ऐसा मत कहो, मुझे नहीं अच्छा लग रहा यह सब सुनना," रति ने खीझ कर कहा.

"क्या करूं रति, बचपन में पिता का साया सिर से उठ गया था, अपनी मां को विधवा के लिबास में देखा. न जाने कितने ही धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समय मां सब से अलग बैठी रहती. स्वयं नौकरी कर मुझे पालापोसा, बड़े दुख के दिन देखे मां ने, इसीलिए डरता हूं."

"अच्छा ठीक है, मैं आप के लिए नाश्ता ले कर आती हूं, बुरे विचार मन में मत लाओ वरना मैं रो पड़ूंगी."

अगले ही पल दोनों वीडियोकौल पर आमनेसामने बैठ कर नाश्ता खा रहे थे. रति की आंखें आंसुओं से भरी थीं और विशाल के माथे पर चिंता की रेखाएं.

एकएक दिन कर 7 दिन बीत चुके थे. विशाल की दवाइयां चालू थीं. लेकिन स्वास्थ्य में खास सुधार नहीं आ रहा था. रति की मानसिक स्थिति भी खराब होती जा रही थी. कभी अपने बच्चों की तरफ देखती तो कभी कमरे में कोरोना पीड़ित पति को बंद दरवाजे के अंदर.

ईमानदारी

कोई भी प्रसिद्धि ईमानदारी जितनी समृद्ध नहीं होती है.

–विलियम शेक्सपियर

सरिता

लेकिन उसे स्वयं को तो हिम्मत रखनी ही होगी न, घर में और कोई है भी तो नहीं संभालने वाला.

आज फिर उस ने डाक्टर को विशाल की सारी स्थिति से वाकिफ करवाया, "डाक्टर, मेरे पति विशाल को सांस लेने में भी परेशानी होने लगी है, आप ही बताइए मैं क्या करूं," बोलतेबोलते उस का गला भर आया था.

"आप उन्हें तुरंत अस्पताल में एडमिट कीजिए और हिम्मत रखिए," डाक्टर ने अपने हाथ खड़े कर उन्हें अस्पताल का रास्ता दिखा दिया था.

ऐसे में कौन भला उसे अस्पताल ले कर जाए, एंबुलैंस की सरकारी और

प्राइवेट दोनों ही सुविधाएं खूब कोशिश करने पर भी उसे मिली नहीं. उस के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी थीं. बिल्डिंग के बाहर एंबुलैंस के साइरन तो खूब सुनाई देते हैं पर सब की सब तेज गति से अस्पतालों की तरफ रुख करती हुई दौड़ती चली जाती हैं.

वह घर से बाहर सड़क पर आ कर खड़ी हो गई. आतीजाती कारों, एम्बुलैंस, टैक्सी को हाथ दिखाती पर कोई न रुकता. कोई थमता भी तो कोरोना मरीज को ले जाने को तैयार न होता. अंत में एक औटोरिकशा वाले के सामने वह गिड़गिड़ाई, "कृपया कर मुझ पर तरस खाइए, मेरे छोटेछोटे बच्चे हैं, मैं आप को सैनिटाइजर भी दे दूंगी, उस से आप रिकशा सैनिटाइज कर लेना, भाड़ा भी आप जो बोलें वह उचित, मुझ पर रहम करो." रिकशावाला उस के पति को अस्पताल ले जाने को राजी हो गया. शायद उस के घर में भी भूख पसरी हुई थी, क्योंकि औटोरिकशा से आनेजाने वाले लोगों की संख्या भी तो कोरोना के चलते कम हो गई थी.

अस्पताल तक का सफर उसे मीलों लंबा लग रहा था. पति को अपनी गोद में पसारे औटो में बैठी उस की रुलाई फूट रही थी. कब अस्पताल का बोर्ड दिखे... वह मन ही मन सोच रही थी.

जैसे ही अस्पताल पहुंची, मुट्ठी में रखे भाड़े के रुपए, सैनिटाइजर देते हुए उस ने उसे धन्यवाद भी दिया और अस्पताल के रिसैप्शन की तरफ बढ़ गई.

हाहाकार की आवाजों और कोरोना मरीजों के परिजनों के बीच से निकलते हुए वह काउंटर तक पहुंची. दिल की धडकनें मानो थम सी गई थीं, पूरे बदन में गरमी की लहर सी निरंतर दौड़ रही थी. हर तरफ रुदनक्रंदन के स्वर में सिर्फ यही सुनाई दे रहा था– 'बैड चाहिए...'

उस ने भी जोर से पुकारा, 'मेरे पति की हालत बहुत गंभीर है, एक बैड चाहिए.'

भला रिसैप्शन पर बैठे स्टाफ कहां से बैड उपलब्ध करवाते?

'सौरी सर, सौरी मैम,' कहतेकहते उन का गला भी भारी हो चुका था. रोंआसे चेहरों के बीच रति ऐसा एक चेहरा खोज रही थी जो इस भयावह समय में उस की मदद कर सके. लेकिन हर शख्स, हर चेहरा हालात के हाथों मजबूर नजर आ रहा था.

आखिरकार, उस की रुलाई फूट पड़ी थी. वह अपने पति को बैंच पर बैठा कर स्वयं पास ही में बैठ गई और फूटफूट कर रोने लगी. कभीकभी रिसैप्शन की तरफ उम्मीदभरी नजर से देखती कि उस के पति के लिए कहीं से बैड का इंतजाम हो जाए.

आसपास सभी तो कोरोना के मरीज एवं उन के परिजन थे, सामान्य मरीजों के लिए तो अस्पताल के दूसरे दरवाजे से दाखिल होने की व्यवस्था थी.

तभी अचानक से रिसैप्शन पर बैठे स्टाफ ने उस के पति का नाम पुकारा. वह दौड़ कर वहां गई. 'आप के पति के लिए बैड की व्यवस्था हो गई है, आप कागजी कार्यवाही पूरी कीजिए और हम आप के पति को एडमिट कर देते हैं.'

मन में न जाने कितने सवाल एकसाथ उठ खड़े हुए थे, 'यह कैसे संभव हो गया... किस ने की बैड की व्यवस्था? कितना खर्च आएगा आदि.'

लेकिन मस्तिष्क को कागजी कार्यवाही की तरफ खींच लाई रति और

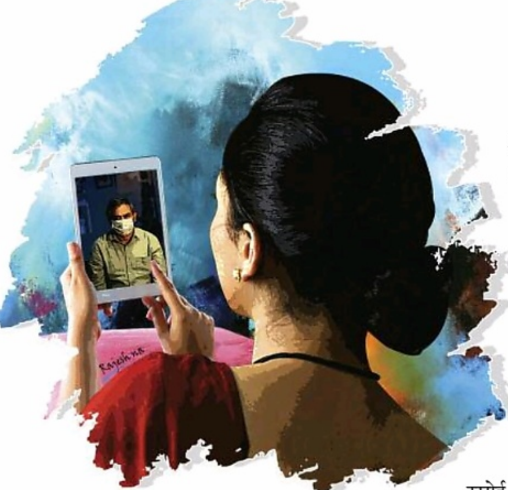

''सुनो, मुझे कुछ हो जाए तो तुम विधवा के लिबास में न रहना,'' वीडियोकौल पर विशाल रति को फाइलों की जानकारी देने के बाद बोला.

मन ही मन धन्यवाद करने लगी कि जिस ने भी यह व्यवस्था की वह सदा सुखी रहे.

पति को अस्पताल में एडमिट करते ही उसे अपने बच्चों का खयाल आया. घर पर फोन किया और उन्हें सुखद संदेश दिया कि उन के पिता को बैड मिल गया है. फिक्र न करें, वह घर लौट रही है.

सारी रात मन में पति के स्वास्थ्य के बारे में सोचते हुए प्रकृति से विनती करती रही. बारबार मन में यह विचार भी आया कि बैड न मिलने की इतनी समस्या है, लोग जानपहचान निकाल कर अस्पताल में बैड की व्यवस्था कर रहे हैं. जिन के पास बहुत रुपएपैसे हैं वे भी किसी न किसी तरह परेशान हैं और व्यवस्था करने में लगे हुए हैं. लेकिन उस का तो कोई खैरख्वाह नहीं. न तो इतना रुपयापैसा और न ही कोई ऊंची पहुंच. मन ही मन अस्पताल के स्टाफ को धन्यवाद करते हुए कब उस की आंख लग गई, पता न चला.

तीन दिन कभी घर कभी अस्पताल के चक्कर लगाती वह बेहद थकान महसूस कर रही थी. स्वयं भी मन ही मन डर रही थी कि कहीं उसे भी संक्रमण न हो जाए. मास्क तो जैसे तीन दिन में उतारा ही नहीं, सिर्फ रात को सोते समय उतारती. हाथों में सैनिटाइजर हर वक्त रहता. आज घर लौट कर सांझ ढले ही निढाल हो पलंग पर लेट गई और आंख लग गई.

सुबह नियत समय पर नींद खुली, रसोई में आ कर चायदूध तैयार किया. अखबार उठाया तो मोटे अक्षरों में खबर की हैडलाइन देख कर उस की आंखें भर आईं.

'युवक को बचाने के लिए बुजुर्ग का बैड लेने से इनकार, 3 दिनों बाद स्वयं की मृत्यु' पूरी खबर पढ़ी.

धीरे से बुदबुदाई- 'मैं ही तो हूं वह महिला, जिस ने अस्पताल में फूटफूट कर रोना शुरू किया था.' उसे समझते देर न लगी कि यही वे महान पुरुष हैं जिन के त्याग से उस के पति को बैड मिला.

'किन शब्दों में धन्यवाद करूं मैं आप का. भला एक पिता के सिवा इतना कौन किसी के लिए कर सकता है? मेरे पति को जीवन में सदैव पिता की कमी खली. पर आप भी तो पिता समान ही थे,' वह मन ही मन बुदबुदाई.

अस्पताल में स्वास्थ्य में सुधार पाते उस के पति को उस ने पूरी घटना फोन पर बताई और कहा, 'जरूरी नहीं कि रिश्ता खून का हो, कुछ रिश्ते अनजाने भी होते हैं. यों समझिए कि वे पिताजी ही थे.' ●

पाठकों की समस्याएं

मैं अपने बौयफ्रैंड के साथ 3 साल से रिलेशनशिप में हूं. हमारा रिलेशनशिप ऐसा है कि हम अपने घरों में इस रिलेशनशिप के बारे में कुछ नहीं बता सकते. फिलहाल हम एकदूसरे के साथ खुश हैं लेकिन पता नहीं क्यों मैं अपने इस रिलेशनशिप को ले कर डिप्रैशन में चली जाती हूं, जबकि मुझे पता है, हमारे इस रिलेशनशिप का कोई भविष्य नहीं है.

हम एकदूसरे के साथ कमिटिड भी नहीं हैं लेकिन फिर भी कई बार मैं अपने बौयफ्रैंड से कुछ उम्मीदें लगा बैठती हूं, जो पूरी नहीं होतीं तो मैं हताश हो जाती हूं. कुछ भी अच्छा नहीं लगता.

कई बार गुस्सा आता है कि कह दूं कि मुझे तुम से कोई रिश्ता नहीं रखना. वैसे भी, हमारे रिलेशनशिप का कोई भविष्य नहीं. प्यार की बातें बेकार लगती हैं. फील करती हूं जैसे हम सिर्फ सैक्स पार्टनर हैं. आप ही बताएं कि मैं क्या करूं?

आप जानती हैं कि जब आप के इस रिलेशनशिप का कोई भविष्य नहीं है तो क्यों बेवजह परेशान हो रही हैं. रिलेशनशिप में जब कोई कमिटमैंट नहीं, तो क्यों होप लगाती हैं कि आप का बौयफ्रैंड आप को अपने हर काम, हर एक्टिविटी की खबर दे.

आप शायद दोनों एकसाथ रिलेशनशिप में आए ही सैक्स के लिए थे. आप दोनों की ही कोई न कोई प्रौब्लम होगी, जो घरवालों को अपने रिलेशनशिप के बारे में नहीं बता सकते, ऐसा हमें लगता है क्योंकि वजह आप ने लिखी नहीं है. खैर, वजह जो भी हो. जिंदगी में खुद भी कूल रहिए और अपने बौयफ्रैंड को भी रहने दीजिए. उसे फ्री छोड़ दें. रिश्तों में स्पेस जरूरी है.

एकदूसरे की जिम्मेदारियों से आप दोनों का कोई सरोकार नहीं होना चाहिए क्योंकि जिम्मेदारियां हम वहां निभा सकते हैं जहां सब को यानी कि घरवालों को आप दोनों के रिलेशन के बारे में पता हो, जोकि नहीं है. इसलिए चाहते हुए भी आप दोनों एकदूसरे के सुखदुख में शामिल नहीं हो सकते, एकदूसरे की कोई जिम्मेदारी नहीं उठा सकते.

घर वालों से छिपे रिलेशनशिप में ऐसा ही होता है क्योंकि ऐसे रिलेशनशिप सिर्फ अपनी खुशी के लिए बनाए जाते हैं. आप का रिलेशनशिप 3 साल से चल रहा है, यही बड़ी बात है और जब तक यह रिलेशन चलता है, चलाएं.

*

अगले 2 महीने बाद मेरी शादी है. घर में बैठेबैठे मेरा वजन बढ़ गया है. देखने में मैं मोटी लगने लगी हूं. जबकि मेरे होने वाले पति काफी स्मार्ट और फिट हैं. शादी के बाद यह सुनने को न मिले कि जोड़ी बेमेल है. मैं जल्द से जल्द पतली होना चाहती हूं. मैं ने इंटरमिटैंट फास्टिंग के बारे में सुना है कि इस से तेजी से वजन घटता है. क्या वाकई ऐसा है?

मोटापा सेहत भी बिगाड़ता है और

लुक भी. आप के पति हैल्थ कौंशियस हैं तो वे भी चाहेंगे कि आप हैल्दी और फिट हों. इसलिए देर आए दुरुस्त आए. आप को अपना वजन घटाना ही चाहिए ताकि शादी के बाद लोग कहें, क्या लाजवाब जोड़ी है, कोई किसी से कम नहीं.

तेजी से वजन घटाने के लिए इंटरमिटैंट फास्टिंग को काफी कारगर तरीका माना जाता है. इंटरमिटैंट फास्टिंग खाने का एक पैटर्न है, जिस में इंसान 12-16 घंटे तक खाना खाए बिना रहता है और खाना खाने का वक्त सिर्फ 6 या 8 घंटे का ही होता है.

इस में किसी मीठे के बिना सादा पानी, कौमोमाइल चाय, गुलाब की चाय, अदरक की चाय, काली चाय आदि ही पीने की अनुमति होती है. इस के अलावा आप ताजा सब्जियों के जूस का सेवन कर सकते हैं. इन 16 घंटे के समय में आप को कोई पैक स्नैक्स, सब्जियों और फलों को खाने की भी अनुमति नहीं होती है.

इंटरमिटैंट फास्टिंग वजन घटाने में मददगार है. जब तक आप हाइड्रेटेड रहते हैं और अच्छी तरह से संतुलित भोजन खाते हैं, तब तक आप को इस का कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है. इसलिए आप को समझना होगा कि यह कैलोरी पर रोक लगाने वाला एक डाइट प्लान नहीं है, बल्कि यह खाने के पैटर्न को व्यस्थित करने वाला दृष्टिकोण है.

*

मैं अपने मातापिता का इकलौता पुत्र हूं. मैं ने अपनी मरजी से शादी की है. लड़की नेपाली है, इसलिए मातापिता को वह बिलकुल पसंद नहीं, क्योंकि उन्होंने मेरे लिए अपनी जात (पंडित) की लड़की पसंद की हुई थी.

मेरे पिता जातबिरादरी को बहुत महत्त्व देते हैं. मैं अब पत्नी के साथ अलग एक किराए के मकान में रहता हूं. मेरी कोई खास जौब नहीं है और पत्नी की भी कोई खास आमदनी नहीं है. अब आटेदाल का भाव पता चल रहा है. पिता कहते हैं कि मुझे संपत्ति से बेदखल कर देंगे. क्या वे ऐसा कर सकते हैं. इकलौता पुत्र होने के नाते क्या उन की संपत्ति पर मेरा कोई कानूनी अधिकार नहीं है?

कानूनन जो संपत्ति किसी व्यक्ति ने खुद की कमाई से अर्जित की है या खुद बनवाई है, उस संपत्ति के ऊपर व्यक्ति के बेटे या बेटी का कानूनी रूप से कोई अधिकार नहीं होता है. हां, यदि आप के पिता को संपत्ति अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई है तो उस पैतृक संपत्ति पर आप का भी पूर्ण अधिकार है. लेकिन पिता की मृत्यु के बाद ही पैतृक संपत्ति में अपने अधिकार का दावा कर सकते हैं. फिलहाल आप के पिता जब तक जीवित हैं, संपत्ति पर उन्हीं का मालिकाना हक है. वे अपनी मरजी से अपनी पैतृक संपत्ति को किसी अन्य व्यक्ति को बेच भी सकते हैं या किसी के नाम पर वसीयत भी कर सकते हैं.

यदि पिता अपनी संपत्ति किसी के नाम नहीं करते हैं और उन की मृत्यु हो जाती है तो ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति के वैध उत्तराधिकारियों के बीच पैतृक संपत्ति का बंटवारा कर दिया जाता है. **-कंचन** ●

आप भी अपनी समस्या भेजें

पता : कंचन, सरिता
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.
समस्या हमें एसएमएस या व्हाट्सऐप के जरिए मैसेज/ऑडियो भी कर सकते हैं.
SMS
08588843415

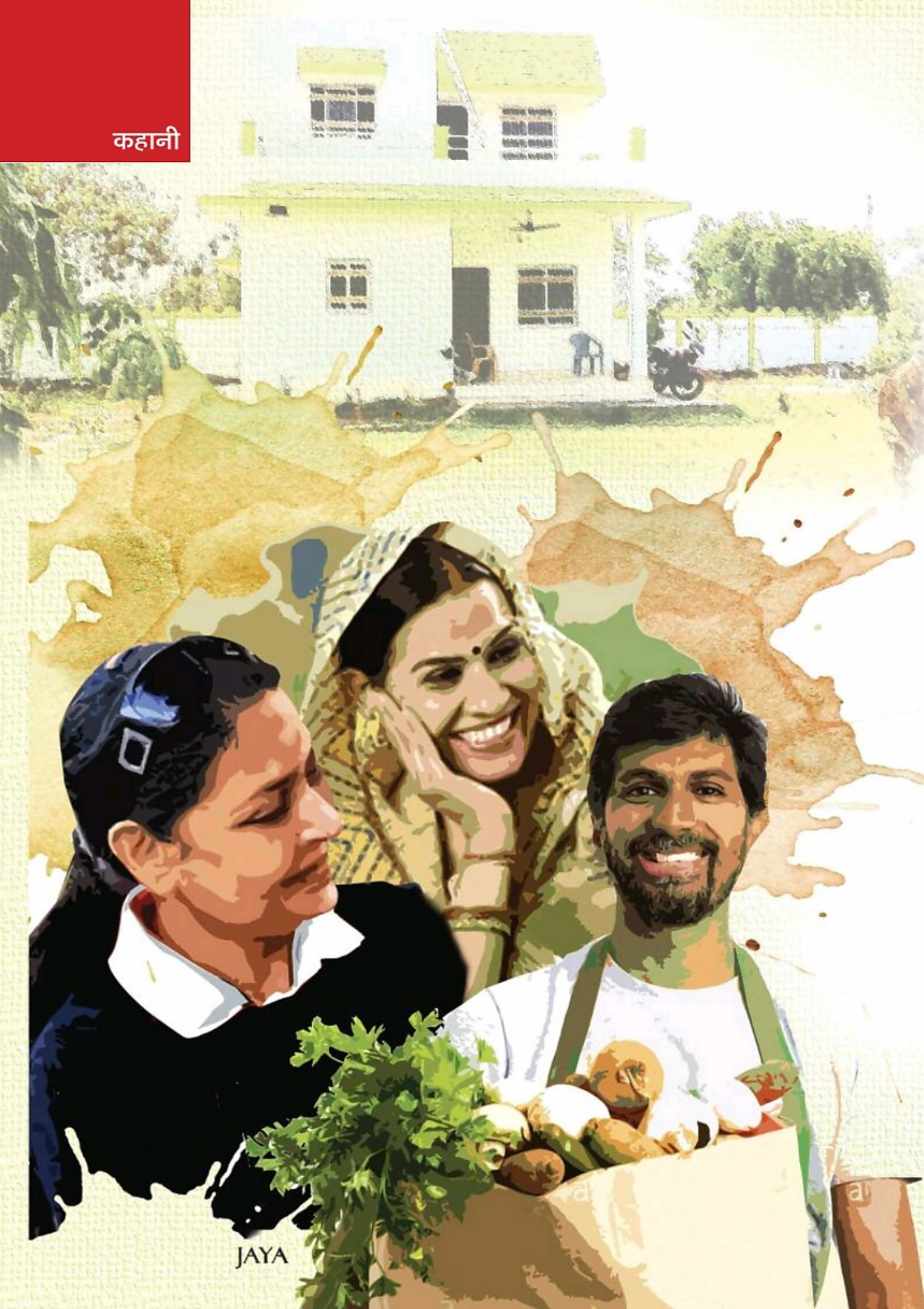
JAYA

समझौता

• दीपा पांडेय

नई किराएदारिन रीना के साथ महेश को देख सुधा हैरत में थी. वजह, रीना का महेश से क्या संबंध है. रीना तो विधवा हो कर बच्चों को गांव छोड़ आई है और यहां महेश के साथ घूम रही है. कहीं रीना अपने पति का खून कर के तो नहीं आई? सुधा असमंजस में थी. आखिरकार सुधा सचाई जानने के लिए रीना के पास खुद ही चली आई. जब सच पता चला तो सुधा की भी आंखें गीली हो गईं. आखिर क्या थी हकीकत?

सुधा ने दूसरी मंजिल से नीचे उतरते हुए अपनी नई किराएदारिन रीना पर नजर डाली. लंबी, छरहरी, गुलाबी रंगत लिए गोरी काया, कजरारी आंखें, चौड़े माथे पर नन्ही सी मैरून रंग की बिंदी, कमर तक लहराते बालों से अभी भी पानी टपक रहा था.

सुधा को अपनी तरफ देख रीना सकुचा कर बोली, “दीदी नमस्ते, आज सुबह उठने में देर हो गई. कल अस्पताल में 4 डिलीवरी थीं. मैं बहुत थक गई थी.”

“अरे, गीले बालों को तो सुखा लेती, एक ड्रायर ले कर रख लो.”

“आ कर आप से मिलती हूं दीदी,” रीना तेजी से गेट खोल कर बाहर निकल गई. बाहर वही मोटरसाइकिल सवार खड़ा था. रीना उस के पीछे लपक कर बैठ गई.

“सुनोजी, यह रीना आप को विधवा लगती है क्या? यह मोटरसाइकिल वाला रोज ही इसे लेने व छोड़ने आता है. यह तो अस्पताल में होती है, पर ये महाशय तो सिलैंडर, सब्जी, घरेलू सामान ला कर रख जाता है. एक चाबी इस को भी दे रखी है इस ने,” सुधा शंकित हो अपने पति विराज से बोली.

“उसी से खुल कर पूछ लो एक दिन. उस की विधवा होने और 2 छोटे बेटे गांव में रखने की कहानी तो उस से सुन ही चुकी हो, तब तुम्हें बड़ा तरस आ रहा था. अब क्या हुआ?” विराज ने चिढ़ाते हुए कहा.

सुधा जानती थी कि रीना को कम किराए पर वन रूम सैट देने के कारण ही उस के कंजूस पति उस से नाराज हैं. उस ने पलट कर कुछ नहीं कहा और सोचा, रीना को समझा देगी कि उसे इस पुरुष का बेरोकटोक घर पर आना पसंद नहीं, भले ही वह रीना का रिश्तेदार ही क्यों न हो.

उस दिन रीना एक प्लेट में गरमागरम पकौड़ी ले कर आई, बोली, “दीदी, आज बड़े दिनों के बाद पकौड़ी बनाने का मन हुआ. सोचा कि आप को भी खिला दूं.”

सुधा सोच में पड़ गई. वह जल्दी से हर किसी के हाथ से खाना पसंद नहीं करती है. वह पहले दूसरों की साफसफाई पर ध्यान देती है.

“लीजिए, आप पकौड़ी खाइए, मैं चाय बना कर लाती हूं,” रीना की बात

सुनते ही सुधा बोल पड़ी, "तुम बैठ कर पकौड़ी खाओ. मैं चाय बना कर लाती हूं. आज मेरा सुबह से ही पेटदर्द कर रहा है. मैं फिर कभी पकौड़ी खा लूंगी."

रीना का मुंह उतर गया. वह चुपचाप बैठ कर पकौड़ी कुतरने लगी. सुधा चाय बना कर ले आई और बोली, "तुम्हारे बेटों के क्या हाल हैं?"

"वे दोनों बहुत शैतान हैं, अकेले छोड़ने लायक नहीं हैं. बड़ा वाला 5 साल का है और छोटा ढाई साल का."

"तुम्हारे मायके में कौनकौन हैं?" सुधा ने जानना चाहा.

"मां, पिताजी और 2 भाई हैं. मेरी ससुराल से अनाज आ जाता है. भाई लोग वहां से मिली जमीन की देखभाल करते हैं. हर महीने 5,000 रुपए मैं भी भेज देती हूं," रीना चाय का घूंट भरती हुई बोली.

"ससुराल से जमीन मिल गई क्या?" सुधा ने पूछा.

"मेरे पति के हिस्से की जायदाद अब दोनों बेटों के नाम करा दी है. ससुर तो पहले ही गुजर चुके थे. मेरा पति यहां शहर में निजी कंपनी में ड्राइवर था. मैं गांव में ही 2 बच्चों के साथ अपनी सास के संग रह रही थी.

"हमारी शादी को 6 बरस हो गए थे. सास हमारी टीबी की मरीज थीं. वे समय से दवा नहीं खाती थीं. एक दिन वे रातभर खांसती रहीं, फिर सुबह दम तोड़ दिया. हम बच्चों को ले कर शहर आ गए. केवल 8वीं जमात पास हैं हम. हम ने कभी शहर देखा नहीं था. गांवों में शादियां भी कम उम्र में हो जाती हैं. यहां मेरे पति ने एक गंदी सी बस्ती में मकान किराए पर लिया हुआ था. उन्हीं शराबीजुआरियों के बीच उस का उठनाबैठना था. मुझे 4,000 रुपए थमा देते घर चलाने को, बाकी सब रुपया फूंक देते. बच्चे टौफी, बिस्कुट, दूध को तरसते रहते. इस से तो गांव अच्छा था. अपने घर दूध, घी, अनाज की कमी न थी," रीना बोलती ही चली गई, जैसे कितना कुछ भरा हो भीतर, कोई तो सुने उस के दुखदर्द.

तभी गेट पर हौर्न बजा. विराज औफिस से घर लौट आए थे. दोनों की बातचीत अधूरी रह गई. सुधा गेट खोलने चली गई. रीना दोमंजिले में चढ़ गई.

एक सुबह सुधा की 5 बजे ही नींद खुल गई. दिसंबर के महीने में बाहर धुंध थी. उस ने धीरे से गेट खुलने और बंद होने की आवाज सुनी. बाहर झांक कर देखा तो रीना गेट बंद कर रही थी. तभी मोटरसाइकिल स्टार्ट होने की आवाज आई.

'ओह, तो कल रात यह महेश यहीं रुका था,' सुधा ने सोचा. वह दिनभर उस महेश के विषय में सोचती रही. दिन में अखबार की एक खबर पढ़ कर उसे यह विचार आया कि कहीं ऐसा तो नहीं कि रीना भी अपने प्रेमी के साथ मिल कर पति का कत्ल कर अब मेरे मकान में आ कर रहने लगी हो. आजकल किसी के चरित्र का कोई भरोसा नहीं है. विराज से भी कुछ विचारविमर्श नहीं कर सकती. उस ने ठान लिया कि बुधवार को जब रीना घर पर रहती है, तो उस से खुल कर बात करेगी और कोई न कोई बहाना बना कर घर खाली करवा लेगी.

बुधवार की सुबह सुधा ने 11 बजे तक सारे काम निबटा लिए और रीना के पास पहुंच गई. सुधा को अचानक सामने देख रीना हड़बड़ा गई. अपने बैड के सिरहाने रखा फोटोफ्रेम उस ने झट से उलटा दिया.

"दीदी आइए न, आज 2 महीने हो गए, आप के घर आए. आप कभी ऊपर

झांकने भी नहीं आईं," रीना ने प्लास्टिक की कुरसी खिसकाते हुए कहा.

सुधा ने कुरसी पर बैठते हुए पूरे कमरे का मुआयना कर लिया. डबल बैड और 2 प्लास्टिक की कुरसियां, एक मेज, फ्रिज, छोटा कूलर, गैसचूल्हा और थोड़े से बरतन. बस, इतनी सी गृहस्थी. उस ने छोटे से कमरे में सबकुछ सुरुचिपूर्ण ढंग से रखा हुआ था. सभी वस्तुएं साफ और व्यवस्थित थीं.

सुधा को थोड़ी तसल्ली हुई. वह सोच कर आई थी कि अगर उस ने चायपानी को पूछा तो कह देगी कि वह अभी नीचे से नाश्ता कर के ही आई है.

"दीदी, चाय बना दूं?" रीना ने पूछा.

"नहीं, अभी नहीं. मैं ने तुम को डिस्टर्ब तो नहीं किया," सुधा ने औपचारिकता में पूछा.

"नहीं दीदी, आज फुरसत है. सुबह ही उठ कर मैं ने इडलीसांभर बना दिया है. अब आराम हो गया दिनभर के खाने का. मैं तो खुद नीचे आने वाली थी आप को देने के लिए. अभी खिलाऊंगी आप को," उस के बच्चों जैसे निर्दोष चेहरे को देख सुधा को अपने ऊपर कोफ्त हुई कि वह उसे खूनी समझ कर उस पर शक करती है.

सुधा गेट पर खड़ी औटो का इंतजार कर रही थी कि सामने से स्कूटी पर सवार रीना नजर आ गई.

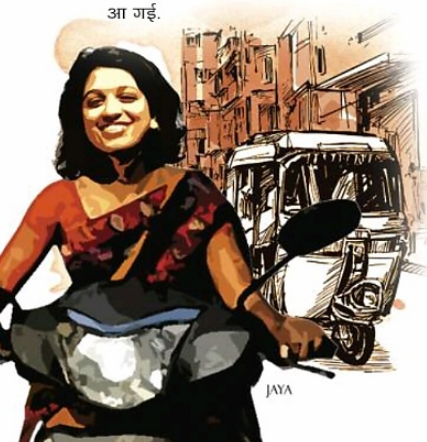

"तुम्हारे पति की अचानक ही मौत कैसे हो गई?" सुधा पूछे बिना रह न सकी.

"दीदी, आप से क्या छिपाना. सच तो यह है कि जब तक मैं गांव में थी, सुकून से थी. मेरा पति 15-20 दिनों में गांव का चक्कर लगा जाता. महीने में 4-5 हजार रुपए दे भी जाता था. यहां आ कर जब रहने लगी तो पता चला कि वह नशे में डूबा रहता है. इसी वजह से उसे दिन की ही ड्यूटी मिलती थी.

"महेश भी मेरे पति के संग ड्राइवर था. महेश की पत्नी प्राइमरी स्कूल में टीचर है. हमारी तरह ही कमउम्र में महेश की भी शादी हो गई थी.

"उस समय महेश 12वीं में और उस की पत्नी 10वीं का पेपर दे रहे थे. महेश ने 12वीं के बाद गांव में पढ़ाई छोड़ दी और शहर में ड्राइवरी सीख अपना काम पकड़ लिया.

"5-6 साल बाद जब महेश गौना करा कर अपनी पत्नी को घर लाया, उस की पत्नी टीचर बन चुकी थी. दोनों के बीच जब भी बहस होती, तो पत्नी अपने टीचर होने का घमंड दिखाती. घरेलू कलह से ऊब कर महेश मेरे पति के साथ बैठ कर शराब पीने चला आता था.

"जब मैं बेटों को ले कर गांव से आ कर यहीं रहने लगी, तभी से महेश जब भी शराब पीने आता, बच्चों के लिए दूधबिस्कुट भी ले आता. बच्चे उसे पसंद करने लगे. बाकी शराबी तो नमकीन और बोतल ले कर आते और खापी कर, गंदगी मचा कर चले जाते. उन की जोरजोर की बहसबाजी से बच्चे डर भी जाते.

"महेश अब अकसर ही यहां चला आता. उसे हमारे पति के हालात पता चल गए थे. वह कभी सब्जी और राशन भी

रख जाता. हमारे घर में मकान मालिक, गली का किराना वाला, सब्जी वाला सभी शाम को घर के आंगन में जमा हो जाते. शराब पी कर गालीगलौज करना रोज की बात हो गई थी.

“महेश ने मेरे पति से कहा भी था कि यहां से घर बदल लो, मगर वह नहीं माना, कहने लगा, ‘तुम्हारी बीवी तो कमाऊ है, तभी तुम इतने अच्छे महल्ले में रहते हो. मेरी बीवी तो घरेलू है. मेरी इतनी आमदनी नहीं कि कहीं और घर ले सकूं.”

“बहुत जिद्दी और गैरजिम्मेदार आदमी था,” सुधा घृणा से बोली.

“उस रात वह बाहर से शराब पी कर आया था. खाना भी नहीं खाया था और गाली बकता, बड़बड़ाता हुआ सो गया. आधी रात से ही उसे खून की उलटी शुरू हो गई. मकान मालिक को बुला कर लाई. किसी तरह सरकारी अस्पताल पहुंचे, मगर वहां पहुंच कर उस ने दम तोड़ दिया.

“पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता चला कि जहरीली शराब पीने से मौत हुई है,” बीते दिनों को याद कर रीना की आंखें भर आईं.

“बहुत बुरा हुआ तुम्हारे साथ,” सुधा ने रीना का हाथ अपने हाथ में ले कर अपनेपन से कहा.

“इस से भी अधिक बुरा तो तब हुआ जब महीनेभर में घर में रखा राशन खत्म हो गया. कुछ रुपया मेरे मायके वाले थमा गए थे. सोचा, राशन ही भर लूं. दुकान पर पहुंची तो वह पुराने उधार का रजिस्टर खोल कर बैठ गया. घर पहुंची तो मकान मालिक बैठा था. उसे पिछले 6 महीने का किराया चाहिए था. मेरे सिर इतना कर्जा छोड़ जाएगा, मुझे पता ही नहीं था.

“शाम गहराते ही न जाने कौनकौन शराबी कुंडी खटखटाने लगते. सभी को अपना उधार वापस चाहिए था. किराना वाला और मकान मालिक अपने गंदे इरादे बता कर उधार माफ करने की बात भी करने लगे थे,” कह कर रीना सिसक उठी.

“अपना तो मर गया, पर तुम्हें खाई में डाल गया,” सुधा दुख और क्रोध में भर कर बोली.

“मैं ने सोच लिया था कि थोड़ा सा जहर ला कर अपनी और बच्चों की जिंदगी खत्म कर लूंगी.”

“तुम गांव क्यों नहीं लौट गईं?” सुधा ने पूछा.

“मकान मालिक ने बंधक बना कर रख लिया था. उस का कहना था कि पहले पुराना उधार चुकाओ, फिर गांव लौटना. मेरे मायके वाले भी गरीब ही हैं. वे लोग गांव में मजदूरी कर दिन काटते हैं. वे भी किसकिस का उधार चुकाते?

“सोचा, इस से अच्छा है कि जहर खा कर मर जाऊं. मेरे पति की मौत के तकरीबन 2 महीने बाद महेश घर आया. मैं ने रोरो कर पूरी घटना बता दी.

“महेश ने ही भागदौड़ कर कंपनी से थोड़े रुपए दिलवाए, जिस से किराना वाले और मकान मालिक का उधार चुकता किया. फिर अपनी पहचान के नर्सिंगहोम में ट्रेनिंग पर रखवा दिया. लेकिन बच्चों को कौन देखता? उन्हें गांव भिजवा दिया. डाक्टरनी बहुत अच्छी हैं. उन्होंने बहुतकुछ सिखाया भी है और समझाया भी,” फिर कुछ पल को वह चुप हो गई. जैसे सोच रही हो कि बताए या न बताए, फिर वह बोली, “दीदी, महेश ने ही कहा था कि ‘इस गंदे महल्ले से बाहर निकलो’ और मकान ढूंढ़तेढूंढ़ते आप के पास पहुंच गए. यहां आ कर जिंदगी में सुकून मिल गया है.”

तभी एक हाथ में सब्जी का थैला और

दूसरे हाथ में आटे का थैला लिए महेश सीढ़ी चढ़ कर आता दिखा.

सुधा उसे देख कर नीचे उतर आई. एक बार मन तो हुआ कि महेश को भी कुरेदे, मगर फिर चुप रह गई.

सुधा हमेशा उधेड़बुन में लगी रहती कि यह सच बोल रही है कि झूठ. पहले दिन तो रीना ने महेश को अपने गांवबिरादरी का बताया था. अब अपने पति का दोस्त बता रही है, लेकिन रिश्ता तो देह से जुड़ा लग रहा है. उस ने सोचा कि जिस नर्सिंगहोम में यह काम करती है, उस में जा कर डाक्टर से मिल कर सच जानने की वह स्वयं ही कोशिश करेगी.

कुछ दिनों के बाद रीना चहकते हुए आई, "दीदी, देखो क्या खरीदा?"

सुधा ने देखा कि उस के हाथ में लाल रंग की रेशमी पोटली थी. उस ने उस के अंदर से प्लास्टिक की डब्बी निकाली. उस में सोने के चमचमाते हुए झुमके निकाले.

"दीदी, पिछले 2 महीनों से ओवरटाइम कर के पैसे बचाए हैं और लोग जो बच्चे पैदा होने पर निछावर भी दे जाते हैं, वो सब जोड़ कर खरीदे हैं.

"दीदी, ऐसे ही झुमके थे मेरी शादी के. मेरा पति जुए में हार गया था. मेरे सारे जेवर उस की बुरी आदतों की भेंट चढ़

तेरा क्या अंदाज है

महकती हुई खुशबू है सांसों में,
ये क्या जादू है तेरी आवाज में...

तू बोले तो जन्नत की हूर सी लगे,
चाहे वो प्यार में चाहे नाराजगी में.

तेरी इनायत नहीं हुई तो क्या हुआ,
मधुर गीत सुनता रहूं मैं तेरी याद में.

झुकी निगाहें नहीं कंपकंपाते होंठ ही,
आबाद रहे मोहब्बत के अल्फाज में.

अनजानी भी दीवानी भी मस्तानी भी,
वो क्या राज है इन खूबसूरत साजों में.

कैसी रश्क है छलकती नहीं अश्क है,
सुना भी है देखा भी है कई अंदाजों में.

महकती हुई खुशबू है सांसों में,
ये क्या जादू है तेरी आवाज में...

• मनोज शाह 'मानस'

गए," उस ने झुमकी हाथ में ले कर हिलाई. झुमकी की चमक उस की आंखों में झिलमिला गई.

"तुम्हारी मेहनत की कमाई है. बधाई हो तुम को," सुधा ने उस की खुशी में शामिल होते हुए कहा.

"थैंक्यू दीदी, आप की तरह डाक्टरनीजी भी बहुत अच्छी हैं. मैं ने भी मेहनत कर बहुत काम सीख लिए हैं. बहुत बड़ा नर्सिंगहोम है. बड़ीबड़ी कारों में लोग बच्चे पैदा कराने को आते हैं. हम लोगों को भी खूब मिठाई, रुपया बांट कर जाते हैं. कुछ लोग बचे फल, बिस्कुट भी घर नहीं ले जाते, यहीं दे जाते हैं. डाक्टरनीजी हम से कहती हैं, 'यह तुम्हारा रुपया है. खुद रखो, किसी से मांगना नहीं. कोई अपनी खुशी से दे तो कोई हर्ज नहीं.' किसी दिन इतनी मिठाई खा लेती हूं कि रात को खाना ही नहीं बनाती," उस का चेहरा खुशी से चमक रहा था.

"किसी दिन तुम्हारी डाक्टरनीजी से भी मिलने चलूंगी," सुधा ने उस का मन टटोलना चाहा.

"अरे दीदी, आप को अपने पीछे स्कूटी पर बैठा कर ले जाऊंगी," कह कर वह जोरों से खिलखिलाई. आज उस की खुशी छलकी पड़ रही थी.

"तुम्हें स्कूटी चलानी आती है क्या?" सुधा ने पूछा.

"महेश ने कहा है कि 'सिखा दूंगा, फिर बैंक से लोन ले कर खरीद लेना.'

"दीदी, वह आप की पुरानी स्कूटी जो गैराज में रखी है, उस से मैं चलाना सीख लूं?"

"वह तो खराब है. बेटे के लिए खरीदी थी. अब तो वह होस्टल चला गया. उसे ठीक करानी पड़ेगी."

"मैं ठीक करा लूंगी अगर आप मुझे सीखने के लिए दे दें," उस ने बड़ी उम्मीद से सुधा से कहा.

"मुझे कोई एतराज नहीं है. जब चाहो ले जाना," सुधा की बात सुन कर वह बच्चों की तरह खुश हो कर बोली, "मैं कल से ही सीखना शुरू कर दूंगी."

जब सुधा ने विराज को रीना के विषय में विस्तार से बताया, तो कंजूस विराज भी बोल पड़े, "बेचारी फलमिठाई खा कर एक समय के भोजन की बचत कर लेती है. उसे लोन की जरूरत होगी तो बताना, मेरा मित्र बैंक मैनेजर है. उसे आसानी से लोन दिला दूंगा, सुधा विराज को देख कर मुसकराई और सोचा, 'कंजूस हैं, मगर दिल के बुरे नहीं हैं."

उस दिन सुधा गेट पर खड़ी औटो का इंतजार कर रही थी कि सामने से स्कूटी सवार रीना आ गई, "आइए दीदी, आप को मार्केट ले चलूं," बड़े प्यार से वह बोली.

"नहीं, तुम रहने दो. एक पहचान का औटो है. उसे फोन कर दिया है. वह आता ही होगा."

"अरे दीदी, चलिए न. मुझे बहुत अच्छे से चलाना आ गया है," उस की मनुहार देख सुधा मना न कर सकी.

पूरे रास्ते वह अपनी कामयाबी की उड़ान सुनाती रही. पीछे बैठी सुधा सोच रही थी कि वह पोस्टग्रेजुएट हो कर भी घर बैठी रह गई और स्कूटी गैराज में. यह कल गांव से शहर आई युवती अपने संघर्षों से जूझते हुए आज अपने पंख पसार हवा में तैर रही है. जल्द ही लोन ले कर वह नई स्कूटी ले आई.

"दीदी, यह मिठाई का डब्बा आप के लिए, आप की पसंद की रसमलाई है. आप ने मुझ पर भरोसा किया. मेरी बातों

को समझा," उस ने लपक कर पैर छू लिए.

"अरे, मेरी जगह कोई भी होता तो ऐसा ही करता," सुधा ने कहा.

"दीदी चलिए न ऊपर, वहीं बैठ कर चाय पीते हैं. आप हमेशा टाल देती हैं," रीना ने जिद की.

सुधा मना न कर सकी. दोनों ऊपर आ गए. बैड के सिरहाने फोटोफ्रेम ऐसे ही रखा हुआ था. पहाड़ीवादियों में झील के किनारे प्रेम में डूबे युगल नजर आ गए. दूर से चेहरे स्पष्ट नजर नहीं आ रहे थे.

रीना कुछ अचकचाई, फिर कुछ सोच कर फोटोफ्रेम सुधा के हाथों में थमा दिया.

महेश और रीना नैनीताल की झील के किनारे आलिंगनबद्ध खड़े थे.

सुधा जानती है कि पर्यटन स्थलों में प्रेमी युगल देख फोटोग्राफर घेर लेते हैं और तरहतरह के फोटो दिखा कर फोटो खींचने को मना ही लेते हैं. रीना की मांग में सिंदूर, गले में मंगलसूत्र नजर आ रहा था.

सुधा चौंक गई कि रीना का अपने पति की मृत्यु से पहले से ही महेश के संग प्रेमप्रसंग चल रहा था. सुधा के चेहरे का रंग बदलते देख रीना समझ गई. उस ने अपनी अलमारी खोल कर एक कागज निकाला और सुधा के पास आ कर बैठ गई.

"दीदी, यह देखिए, मेरे पति का डैथ सर्टिफिकेट, जनवरी 2016 में मृत्यु को प्राप्त हो गए थे और इस फोटो में फरवरी 2017 लिखा है. आप ने पूछा था कि गांव क्यों नहीं लौट गई? कंपनी की भागदौड़ में ही 3 से 4 महीने लग गए थे. बच्चे गांव भेज दिए थे कि यहां का कर्ज चुका कर लौट जाऊंगी. कोई किसी के लिए कितना करेगा? महेश का अपना परिवार है. 2 बच्चे हैं. अच्छे स्कूल में पढ़ते हैं. वह सिर्फ ओवरटाइम या पैट्रोल को कमज्यादा दिखा कर जो पैसे कमाता है, वही मुझ पर खर्च कर पाता है. उस का वेतन का पूरा हिसाब उस की पत्नी रखती है.

दीर्घदृष्टि

दुनिया में सब से दयनीय व्यक्ति वह है जिस के पास दृष्टि तो है लेकिन उस के पास दीर्घदृष्टि नहीं है. –*हेलेन केलर*

सरिता

"मेरे पास क्या है? ये रूपरंग, यौवन. यही सब की लोलुप नजरों का शिकार बन रहा था. ऐसे में मैं ने महेश के संरक्षण को पाने के लिए खुद को सौंप दिया. उस ने खुद कभी जबरदस्ती नहीं की. यह समझिए दीदी कि हमें खुद महेश से प्यार हो गया. उन दिनों जब हर कोई भूखीप्यासी निगाहों से घूर रहा था, महेश मेरी ढाल बन कर खड़ा हो गया. यही शराफत मेरे दिल में उतर गई. फिर वापस गांव जाने की न तो हिम्मत हुई, न दिल ही तैयार हुआ. मैं ने नर्सिंगहोम जाना शुरू कर दिया.

"मुझे महेश की कमाई नहीं, मुझे सिर्फ उस का साथ चाहिए. उस का परिवार भी नहीं तोड़ना चाहती हूं. पिछले साल उस का परिवार जब गांव गया था, वह मुझे नैनीताल घुमाने ले गया. वहीं नैना मंदिर में मेरी मांग में सिंदूर भर कर, मंगलसूत्र पहना कर बहुत भावुक हो गया था. मगर मैं ने उसे अपने

परिवार के साथ ही रहने को कहा. वह कभीकभी मौका पा कर, बहाना बना कर यहां रुक जाता है. शायद आप जानती भी हैं, मगर कुछ पूछती नहीं," रीना सुधा की आंखों में झांक कर बोली.

"हां, शक तो मुझे भी था कि तुम दोनों के बीच बहुतकुछ चल रहा है. मगर, मुझे किसी की व्यक्तिगत जिंदगी से कुछ लेनादेना नहीं रहता है. सिर्फ एक बात का डर लगता था कि कहीं तुम अपने पति का खून कर के तो नहीं आई हो," सुधा ने अपने दिल का डर उजागर किया.

"मैं ने नहीं, बल्कि उस ने ही मुझे और बच्चों को अपने जीतेजी भूखा मार ही दिया था और मरने के बाद मुझे बीच बाजार में बिकने के लिए मेरे सिर कर्ज की गठरी थमा गया था. 1-2 साल और जिंदा रहता तो शराब की एक बोतल के लिए वह मुझे दूसरों के आगे परोस भी देता," रीना कड़वाहट से भर उठी.

कुछ देर कमरे में सन्नाटा पसरा रहा. रीना उठ कर चाय बनाने लगी. सुधा रीना की बात सुन कर सोच में पड़ गई.

उस ने बैड के सिरहाने रखे फोटोफ्रेम को सीधा कर के रख दिया. रीना चाय ले कर आ गई. कुछ देर बाद चुप्पी को तोड़ते हुए रीना बोली, "दीदी, मैं यह लोन चुका दूंगी, तो मुझे छोटा सा प्लौट खरीदने के लिए भी लोन दिला देंगी ?"

"हां बिलकुल, पर तुम नियम से अपनी किस्त भरते रहना," उस की महत्त्वाकांक्षा को सुन कर सुधा मुसकराई.

"दीदी, लखनऊ शहर के अंदर तो बहुत महंगी जमीन है, मगर सीतापुर रोड की तरफ हमारे स्टाफ के 2-3 लोगों ने प्लौट लिए हैं. थोड़ा दूर है, मगर अब तो हमारे पास स्कूटी भी है. एक कमरे का ही सही, अपना घर तो होगा. बच्चे भी गांव से ले आएंगे. यहीं पढ़ाऊंगी," वह अपनी योजनाओं को बताती जा रही थी.

"महेश का क्या होगा ?" सुधा ने उस के मन की थाह लेने के लिए पूछ ही लिया.

"महेश ने ही तो बोला है कि जब तुम्हें किराए के मकान से निकाल कर अपने घर में शिफ्ट कर देंगे, तभी मुझे सुकून मिलेगा. वही तो सारे कागज तैयार करता है. मुझे तो इतना आता भी नहीं. उसी ने स्कूटी खरीदने को थोड़े रुपए भी दिए, मगर स्कूटी मेरे नाम से है. उस ने बोला है कि प्लौट खरीदने में मदद भी करेगा और मेरे ही नाम से लेगा."

"अच्छा है कि उसे तुम्हारे भविष्य की चिंता है," सुधा ने कहा.

"उस का अपना घरपरिवार होते हुए भी वह मेरी कितनी चिंता करता है. पता नहीं, उस की पत्नी यह बात जानती भी है कि नहीं ?" रीना ने कहा.

"उस की पत्नी की निगाहों में उस के लिए तिरस्कार और उपेक्षा का भाव रहता है. वह अपने को उस से अधिक काबिल समझती है. उस की सैलरी भी ज्यादा है. उस के आगे महेश को हीनभावना महसूस होती है. मगर तुम्हारी आंखों में प्यार, कृतज्ञता उसे हीनभावना से उबार देते हैं. उसे भी तुम्हारी उंगली थाम तुम्हें धीरेधीरे उन्नति के सोपान चढ़ते देखना अच्छा लगता है," सुधा ने समझाया.

"मैं कुछ गलत तो नहीं कर रही हूं न, दीदी. कभी न कभी तो वह मेरा हाथ छोड़ ही देगा. मगर मुझे अब अपने ऊपर पूरा भरोसा हो गया है. उस ने मुझे आत्मनिर्भर तो बना ही दिया है. उस का यह एहसान मैं कभी नहीं भूलूंगी," रीना ने कहा.

सुधा रीना के चेहरे पर छलकते आत्मविश्वास को देख मुसकरा उठी. ●

बच्चों के मुख से

मेरी भतीजी की बेटी जो कि 4 वर्ष की है, अपनी मम्मी से बोली, "मेरा बर्थडे आ रहा है मम्मी. आप कैसे मनाएंगे?" मेरी भतीजी ने कहा कि तुम्हारी बहन को चूंकि चिकनपौक्स हो गया है इसलिए इस बार तुम्हारा बर्थडे नहीं मनाएंगे. यह सुन कर वह बहुत उदास हो गई और कोने में बैठ कर रोने लगी.

हम सब हैरान थे कि वह रो क्यों रही है. जब उस से पूछा गया कि क्यों रो रही हो तो उस ने बड़े भोलेपन से कहा, "अब मैं कभी 5 साल की नहीं हो पाऊंगी."

उस की यह मासूमियतभरी बात सुन कर हम सब हंसने लगे. उस के ये बालसुलभ बोल हम सब को हंसने पर मजबूर कर गए. आज भी अकसर हम लोग उस से कहते हैं कि वह 5 वर्ष की हुई या नहीं. **सुनीता शर्मा**

मेरा 8 वर्षीय पुत्र तुषार बहुत बातूनी है. हर वर्ष हम गरमी की छुट्टियों में घूमने जाते हैं. इस वर्ष भी कहीं घूमने की योजना बन रही थी. मैं ने परिवार के सदस्यों से पूछा कि इस बार कहां घूमने की इच्छा है. तभी मेरा पुत्र तपाक से बोला कि पापाजी, इस बार हनीमून चलते हैं. मेरे कई दोस्तों के पापामम्मी हनीमून घूम कर आए हैं और चाचा, मामा भी गए थे. मैं तो आज तक हनीमून नहीं गया.

दरअसल, वह समझ रहा था कि हनीमून किसी दर्शनीय स्थान का नाम है. उस की बातें सुन कर हम सभी हंसे बिना न रह सके. **अशोक सक्सेना** (सर्वश्रेष्ठ)

मेरा भतीजा आदित्य बहुत ही हाजिरजवाब है. एक दिन आदित्य का दोस्त पग (छोटा कुत्ता) लाया, जिसे देख मेरा भतीजा भी जिद करने लगा कि मैं भी उसे पग ला कर दूं. मेरा मूड किसी कारण से खराब था. मैं ने उस से कहा, "4 पग (मतलब 2 मेरे बेटे तथा 2 भतीजे) पहले से ही हैं, 5वें को मैं नहीं पाल सकती."

आदित्य बहुत मासूमियत से बोला, "मम्मा, आप अपने चारों पग को पालें और हम चारों भाई मिल कर 5वां पग पाल लेंगे." इस मासूम जवाब के आगे मैं पप्पी लाने पर मजबूर हो गई.

पूनम अग्रवाल ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ में बच्चों के मुख से कही गई बातें भेज सकते हैं. प्रकाशित अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा. पता : **सरिता, ई-8,**
झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.
*अपना अनुभव **नाम** व **पते सहित** आप नीचे लिखे नंबर पर **एसएमएस** या **व्हाट्सऐप** के जरिए **मैसेज/ऑडियो** भी कर सकते हैं.*
08588843415

चंचल छाया
PRODUCTION
SCENE
TAKE
TICKET

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम
★★⯪ मध्यम ★★ साधारण ★⯪ औसत

परफौर्मेंस बढ़िया पर जयललिता के साथ अधूरा न्याय

थलाइवी ★★

यह फिल्म नएनए युवा हुए दर्शकों, जिन्हें 70-80 के दशक की ज्यादा जानकारी नहीं है, को देखनी चाहिए, अच्छी लगेगी.

'थलाइवी' तमिल भाषा का शब्द है, जिस का अर्थ होता है नेता या लीडर. चूंकि फिल्म तमिल, तेलुगू में भी बनाई गई है, इसीलिए इस का शीर्षक तमिल में ही रखा गया है. 'थलाइवी' फिल्म अजयन बाला की इसी नाम की किताब पर आधारित है. फिल्म दक्षिण भारत की कद्दावर नेता जयललिता की बायोपिक है. फिल्म की पटकथा विजयेंद्र प्रसाद ने ही लिखी है.

जयललिता तमिलनाडु की पहली महिला मुख्यमंत्री थीं. वे वहां 4 बार मुख्यमंत्री रहीं. राजनीति में आने से पहले जयललिता ने तमिल के अलावा तेलुगु, कन्नड़, हिंदी और इंग्लिश फिल्मों में काम किया था. 1965 से 1972 तक उन की अधिकतर फिल्में एमजी रामचंद्रन के साथ आईं, फिर फिल्मी कैरियर के बाद उन की राजनीतिक शुरुआत 1982 से एमजीआर के साथ हुई.

कहते हैं एमजीआर के जयललिता संग बेहद मजबूत रिश्ते थे, लेकिन ये रिश्ते कभी परिभाषित नहीं किए गए. न तो सार्वजनिक मंचों पर खुल कर एमजीआर ने इस पर बात रखी और न जयललिता ने अपना पक्ष रखा. पर पार्टी के भीतर सुगबुगाहट हमेशा रहती थी. दोनों के बीच अलग तरह की कैमिस्ट्री थी, जिस में उन दोनों की आपसी अंडरस्टैंडिंग थी और बाहरी लोगों के बीच सिर्फ उड़तीफिरती बातें ही थीं. उन दोनों के जीवन की इस उलझन को फिल्म में दिखाया गया है. पर इस रिश्ते पर किसी प्रकार की राय रखने से मेकर्स बचे हैं.

जयललिता तमिलनाडु की राजनीति में एक अलग अध्याय लिखने वाली शख्सियत हैं. उन का कद बेहद ऊंचा है. वे किसी पहचान की मुहताज नहीं हैं, हालांकि उन्होंने अपनी पहचान को हमेशा पब्लिक स्पेस में खुल कर व्यक्त भी नहीं किया है.

इस फिल्म को माना जा सकता है कि यह जयललिता के जीवन का पहला अध्याय खोलती है. यह इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि फिल्म में उन के शुरुआती जीवन से ले कर मुख्यमंत्री बनने तक के सफर को दिखाया गया है. अगर यह कहा

जाए कि इस के आगे दूसरा अध्याय बने या बनना चाहिए तो हैरानी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि फिल्म अधूरी लगती है और जयललिता के साथ न्याय करने से चूक रही है.

दक्षिण के लोग अपने नेता या लीडर को पूजते हैं, इसलिए विजयेंद्र प्रसाद ने विवादों में घिरी जयललिता के जीवन से कुछ प्रश्नों को अनुत्तरित छोड़ कर बढ़ियाबढ़िया दिखा दिया है. जयललिता के जीवन में जो कंट्रोवर्सी थी, उसे ठीक से छुआ तक नहीं.

बौलीवुड में राजनेताओं की निष्पक्ष बायोपिक बनाने का चलन नहीं है. इसलिए इस फिल्म को निष्पक्ष बायोपिक नहीं कहा जा सकता. राजनीति की टेढ़ीमेढ़ी सीढ़ियों पर संभल कर चढ़ती हुई जयललिता का जीवन बड़ा दिलचस्प रहा था. राजनीति में आने से पहले वे फिल्मों में काम करती थीं. उन का अफेयर एमजीआर (अरविंद स्वामी) से काफी चर्चा में रहा. एमजीआर ने ही जयललिता को राजनीति में आने का मौका दिया.

फिल्म में एक बात, दिलचस्प कहें या अटपटी, यह कि जिस मुख्य किरदार पर फिल्म बनी है वह सैकंड लीड जैसी महसूस होती है. इशारा जयललिता के किरदार पर है. फिल्म में सारा लाइमलाइट एमजीआर पर है.

यानी कहानी तो जयललिता की लाइफ के बारे में है लेकिन अधिकतर मौकों पर फिल्म एमजीआर के बारे में बात करती है. अधिकतर जगह ऐसा लगता है कि फिल्म में जयललिता का स्वतंत्र व्यक्तित्व उभर नहीं पाया है, उन की लाइफ में जो कुछ घट रहा है वह दूसरों के चलते ही घट रहा है.

फिल्म में पौलिटिकल लड़ाई एमजीआर और करुणानिधि के बीच है, जिस के बीच में जयललिता पिसीपिसी सी लगती है. यह इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि फिल्म का बोलबाला इसी आधार पर था कि यह समाज में फैले पितृसत्ता पर चोट करेगी, पर 'लार्जर दैन लाइफ' जयललिता की पर्सनैलिटी कहीं न कहीं उन्हीं पुरुषों के बीच धूमिल होती दिखती है. फिल्म में जयललिता की कहानीभर दिखाई गई लगती है, पर जयललिता का संघर्ष फिल्म से गायब है.

महज जयललिता के विवादों को छू भर लेना उन का संघर्ष नहीं हो सकता. उन के भीतरखाने क्या उथलपुथल चल रही है, सत्ता को पुरुषों की जागीर समझने वाले नेताओं में वे किस तरह अपनी जगह कैसे बनाती हैं, एक महिला होने के नाते पार्टी समेत राज्यभर में उन की पकड़ कैसे मजबूत होती है, ये सब चीजें फिल्म में सतही लगती हैं.

फिल्म की शुरुआत तमिलनाडु विधानसभा से होती है. विधानसभा में करुणानिधि (नासर) की पार्टी के लोग गालीगलौच कर के, जमीन पर गिरा कर जयललिता की साड़ी का पल्लू खींच कर उसे बेइज्जत करते हैं. जयललिता चुनौती

देती है कि वह इसी विधानसभा में मुख्यमंत्री बन कर लौटेगी.

कहानी फ्लैशबैक में जाती है. किशोरी जया स्कूल छोड़ने के बाद अपनी मां संध्या (भाग्यश्री) के साथ फिल्मों में जाने की कोशिश में है. वह फिल्मों में नायिका बन जाती है. उस की प्रेम कहानी दक्षिण के प्रसिद्ध अभिनेता एमजी रामचंद्रन (अरविंद स्वामी) के साथ ऊंचाइयों तक पहुंचती है.

एमजीआर उसे राजनीति में आने को कहता है. वह अपने प्रेम की डोर पकड़ कर मुख्यमंत्री के पद तक पहुंच जाती है और विधानसभा तक पहुंचती है. उस ने कांग्रेस के साथ गठबंधन भी किया. मुख्यमंत्री बनने से पहले जयललिता विवादों में घिरी रही, मगर निर्देशक उसे गरीबों का मसीहा दिखाने तक ही सीमित रहा है. तमिलनाडु के लोग उसे अम्मा कह कर बुलाते थे और उस की मौत के बाद फूटफूट कर रोए थे.

फिल्म में 70-80 के दशक का दौर दिखाया गया है. उस वक्त की राजनीतिक रैलियों वाली भीड़ के दृश्य दमदार बन पड़े हैं. कंगना रनौत ने जयललिता के किरदार को खूबसूरती से निभाया है. उस

भूत पुलिस ★

अच्छी फिल्म वही होती है जो अंत तक दर्शकों को बांध कर रख सके. ऐसी फिल्में कभीकभी ही बन पाती हैं. कई बार एक अच्छी कहानी, एक अच्छा निर्देशक और संपादक भी मिल कर दर्शकों को आखिर तक इसलिए नहीं बांध पाते क्योंकि जो पटकथा बुनी गई उसे वैसी ही परदे पर उतार नहीं पाते. यह फिल्म भी बांध कर नहीं रख पाती.

भूतप्रेत नहीं होते, यह सब अंधविश्वास है. भूत भगाने के नाम पर तांत्रिक लोगों को मूर्ख बनाते हैं और उन के अंधविश्वासों का जम कर फायदा उठाते हैं. ऐसा सिर्फ भारत में ही नहीं होता, विदेशों में भी होता है. वहां भी ‘घोस्ट बस्टर्स’ पर तमाम फिल्में बनी हैं.

इस तरह की फिल्मों में साउंड इफैक्ट्स और प्रकाश संयोजन के द्वारा भूतों के होने का आभास कराया जाता है. फिल्म ‘भूत पुलिस’ भी घोस्ट बस्टर्स का भारतीय संस्करण है. इस की कहानी लिखने में 5 लोगों का दिमाग लगा है. फिर भी यह फिल्म दर्शकों पर अपना असर नहीं छोड़ पाती.

इस फिल्म को हौरर कौमेडी कह सकते हैं. हौरर कौमेडी वाली फिल्में जैसे ‘डर एट मौल’, ‘फोबिया’, ‘रागिनी एमएमएस’ और ‘स्त्री’ पहले भी बन चुकी हैं. परंतु यह फिल्म न तो ‘स्त्री’ जैसी बन पाई है, न ही ‘डर एट मौल’ जैसी. फिल्म भूत भगाऊ न हो कर दर्शक भगाऊ बन कर रह गई है.

फिल्म की कहानी शुरू होती है 2 तांत्रिकों से. ये दोनों भाई हैं, और उलट बाबा के बेटे. दोनों उलट बाबा द्वारा लिखी लाल किताब हाथों में ले कर लोगों में भूत भगाने का काम करते हैं. विभूति (सैफ अली खान) मानता है कि भूतवूत कुछ नहीं होता लेकिन चिरौंजी (अर्जुन कपूर) लाल किताब में लिखी बातें पढ़ कर उस पर यकीन करता है.

इसी काम से दोनों अपनी रोजीरोटी चला रहे हैं. उन की मुलाकात हिमाचल प्रदेश में चाय बागान चला रही युवती माया (यामी गौतम) से होती है. माया की

ने जयललिता के विभिन्न तेवरों को बखूबी पकड़ा है. एमजीआर के साथ फिल्मों की शूटिंग के दौरान गानों पर परफौर्म करते वक्त उसे देख 'डर्टी पिक्चर' फिल्म की याद ताजा हो जाती है, जिस में विद्या बालन ने परफौर्म किया था.

यदि यह फिल्म देखने जा रहे हैं तो बोर नहीं होंगे, पर जयललिता के किरदार से मिलने की सोच रहे हैं तो अधूरापन खलेगा, कुछ छूटाछूटा सा महसूस होगा. कंगना की ऐक्टिंग बढ़िया है, देख कर मजा आएगा, पर यह बात तय है कि थिएटर से बाहर निकलते हुए अरविंद स्वामी से अधिक इम्प्रैस हो जाएंगे. एमजीआर की भूमिका में अरविंद स्वामी असर छोड़े हुए हैं. वे इस भूमिका में जमे हैं.

फिल्म का निर्देशन बढ़िया है. फिल्म के संवाद कहींकहीं प्रभावशाली बन पड़े हैं. काफी समय बाद परदे पर आई भाग्यश्री और मधु को देखना अच्छा लगता है. 70-80 के दशक की फिल्मों जैसे गाने अच्छे लगते हैं. जयललिता के कौस्ट्यूम्स बढ़िया हैं. जबरन मसालों से बचा गया है. सिनेमेटोग्राफी बढ़िया है.

एक बहन कनिका (जैकलीन फर्नांडिस) भी है. बागान के अनपढ़, अंधविश्वासी मजदूर डर रहे हैं क्योंकि उन्हें बागान में भूत का एहसास होता है.

माया इन दोनों तांत्रिकों को अपने बागान में ले आती है. वहां दोनों तांत्रिकों को भूत तो नजर नहीं आता, हां, माया के अंदर डायन अवश्य आ जाती है. वह अजीबोगरीब हरकतें करने लगती है. दरअसल, माया को डराने के लिए उस की बहन ने ही किचकंडी का नाटक करने को बागान के मैनेजर से कहा था.

इस के बाद कहानी में कई ऊलजलूल मोड़ आते हैं. जिस किचकंडी का झूठमूठ ड्रामा बनाया होता है वह असल में आ जाती है. पहले माया को किचकंडी अपने वश में कर लेती है, फिर तांत्रिक विभूति को किचकंडी यानी डायन पकड़ लेती है. अंत में पता चलता है कि अतीत में किचकंडी के साथ कुछ गलत हुआ रहता है, जिसे सुलझा कर मामला सुलट जाता है.

फिल्म की इस कहानी में ऊलजलूल बहुत चीजें हैं. पटकथा कमजोर है. आखिरी आधा घंटा ही फिल्म बांध कर रख पाती है. फिल्म में ऐसा कुछ नहीं है जो आप ने पहले न देखा हो. फिल्म की लंबाई भी ज्यादा है. संवाद बनावटी लगते हैं. सैफ अली खान के चेहरे के भाव सैट रहते हैं, दृश्य के हिसाब से बदलते रहते हैं. यामी गौतम के करने लायक कुछ है ही नहीं. जैकलीन फर्नांडिस फिल्म में ढंग से बोल तक नहीं पाती. राजपाल यादव फिल्म में क्या कर रहा है, कोई यह निर्देशक से पूछे. निर्देशन कमजोर है.

फिल्म की सिनेमेटोग्राफी और प्रकाश संयोजन अच्छा है. ●

“एलजीबीटी समुदाय का इंसान भी हमारे जैसा ही है” -फराज अंसारी

• शांतिस्वरूप त्रिपाठी

सिनेमा में फराज अंसारी एलजीबीटीक्यू समुदाय के चित्रण को ले कर विशेष समझ रखते हैं. उन का मानना है कि एक ‘गे’ फिल्मकार ही सिनेमा में ‘गे’ किरदार को असल न्याय दे सकता है. इसीलिए समाज की समलैंगिकता, स्त्री व मुसलिम विरोधी प्रकृति को उजागर करने के मकसद से वे फिल्म ‘शीर कोरमा’ ले कर आए हैं.

Indian Film Festival Of
Equality in Cinema
Short
SHEER QORMA

1996 में जब फिल्म ‘फायर’ आई थी, उस वक्त फिल्म के पोस्टर पर 2 महिला कलाकारों को एकदूसरे के प्यार में खोए हुए देखा गया था और अब 25 वर्षों बाद ‘शीर कोरमा’ के पोस्टर में लोग ऐसा देख रहे हैं. यह महज संयोग है कि इन दोनों फिल्मों में शबाना आजमी हैं. 25 वर्षों बाद यह साहस फिल्मसर्जक फराज अंसारी ने दिखाया है.

लेखक, निर्माता, निर्देशक, अभिनेता फराज अंसारी कभी खुद डिस्लैस्किया से पीड़ित रहे हैं और ‘डिस्लैक्सिया’ पर अमेरिका में एक लघु फिल्म भी बनाई थी. उसी के चलते मुंबई में उन्हें ‘डिस्लैक्सिया’ पर आधारित आमिर खान व दर्शील सफारी वाली फिल्म ‘तारे जमीं पर’ में एसोसिएट डायरैक्टर के रूप में काम करने का अवसर मिला. उस के बाद फराज अंसारी ने बतौर एसोसिएट निर्देशक फिल्म ‘स्टेनली का डिब्बा’ भी की. फिर स्वतंत्ररूप से काम करते हुए भारत की एलजीबीटीक्यू प्रेम कहानी पर मूक फिल्म ‘सिसक’ बनाई, जिसे 60 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया था.

अब उन्होंने समाज की समलैंगिकता, स्त्री विरोधी और प्रतिगामी प्रकृति को उजागर करने के मकसद से फिल्म

'शीर कोरमा' का लेखन, निर्माण व निर्देशन किया है. 'शीर कोरमा' एलजीबीटीक्यू समुदाय पर बनी पहली फिल्म है जिस में सारे किरदार औरतें हैं. फिल्म की कहानी एक मुसलिम परिवार से आने वाली लेस्बियन महिलाओं के इर्दगिर्द घूमती है जो एकदूसरे से प्यार करती हैं.

फिल्म 'शीर कोरमा' कई वर्जनाओं को चुनौती देती है और कुछ समुदायों या लोगों के समूहों को सौंपी गई रूढ़ियों को तोड़ने की कोशिश करती है. शबाना आजमी, दिव्या दत्ता और स्वरा भास्कर के अभिनय से सजी फिल्म 'शीर कोरमा' ने पूरे विश्व के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में न सिर्फ हंगामा बरपा रखा है बल्कि 10 से अधिक पुरस्कार भी हासिल कर लिए हैं. हाल ही में फिल्म 'शीर कोरमा' को इंडियन फिल्म फैस्टिवल औफ मेलबर्न (आईएफएफएम) में 'इक्वैलिटी इन सिनेमा' के अवार्ड से नवाजा गया.

फराज ने अमेरिका में रहते हुए डिस्लैक्सिया पर एक लघु फिल्म बनाई थी. जब उन से पूछा गया कि वहां काम के दौरान बच्चों के साथ जो कुछ उन्होंने सीखा, क्या वह 'तारे जमीं पर' में भी काम आया. इस पर वे बताते हैं, "उस सीख ने मेरी बेहिसाब मदद की. भारत में बच्चों के साथ काम करने की समझ ही नहीं है. बच्चों से अभिनय कराने के लिए सब से पहले खुद एक इंसान बनना पड़ता है. आप अच्छे इंसान न हों तो भी आप को अच्छा इंसान बनना पड़ता है.

"इस के अलावा, बच्चों का दोस्त बनना पड़ता है. आप बच्चों के साथ निर्देशक जैसा व्यवहार नहीं कर सकते. आप को उन के स्तर पर जा कर उन की भाषा में बात करनी पड़ती है. इस का मुझे ज्ञान था."

फिल्म 'तारे जमीं पर' में आमिर को ले कर फराज कहते हैं, "आमिर खान फिल्म में इंटरवल के बाद आते हैं. फिल्म की कहानी तो दर्शील सफारी के बारे में थी. आमिर खान के आने से फिल्म में स्टार पावर आ गया था. इस ने फिल्म को ज्यादा लोगों तक पहुंचाया. फिर आमिर खान बेहतरीन कलाकार हैं."

पर जब उन से कहा गया कि कुछ लोगों की राय में फिल्म 'तारे जमीं पर' का माइनस पौइंट आमिर खान थे तो वे कहते हैं, "फिल्म देखने से पहले यूएसपी आमिर खान थे. मगर फिल्म देखने के बाद लोगों को फिल्म की यूएसपी दर्शील सफारी नजर आया. फिल्म देख कर लोगों की अपने बच्चों के प्रति सोच बदली."

सिनेमा की शुरुआत मूक फिल्मों से हुई थी, पर बाद में बंद हो गई. 1987 में मूक फिल्म 'पुष्पक' बनी. ऐसे ही फराज ने भी अपनी मूक फिल्म 'सिसक' बनाई. इस संबंध में फराज कहते हैं, "हमारी फिल्म 'सिसक' 2 पुरुषों की प्रेम कहानी थी. ये दोनों मुंबई में लोकल ट्रेन में मिलते हैं और इन के बीच मोहब्बत हो जाती है. इस फिल्म में 2 पुरुषों की मोहब्बत को दर्शाया गया है. यह एलजीबीटी फिल्म थी, मगर इस में संवाद नहीं थे.

"यह 2016 में बनी थी. उस वक्त होमोसैक्सुअलिटी को ले कर सैक्शन 377 अपराध था. वैसे कुछ समय के लिए रद्द हुआ था पर फिर यह अस्तित्व में आ गया था. अब तो खैर यह अपराध नहीं रहा. उन दिनों मेरे तमाम दोस्तों ने अपनी सचाई के साथ जिंदगी जीने के लिए काफी संघर्ष किया था. पर जब कानून फिर से अस्तित्व में आया था तब उन्हें काफी तकलीफ हुई थी.

"उस वक्त एलजीबीटी समुदाय के

लोगों को एहसास हुआ था कि हमें कुछ पलों की जो आजादी मिली थी वह छीन ली गई. उसी एहसास को दिखाने के लिए बिना संवाद की यह फिल्म बनाई थी. मैं दिखाना चाहता था कि 2 लोगों के बीच बिना कुछ कहे, बिना एकदूसरे को छुए भी मोहब्बत हो सकती है. मोहब्बत को दुनिया का कोई कानून नहीं रोक सकता. यदि मोहब्बत होनी है तो उसे कोई नफरत भी नहीं रोक सकती. मोहब्बत को इंसान या खुदा कोई नहीं रोक सकता. मोहब्बत होनी है तो वह हो कर रहेगी."

'सिसक' के बाद फराज अंसारी ने होमो सैक्सुअलिटी पर फिल्म न बनाने की बात कही थी. पर उन्होंने अपनी नई फिल्म 'शीर कोरमा' फिर उसी विषय पर बनाई है. इस बारे में पूछने पर वे बताते हैं, "मैं ने 'सिसक' और 'शीर कोरमा' के बीच 'दूल्हा वांटेड' और नैटफ्लिक्स के लिए 'बिग डे' बनाई. दोनों बहुत अलग और बड़े स्तर के काम थे, जिस से लोगों की समझ में आया कि मैं बड़े स्तर का भी काम कर सकता हूं.

सुप्रीम कोर्ट द्वारा एलजीबीटीक्यू+ कम्युनिटी के संबंधों को अपराध न मानने का आदेश जारी होने के बाद आज भी समाज इन्हें स्वीकार नहीं कर पाया. समाज में इस की स्वीकार्यता न हो पाने पर फिल्म के माध्यम से इस विषय को उठाया गया है. फराज कहते हैं, "हम चाहे जितने कानून व संविधान संशोधन कर डालें, पर जब तक समाज के अंदर समझदारी नहीं बढ़ेगी तब तक हम पुरानी दुनिया में ही रहेंगे.

"आज अगर मैं एक लड़के का हाथ पकड़ कर अपने घर से निकलूंगा तो दुनिया मुझे अपराधी की ही नजर से देखेगी. इस नजरिए को बदलने के लिए बारबार 'शीर कोरमा' जैसी फिल्म बनाने की जरूरत है. इस मुद्दे को सामान्य करने की जरूरत है. हर इंसान को समझना होगा कि 'गे' अथवा एलजीबीटीक्यू+ समुदाय का इंसान भी एक आम इंसान की ही तरह मोहब्बत करता है. एलजीबीटी समुदाय का इंसान भी हमारे जैसा ही है. यही बात हमारी फिल्म 'शीर कोरमा' भी कहती है. हमारी फिल्म कहती है कि मोहब्बत गुनाह नहीं है. जब तक हम एकजुट हो कर आवाज नहीं उठा सकते तब तक समाज में बदलाव नहीं आएगा."

महिला लैस्बियन के मुद्दे पर 'डौली किट्टी और सितारे' सहित कई फिल्में बन चुकी हैं. उन से पूछा गया कि क्या इन फिल्मों में एलजीबीटी+ से जुड़े मुद्दे सही ढंग से आ नहीं पाए? इस बारे में फराज कहते हैं, "पहली बात तो यह है कि इन सभी फिल्मों के लेखक व निर्देशक एलजीबीटी समुदाय से संबंध नहीं रखते हैं तो फिल्म में जिस नाजुक तरीके व संजीदगी से रिश्तों को दिखाना है, वह कभी किसी फिल्म में आया ही नहीं.

"इन फिल्मों में जिया हुआ अनुभव व एहसास होने के बजाय शोधकार्य ही है. जो इंसान उस जिंदगी को जिया होता है उसे ही वह अनुभव होता है. जब मैं स्कूल में था, मेरी बुलिंग होती थी, मुझे इतना परेशान किया जाता था, उस के बावजूद मैं आज एक मुकाम पर पहुंच कर अपनी कहानियों को खुलेदिल से दर्शा रहा हूं.

"इस यात्रा का तत्त्व बेहतर ढंग से मैं ही दिखा सकता हूं. शोध करने वाला उसे उस हिसाब से नहीं दिखा सकता. सब से बड़ी बात यह है कि इन फिल्मों में सचाई व संजीदगी का घोर अभाव है, इसलिए ये फिल्में लोगों के दिलों को नहीं छू पाईं. यदि

आप किसी मुद्दे को अपनी फिल्म में उठा रहे हैं तो पहले उस मुद्दे को समझिए. उस मुद्दे को समझ कर उसे सामान्य बनाएं. जब तक आवाज दिल से नहीं आएगी तब तक उस आवाज में मजा नहीं आएगा."

यह दिलचस्प है कि जिस समय फराज 'शीर कोरमा' बना रहे थे, उस वक्त आयुष्मान खुराना की फिल्म 'शुभ मंगल ज्यादा सावधान' प्रदर्शित हुई थी. इस फिल्म में भी मां द्वारा अपने बेटे की स्वीकृति का मसला था. इस संबंध में दोनों फिल्मों की तुलना में फराज कहते हैं, "पहली बात तो आयुष्मान खुराना की फिल्म के लेखक व निर्देशक दोनों ही 'गे' यानी कि एलजीबीटी+ समुदाय से नहीं थे. शोधकार्य पर आधारित उन की फिल्म काफी सीमित थी.

Dulha
Wanted
DIRECTED BY FARAZ ARIF ANSA

फराज अंसारी की 2018 में रिलीज फिल्म 'दूल्हा वांटेड' में कुछ हट कर विषय को उठाया गया.

"दूसरी बात, फिल्मकार एलजीबीटी समुदाय पर फिल्म बनाते हुए लोगों को हंसाने के लिए उस में बेवजह कौमेडी भर देते हैं. लोग भूल जाते हैं कि लोग उन पर हंस रहे हैं या उन के साथ हंस रहे हैं. परिणामतया सुधार या प्रगति के बजाय ये फिल्में नुकसान पहुंचाती हैं. तीसरी बात कि इस फिल्म में कई समस्याएं थीं. किसी भी चीज या दृश्य को सामान्य नहीं बता रहे है, बल्कि हर चीज का मजाक उड़ा रहे हैं अथवा कैरीकेचर कर रहे हैं."

भारत में 'गे' यानी कि एलजीबीटीक्यू समुदाय पर बनी फिल्मों को दर्शक नहीं मिलते हैं. इस पर फराज कहते हैं, "ऐसा होमोफोबिया के चलते होता है. भारतीय होमोफोबिक बने हुए हैं. सुप्रीम कोर्ट ने तो एलजीबीटीक्यू समुदाय को आजादी दे दी मगर भारतीय समाज स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है. मजेदार बात यह है कि ओटीटी प्लेटफौर्म पर 'गे' फिल्में ज्यादा देखी जा रही हैं. गे/क्वीर कंटैंट केवल ओटीटी प्लेटफौर्म पर मौजूद होना चाहिए, यह भी एक होमोफोबिक बात है.

"क्वीर फिल्में सिनेमाघरों में क्यों नहीं प्रदर्शित होनी चाहिए. हमें लगातार एकदूसरे को अपने पूर्वाग्रहों की याद दिलाते रहने की जरूरत है. हम सभी पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं. मुझे लगता है कि जब 'शीर कोरमा' जैसी फिल्में बनती हैं तो ये लोगों के पूर्वाग्रहों और भावनाओं को उजागर करती हैं. हमारे पास अच्छी और ईमानदार क्वीर फिल्में न होने का कारण होमोफोबिया की मौजूदगी है. यह एक दुखद वास्तविकता है."

फिल्म 'शीर कोरमा' के बारे में फराज बताते हैं, "पहले मैं यहां यह याद दिला दूं कि जिस वक्त फिल्म 'शुभ मंगल ज्यादा सावधान' सिनेमाघरों में प्रदर्शित हुई थी, उसी वक्त हमारी फिल्म 'शीर कोरमा' का ट्रेलर रिलीज हुआ था. आप यकीन नहीं करेंगे, मगर 'गे' समुदाय के लोगों ने फिल्म 'शुभ मंगल ज्यादा सावधान' के पोस्टर, ट्रेलर, फोटो आदि को खूब शेयर किया, पर किसी ने भी 'शीर कोरमा' का ट्रेलर वगैरह शेयर नहीं किया.

"इस की पहली वजह यह थी कि हमारी फिल्म में लैस्बियन औरतों की

कहानी है. हम औरतों को इस रूप में देखना नहीं चाहते. दूसरी बात हमारी फिल्म एक मुसलिम परिवार के बारे में है. हम इतना अधिक 'इसलामिक फोबिया' से ग्रसित हैं कि अगर कोई लिखता है कि यह एक आम मुसलिम परिवार है, इस परिवार में कोई आतंकवादी नहीं है, हरे रंग के घर में नहीं रह रहा है और इस परिवार का कोई भी सदस्य पांचों वक्त की नमाज नहीं पढ़ रहा है, आंख में सुरमा लगा, टोपी और सफेद कुरता पहन कर बातें नहीं कर रहा है तो लोगों को यह इसलाम समझ में नहीं आता है.

फिल्म 'शीर कोरमा' जिस में एक मुसलिम परिवार तो है लेकिन कहानी हर धर्म, हर पीढ़ी, हर उम्र के लोगों की है.

"मगर हमारी इस फिल्म में यही है. हमारी फिल्म में सभी उच्चशिक्षित हैं. हमारी फिल्म में मां की भूमिका निभा रही शबाना आजमी साड़ी पहनती हैं. कुछ लोगों ने मुझ से सवाल भी किया कि, 'तुम्हारी फिल्म में जब शबाना आजमी साड़ी पहनती हैं तो फिर वे मुसलिम कैसे हैं?' तब मैं ने उन्हें जवाब दिया कि साड़ी का कोई मजहब नहीं होता. मेरी मां बचपन से साड़ी पहनती आई हैं. किसी ने पूछा कि, 'तुम्हारी फिल्म में उर्दू भाषा नहीं है?' मैं ने कहा कि उर्दू भाषा का भी कोई मजहब नहीं होता. किसी ने कहा कि, 'फिल्म में शीर कोरमा है, शीर कोरमा तो सिर्फ मुसलिम पीते हैं?' मेरी राय साफ है कि जबान या पोशाक या खाने का कोई मजहब नहीं होता.

"अब तक सामान्य मुसलिम परिवार की फिल्म कभी बनी ही नहीं है. हर फिल्म में मुसलिम किरदार बारबेरियन या आतंकवादी या गुंडे या बड़ेबड़े बालों के साथ भारत पर कब्जा करने वाले ही दिखाई देते हैं. हाल ही में राकेश ओमप्रकाश मेहरा की फिल्म 'तूफान' में भी फरहान अख्तर को ऐसा मुसलिम दिखाया गया है जो मारामारी करता है. खून बहाता है अथवा सिनेमा के शुरुआती दौर में फिल्म के अंदर हम ने उन मुसलिमों को देखा है जो तवायफ, रंडी, कोठे पर बैठती थीं, जो नाचती थीं, जो मुजरा करती थीं, जो उमराव जान थीं, पाकीजा थीं.

"मैं मुसलिमों की इस छवि को बदलना चाहता था क्योंकि मेरे परिवार में कोई नहीं कहता कि 'माई नेम इज खान एंड आई एम नौट ए टैररिस्ट.' मुझे अपनी फिल्म में दिखाना था कि मुसलिम परिवार की महिलाएं साड़ी पहनती हैं. ऐसा मुसलिम परिवार है जिस के घर में एक हिंदू बहू है. एक हिंदू दामाद और एक कैथोलिक दामाद है. हमारी फिल्म राष्ट्रीय व सैक्यूलरिजम की कहानी है. हमारी एकता ही भारत को सुपर पावर बनाती है. हमारी फिल्म एक परिवार के बारे में है.

"मेरी राय में समाज में बदलाव लाने के लिए मेनस्ट्रीम वाला सिनेमा बनाना पड़ेगा. 'शीर कोरमा' मेनस्ट्रीम वाली फिल्म है. यह फिल्म हर उम्र, हर पीढ़ी, हर लिंग व हर धर्म के लोगों से बात करेगी." ●

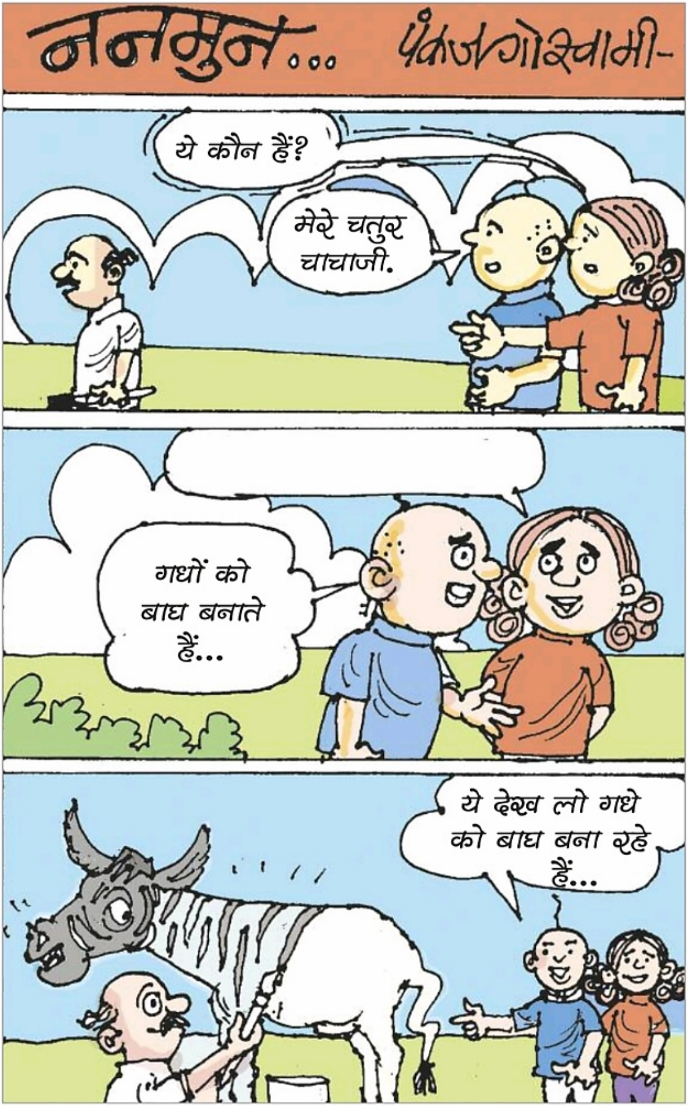
ननमुन... पंकज गोस्वामी-
ये कौन हैं?
मेरे चतुर चाचाजी.
गधों को बाघ बनाते हैं...
ये देख लो गधे को बाघ बना रहे हैं...

वर्गीकृत विज्ञापन

वधू चाहिए

28/5'8", स्वस्थ, सुंदर, L.L.B (दिल्ली) हेतु शिक्षित, वकील या समकक्ष वधू चाहिए. (विकलांग स्वीकार्य) संपर्क : B-224, TC-Govindpuri, New Delhi-110019, M : 9821330895.

वैधानिक चेतावनी

पाठकों को आगाह किया जाता है कि वे इन विज्ञापनों पर कोई पहल करने से पहले तथ्यों का पता अवश्य लगा लें. यह पत्रिका विज्ञापनदाताओं द्वारा विज्ञापनों में दी गई वर और वधू की उम्र, आय और सामाजिक स्थिति के दावों की पुष्टि नहीं करती.

विज्ञापनदाताओं के लिए सूचना : सरिता में वैवाहिक विज्ञापनों एवं गोद विज्ञापनों की दर रु. 20 प्रति शब्द है. कम से कम 20 शब्द अवश्य होने चाहिए. अन्य व्यवसायी एवं व्यक्तिगत विज्ञापनों की दर सरिता में 15 रुपए प्रति शब्द है कम से कम 16 शब्द होने आवश्यक हैं. *आप अपना वैवाहिक विज्ञापन और शुल्क निम्न पते पर भेजें :* **दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 011-41398888, 41540004, फैक्स : 011-41540714.** *अन्य कार्यालयों के पते व फोन नंबर सूची में पृष्ठ नं. 6 पर दिए गए हैं.*

दिल्ली प्रैस
गृहशोभा
सचेत, सक्षम, सफल, स्मार्ट
स्वतंत्र चट्टान से
विश्वास का आईना बनाए,
तैयार करे हर कल के लिए.
पाक्षिक पत्रिका
संपर्क करें या http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

दिल्ली प्रैस
सरिता
विश्वसनीय, निर्भीक, सुखद, सदा युवा पत्रिका
सुखसमृद्धि किस्मत से नहीं,
परिश्रम से मिलती है
भाग्य मूर्खों की गलतफहमी है
पाक्षिक पत्रिका
भाग्य व धर्मकर्म के चक्रव्यूह से बाहर निकाले, दिखाए समृद्धि के द्वार सरिता
संपर्क करें या http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

करोड़ो लोगो का आज़माया

MYFAIR
Cream
MYFAIR
Cream

झुर्रियां
काले घेरे
छाईया

MYFAIR
रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- फेस वाश
- सन स्क्रीन

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

Multivitamin, Multiminerals &
Antioxidant Soft Gelatin Capsules
MultipreX
Advanced Formula for
Strong Immunity

MultipreX™

कैप्सूल, सिरप,
ओरल ड्राप्स, पाउडर

Multivitamin, Multiminerals
& Antioxidants

Advanced Formula For
Strong Immunity

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगों से बचाए